صَلّوا کَمَا رَأَیْتُمُوْنِی اُصَلِّی (بخاری:۶۳۱)

नमाज़ पढ़ो जैसा कि देखते हो कि मैं नमाज़ पढ़ता हूँ

सलातुर-रसूल

यानी

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नमाज़

मुक़द्दिमा

मुफस्सिरे कुरआन ह़ज़रत मौलाना **सैय्यद मुह़म्मद गयास उद्दीन** साह़ब दामत बरकातहुमुल आ़लिया

तालीफ़

डॉकटर मौलाना ह़ाफ़िज़ सैय्यद मुह़म्मद **ज़िया उद्दीन**

बिन मुफ़स्सिरे कुरआन मद्द ज़िल्लहुमुल आ़ली

नाशिर

मक्तबा अल अशरफ़

इलाहाबाद

9 आई/2 आई आज़ाद नगर, करामत की चौकी, करैली इलाहाबाद

तफ़्सीलात

नाम : सलातुर–रसूल स0 यानी रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नमाज़

नाम मुरत्तिब: डॉक्टर मौलाना ह़ाफिज़ सैय्यद मुह़म्मद ज़िया अद्ददीन मुफस्सिरे कुरआन ह़ज़रत मौलाना सैय्यद मुह़म्मद गयास उद्दीन साह़िब दामत बरकातहुमुल आ़लिया

पेज :

तबाअ़त: सन् 2023 ई

नाशिर : मकतबा अल अशरफ़ – इलाहाबाद 9 आई/2 आई आज़ाद नगर, करामत की चौकी, करैली इलाहाबाद 211016

ISBN 81-92543-99-4

मिलने का पता :दारुल उलूम मरकज़े इस्लामी 548–ए/4 राजा पुर इलाहाबाद

قال عبداللہ بن مسعودؓ

اَلا أُخۡـبِـرُكُمۡ بِصَلَاةِ رَسُوۡلِ اللّٰه صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَسَـلَّم

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु तआ़ाला अ़न्हो फ़रमाते हैं कि मैं तुमको रसूलुल्लाह सल– लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नमाज़ न बतलाऊँ

(نسائی، کتاب الافتتاح:۱۰۲۷)

फ़ेहरिस्त

न0	मज़ामीन	पेज
1	तक़्दीम अज़मुफस्सिरे कुरआन ह़ज़रत मौलाना सैय्यद मुह़म्मद गयास उद्दीन साह़िब दामत बरकातहुमुल आ़लिया	8
2	औक़ात नमाज़ और रकात	12
3	फज्र का वक़्त और रकात	12
4	ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि0 का अ़मल	13
5	ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि0 का अ़मल	14
6	ज़ुहर का वक़्त और उसकी रकात	15
7	सरदियों में रसूलुल्लाह स0 की ज़ुहर की नमाज़ जल्दी पढ़ते थे	15
8	ज़ुहर की पहली चार रकात सुन्नत की अहमियत	17
9	अ़स्र का वक़्त और रकात	17
10	मग़्रिब का वक़्त और रकातें	18
11	इशा का वक़्त और रकातें	19
12	वित्र	20
13	वित्र पढ़ना वाजिब है	21
14	वित्र छूट जाए , जब याद आए तब पढ़े	22
15	वित्र की नमाज़ तीन रकातें हैं	23
16	दो रकात पढ़कर बग़ैर सलाम फेरे तीसरी के लिये खड़ा हो	23
17	जिन औक़ात में नमाज़ पढ़ना मकरूह है	25
18	फ़ज्र नमाज़ के बाद सुनन व नवाफ़िल पढ़ना	25
19	ज़वाल के वक़्त नमाज़ पढ़ना	26
20	अ़स्र की नमाज़ के बाद से धूप के ज़र्द होने तक नवाफ़िल पढ़ना	26
21	अज़ान	28
22	अज़ान का माना	28
23	अज़ान की तारीफ़	28
24	अज़ान का हुक्म	28
25	अज़ान की मशरूइ़यत	28

26	अज़ान का जवाब देना	29
27	अज़ान के जवाब देने का तरीक़ा	29
28	अज़ान के बाद दुआ करना	30
29	नमाज़	31
30	1 एक़ामत की तारीफ़	31
31	एक़ामत कहना	31
32	2 क़्याम	32
33	3 क़्याम में दोनों पैर का फ़ासिला	32
34	4 सफ़ सीधी करना	33
35	5 मुक़्तदी तक्बीर में कब खड़ा हो?	34
36	6 नियत	36
37	रसूलुल्लाह स0 ज़ुबान से नियत नहीं करते थे	36
38	7 तक्बीरे तह़रीमा	37
39	8 तक्बीरे तह़रीमा में हाथ कहॉ तक उठाए	37
40	9 तक्बीरे इन्तिक़ाली	39
41	10 नाफ के नीचे हाथ बॉधे	40
42	11 दायें हाथ से बायें हाथ को पकड़े	41
43	12 नज़र कहां रखे	42
44	13 सना पढ़ने का हुक्म	43
45	14 अऊ़ज़ुबिल्लाह पढ़ना	44
46	15 बिस्मिल्लाह पढ़ना	45
47	16 क़िराअत	46
48	17 इमाम के पीछे सूरए फ़ातिह़ा पढ़ना	48
49	18 मुक़्तदी बिल्कुल क़ेराअत न करे	51
50	19 इमाम के '' ग़ैरिल मग़ज़ूबि अ़लैहिम वलज़्ज़ाल्लीन'' पर आहिस्ता ''आमीन' कहना'	52
51	20 सूरए फ़ातिह़ा के बाद कोई सूरह मिलाना	53
52	21 ज़ुहर और अ़स्र में आहिस्ता क़ेराअत करना	54
53	22 रफ़ा यदैन (हर तक्बीर के वक़्त हाथ उठाना)	54
54	23 रुकू	58
55	24 रुकू की कैफ़ियत	59

56	25 रुकू में पीठ को सीधा रखे	60
57	26 रुकू की तस्बीह़	60
58	27 तस्मी व तह़मीद	61
59	28 इमाम को रुकू में पाने वाला रकात पाने वाला है	61
60	29 सज्दा	63
61	30 सज्दों में चेहरा कहॉ रखे?	63
62	31 सज्दा में कोहनियों को न बिछाए	64
63	32 सज्दा की तस्बीह	64
64	33 आ़ज़ाए सज्दा	65
65	34 सज्दा में हाथ रखने की कैफ़ियत	65
66	35 जलसा	66
67	36 क़याम	67
68	37 क़अ़दा (बैठना)	67
69	38 क़अ़दा में कैसे बैठे	68
70	39 तशह्हुद	70
71	40 क़अ़दा में तशह्हुद की अंगुली का हरकत देना	70
72	41 तशह्हुद में शहादत की अंगुली से इशारा करना है हिलाना नहीं है	72
73	42 क़याम	72
74	43 दरूद शरीफ़	73
75	44 दुआ़ए मासूरा	73
76	45 सलाम फेरने का तरीक़ा	74
77	46 इमाम लोगों को (मुक़्तदियों) की तरफ़ मुतवज्जे होकर बैठे	75
78	47 फ़र्ज़ नमाज़ के बाद दुआ़ करना	75
79	48 फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद कितनी देर दुआ़ मॉगे	77
80	49 सुन्नत नमाज़ के बाद दुआ़ करना	78
81	50 इमाम का ज़ोर से दुआ़ करना	78
82	51 आहिस्ता दुआ़ करना	79
83	52 दुआ़ के बाद हाथ चेहरे पर फेरना	80
84	53 दुआ़ की फ़ज़ीलत	80

85	54 मर्द और औ़रत की नमाज़ का फ़र्क़ ह़दीस की रौशनी में	82
86	1 तक्बीरे तह़रीमा के वक़्त हाथ उठाने में फ़र्क	82
87	2 मर्द व औरत के हाथ बॉधने में फ़र्क़	83
88	3 मर्द व औरत के रुकू करने में फ़र्क़	83
89	4 मर्द व औरत के सज्दा में फ़र्क़	83
90	5 मर्द व औरत के बैठने में फ़र्क़	85
91	6 औ़रत कहॉ नमाज़ पढ़े	86
92	तरावीह़ की नमाज़	88
93	नमाज़े जनाज़ह	91
94	मराजेः	95

तक़्दीम

मुफस्सिरे कुरआन हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद ग़यासुद्दीन साहब

इलाहाबादी दामत बरकातहुमुल आलिया

बानी व नाज़िम दारूल उलूम मरकज़े इस्लामी राजापुर इलाहाबाद व सदर फ़लाहुल इबाद ट्रस्ट करेली, इलहाबाद

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम

नहमदहु व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

पेशे नज़र रिसाला ''सलातुर रसूल सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम'' मैं नमाज़ के तरीक़े की तफ़्सील इस तर्तीब के साथ की गयी है कि नमाज़ के तमाम अरकान व आ़माल के बयान के साथ ह़दीस शरीफ़ से इसकी दलील भी लिख गयी है जिससे आ़म लोगों के ज़हन में जो यह ग़लत फ़हमी पैदा करने की कोशिश की जा रही है कि एह़नाफ़ के तरीक़ा नमाज़ का सुबूत ह़दीस में नहीं है, इसका अज़ाला हो सके, चुनानचे हर ह़दीस का मुस्तनद ह़वाला दर्ज किया गया है।

अगरचे इस मौज़ू पर कई किताबें दस्तयाब हैं और अहले इल्म ने मुह़क़्क़िक़ाना ख़िदमत अंजाम दी है और मौज़ू का हक़ अदा कर दिया है, ताहम एक ऐसे मुख़्तसर रिसाला की ज़रूरत शिद्दत से महसूस हो रही थी जो आ़म्मतुन नास के फहम और मिज़ाज के मुताबिक़ हो और जिसमें तफ़्सीलात से बह़स ना करके सादा अन्दाज़ में एख़्तिसार के साथ दलाएल पेश किये गये हों और जो आ़म्मतुन नास की ज़रूरत के लिए काफ़ी हो जाये, और जिन लोगों को मज़ीद तहक़ीक़ दरकार हो तो उनके लिए बिह़मदिही तआ़ला निहायत काफ़ी और शाफ़ी तस्नीफ़ात मौजूद हैं जिनमें फ़ुज़लाए अहले इल्म ने ख़ूब ख़ूब दाद तह़क़ीक़ दी है।

हर मुसलमान के लिये यह अम्र लाज़िम है कि वह तमाम अइमए मुजतहिदीन, मुक़्तदायान मिल्लत और फ़ोक़्हा व मुहद्दिसीन के साथ हुस्ने ज़न ही नहीं बल्कि हुस्ने अक़ीदत और मोहब्बत व अज़मत का ताल्लुक़ रखे, अगरचे वह उनके मसलक और फ़ोक़्ही आरा से एख़्तिलाफ़ रखता हो। शेख़ुल इस्लाम अल्लामा इब्न तैमियह रहमतुल्लाह अलैह अपने रिसाला कैयि्यमा :''رفع الملام عن الائمة الأعلام'' में लिखते हैं:

'' و بعد،فيجب على المسلمين بعد موالاة الله تعالىٰ ورسوله موالاةالمومنين كما نطق به القر آن ، خصو صاً العلماء الذين هم ورثة الأنبياء الذين جعلهم الله بمنزلة النجوم، يهتدى بهم فى ظلمات البر والبحر ، و قد أجمع المسلمون على هدايتهم و درايتهم . اذ كل أمة قبل مبعث نبينا محمد صلى الله عليه وسلم فعلماؤ هاشرارها ، الا المسلمين فان علماء هم خيارهم ،فانهم خلفاء الرسول صلى الله عليه وسلم فى أمته ، والمحيون لما مات من سنته ، بهم قام الكتاب و به قاموا وبهم نطق الكتاب،وبه نطقوا.'' (مجموع فتاویٰ شیخ الاسلام ابن تیمیہؒ، ج:۲۰،ص:۲۳۱،۲۳۲)

(मुसलमानों पर वाजिब है कि अल्लाह और उसके रसूल से मोहब्बत के बाद अहले ईमान से मोहब्बत करें जैसा कि क़ुरआन नातिक़ है, ख़ुसूसन उ़लमा से जो कि अम्बिया के वारिस हैं, जिनको अल्लाह तआ़ला ने ब–मंज़िला सितारों के बनाया है कि बर व बहर की अँधेरियों में उनसे रहनुमाई ह़ासिल की जाती है और मुसलमानों का उनकी हिदायत व दरायत पर इजमा और इत्तिफ़ाक़ है इसलिए कि मुहम्मद सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की बअ़सत से पहले हर उम्मत के उ़लमा उस उम्मत के बद–तरीन लोग थे मगर मुसलमानों के उलमा उनके बेहतरीन लोग हैं इसलिये कि वह उम्मत में रसूल के ख़ोलफ़ा और जा नशीन हैं और आपकी मुर्दा सुन्नतों के ज़िन्दा करने वाले हैं, किताब उनके साथ क़ाएम है और वह किताब के साथ क़ाएम हैं और किताब उनके साथ नातिक़ है और वह किताब के साथ नातिक़ हैं।)

ह़क़ीक़त यह है कि सारे ही फ़ोक़्हाए मुजतहिदीन और अइमह मतबूऐन का उम्मत पर एह़सान अ़ज़ीम है और वह बिल इत्तिफ़ाक़ सब ही के लिये वाजिबुल एहतिराम हैं और उनसे मुहब्बत व अ़क़ीदत उनकी एह़सान शनासी का हक़ और लाज़िम

है, कोई किसी की भी तक़्लीद व इत्तिबा करता हो, दर ह़क़ीक़त वह अल्लाह और उसके रसूल ही की इत्तिबा करता है क्योंकि इन सब हज़रात का मुतम्मह नज़र मंशा शरीअ़त ही पर अ़मल है ना कि कुछ और। इसलिए उन हज़रात सलफ़ के मसालिक में से किसी मस्लक में इस ह़द तक जमूद एख़्तियार करना और दूसरे पर इस तरह नक़्द व तब्सिरा करना कि वह हक़ व बातिल की जंग की सूरत एख़्तियार कर ले, किसी भी मस्लक के उ़लमाए हक़ ने दुरूस्त और जाएज़ नहीं क़रार दिया है बल्कि उसकी सख़्त तर्दीद और मज़म्मत की है। अ़ल्लामा इब्न तैमियह रह0 लिखते हैः

''و لیعلم أنه لیس أحد من الأئمة المقبولین عند الأمة قبولاً عامایتعمد مخالفة رسول الله صلی الله علیه وسلم فی شیئ من سنته ، دقیق و لا جلیل . فانهم متفقون اتفاقاً یقینیاً علی وجوب اتباع الرسول ، و علی أن کل أحد من الناس یؤخذ من قوله و یترک،الا رسول الله صلی الله علیه وسلم و لکن اذا وجد لواحد منهم قول ، قد جاء حدیث صحیح بخلافه، فلا بدله من عذر فی ترکه.''(ایضاً)۔

(मालूम होना चाहिए कि अइमह मक़्बूलैन में से कोई एक इमाम भी रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम की एक सुन्नत की भी क़स्दन मुख़लिफ़त नहीं करते ख़्वाह छोटी सुन्नत हो या बड़ी। इसलिए कि इन सब हज़रात का इस पर यक़ीनी तौर पर इत्तिफ़ाक़ है कि रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की इत्तिबाअ वाजिब है और आपके अ़लावा कोई भी हो, उसकी बाज़ बातें क़ाबिले अ़मल हो सकती हैं और बाज़ बातें लाएक़े तर्क होंगी। अलबत्ता अगर उन हज़रात में से किसी का कोई क़ौल ह़दीस सह़ीह के ख़िलाफ़ हो तो उनके नज़दीक इसका कोई उज़्र होगा।)

इसके बाद ह़ाफ़िज़ इब्न तैमियह रह0 ने उन अ़ाज़ार पर मुफ़स्सल बहस की है, मिन शाअ फालीराजेअ इलैह।

यह हक़ीक़त याद रखना चाहिए कि जिस तरह फ़ोक़्ही मसाएल इजतिहादी हैं इसी तरह अह़ादीस पर सेह़त, हुस्न और ज़अ़फ़ वग़ैरह का हुक्म भी मुजतहिद फ़ीह है। यही वजह है कि

अहादीस पर हुक्म लगाने में अइमा मुहद्दिसीन के दरमियान एख़्तिलाफ़ात पाये जाते हैं, कोई एक हदीस को सही क़रार दे कर हुज्जत तस्लीम करता है और दूसरा उसकी तज़ईफ़ करके नाक़ाबिले एहतिजाज क़रार देता है, फिर अहादीस की सेहत व ज़अफ़ वग़ैरह का मदारे सिलसिलए रवात पर है, इमाम आज़म अबू हनीफ़ा रह0 इमाम बुख़ारी रह0 वग़ैरह मुहद्दिसीन के उसातज़ह व श्यूख से भी मुक़द्दम हैं, चुनानचे उन तक अहादीस सेहत के साथ पहुँचे और उन्होंने उन पर अमल किया, यह उसूल मुसल्लिमात में से है कि मुजतहिद का किसी हदीस से इस्तिदलाल करना ख़ुद इस हदीस के क़ाबिल इस्तिनाद होने की दलील है। लिहाज़ा किसी हदीस का सेहाह सित्ता वग़ैरह में ना होना इस हदीस नाक़ाबिले एहतिजाज होने की दलील नहीं है। यह उसूल पेशे नज़र ना होने की वजह से लोग ग़लत फ़हमी में मुब्तिला हो जाते हैं। अगर यह चन्द मुख़्तसर मारूज़ात भी ज़हन में रखी जायें तो बहुत सी गुत्थियाँ सुलझ जायेंगी इन्शा अल्लाह तआला ।

इस रिसाला की तालीफ़ पर हम मुअल्लिफ़ सल्लामहु को मुबारकबाद पेश करते हैं और जिन हज़रात ने जिस क़द्र भी उसकी इशाअत में हिस्सा लिया है मुअल्लिफ़ के साथ उनके लिए भी बसमीमे क़ल्ब दुआ गो हैं, हक़ तआला उनको सेहत व आफ़ियत की नेमत से शादकाम फ़रमायें और इल्म व अमल नीज़ रिज़्क़ व कारोबार वग़ैरह में ख़ैर व बरकत अता फ़रमायें और तमाम आफ़ात व बल्लियात से महफ़ूज़ रख कर दीनी व दुनियवी तरक़्क़ियात से मदाम नवाज़ते रहें। (आमीन)

ख़ाकसार अहक़र सैय्यद मुहम्मद ग़यासुद्दीन गुफ़िर लहु

21 रजबुल मुरज्जब सन् 1444हि0

13 फ़रवरी सन् 2023 म। दोशम्बा

औक़ाते नमाज़ और रकात

फज्र का वक़्त और रकातः

वक़्तः

फ़ज्र का वक़्त सुबह सादिक़ से तुलूअ़ आफ़ताब तक रहता है। फ़ज्र की नमाज़ के वक़्त में दो हिस्से होते हैंः एक हिस्सा को ''ग़ुल्स'' कहते हैं दूसरे हिस्सा को ''इसफ़ार'' कहते हैं। रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अक्सर व बेशतर इस्फ़ार में नमाज़ पढ़ते थे।

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का इरशाद हैः

''عن رافع بن خديج قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم اسفرُوا بِالْفَجُر فَاِنّه أَعُظَم لِلأجُر'' (ترمذی، ابواب الصلاۃ، باب ماجاءفي الاسفار بالفجر:۱۵۴)

हज़रत राफ़ेअ़ बिन ख़ुदैज रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हो कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फरमाया की नमाज़ को ख़ूब रौशनी होने पर पढ़ो इसका सवाब बहुत ज़्यादा है।

रकातः

दो रकात सुन्नत   दो रकात फ़र्ज़

हदीस शरीफ़ में फ़ज्र की सुन्नतों की बड़ी अहमियत आयी है, हुज़ूर अकरम सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का इरशाद हैः

''عن عائشة رضي الله عنها قالت : قال رسول الله صلى الله عليه وسلم : رَكعَتا الفَجرِ خَيُر من الدُّنيَا و مَا فِيُها '' (السنن الکبری للبیہقی:۴۴۶۹،ج۲،تابع کتاب الصلاۃ)

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः फ़ज्र की

दो रकातें दुनिया व माफ़ीहा से बेहतर है। और रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का फ़रमान है:

''عن أبی هریرة قال :قال رسول الله صلی الله علیه وسلم : لا تَدَعُوهماو ان طردتكم الخيل'' (ابوداؤد، کتاب التطوع، باب رکعتی الفجر، باب فی تخفیفہما:۱۲۵۸)

फ़ज्र की सुन्नतें ना छोड़ो, अगरचे तुमको (दुश्मन के) घोड़े रौन्द डालें।

और रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का इरशाद गेरामी है:

''عن أبی هریرة رضی الله عنه أن رسول الله صلی الله علیه وسلم قال:''اذا اقیمت الصلاة فلا صلاة الاالمکتوبة الارکعتي الصبح '' وفی روایة ''اِلَّا فِی رَکعَتَي الفَجر'' (السنن الکبری للبیہقی:۴۵۵۰۔ج:۲،تابع کتاب الصلاۃ)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जब नमाज़ ख्ड़ी हो जाये तो सिर्फ़ फ़र्ज़ के कोई नमाज़ ना पढ़े सिवाये सुबह की दो रकातें और एक रिवायत में है कि ''सिवाये फ़ज्र की दो रकातें''। (यानी अगर किसी वजह से फ़ज्र की सुन्नत ना पढ़ सका हो और फ़ज्र की नमाज़ ख़ड़ी हो गयी हो तो फ़ज्र की सुन्नत पढ़ ले फिर जमात में शामिल हो)

सह़ाबा किराम फ़ज्र की सुन्नत नहीं छोड़ते थे और नमाज़ फ़ज्र की जमात खड़ी हो जाने के बावजूद भी अगर कोई सह़ाबा किसी वजह से सुन्नत फ़ज्र नहीं पढ़ सका तो वह एक किनारे सुन्नत पढ़ लेते थे।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हो का अ़मलः

''عن عبد الله بن أبی موسی قال: جَاءَ نَا ابن مَسعُود و الْاِمَام یُصَلی الصُّبح فَصَلی رَکعَتَیْن اِلی سَارِیَة وَلَمْ یَکن صَلّی رَکعَتَی الْفَجر''

(مجمع الزوائد، ج۱،ص:۷۵)

हज़रत अदुल्लाह बिन अबी मूसा फ़रमाते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हो हमारी मस्जिद में तश्रीफ़ लाये तो इमाम फ़ज्र की नमाज़ पढ़ा रहा था, आपने एक सतून के क़रीब फ़ज्र की सुन्नतें अदा फ़रमायीं क्योंकि वह इससे पहले सुन्नतें नहीं पढ़ सके थे।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुमा का अमलः

''عن أبی عثمان الأنصاری قال جاء عبد الله بن عباس رضی الله عنهما و الامام فی صلاة الغداة و لم یکن صلی الرکعتین فصلی عبد الله بن عباس الرکعتین خلف الامام ثم دخل معهم ''(آثار السنن، کتاب الصلاة، باب من قال یصلی سنة الفجر عند اشتغال الامام بالفریضة خارج المسجد أوفی ناحیة....:۲۶۷۔طحاوی: کتاب الصلاة، باب اداء سنة الفجر:۲۰۴۰)

हज़रत अबू उ़समान अंसारी कहते हैं कि हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि अल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा तश्रीफ़ लाये जबकि इमाम फ़ज्र की नमाज़ पढ़ा रहा था और आपने दो रकातें नहीं पढ़ी थीं, तो पहले उन्होंने दो रकातें पढ़ीं फिर जमात में शामिल होकर फ़ज्र की नमाज़ पढ़ी।

अगर सुन्नत पढ़ कर जमात में शरीक होना मुमकिन ना हो तो सुन्नतें छोड़ दे और जमात में शरीक हो जाये। फिर रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हुक्म के मुताबिक़ सूरज निकलने के बाद उन सुन्नतों की क़ज़ा पढ़ ले।

عن ابی هریرة رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم من لم یصل رکعتی الفجر فلیصلهما بعد ما تطلع الشمس''

(ترمذی، کتاب الصلاة، باب ماجاء فی اعادتهما بعد طلوع الشمس:۴۲۳)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हो फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिसने फ़ज्र की दो रकातें ना पढ़ी हों वह सूरज निकलने के बाद पढ़ ले।

ज़ोहर का वक़्त और उसकी रकातः

वक़्तः

जब हर चीज़ का साया बराबर हो जाये तो रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ज़ोहर का वक़्त बताया है।

हुज़ूर सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़मायाः गर्मी के मौसम में जब गर्मी ज़्यादा हो तो नमाज़ को ठंडा करके पढ़ो।

''عن أبی ذر رضی الله تعالیٰ عنه قال : أذن مؤذن النبی صلی الله علیه وسلم الظهر فقال : أبرد ، أبرد، أو قال : انتظر انتظرو قال : شدة الحر من فیح جهنم فاذا اشتد الحر فأبردو ا عن الصلاة حتی رأینا فیئی التلول ''(بخاری،کتاب مواقیت الصلاۃ،باب ابراد الظہر فی شدۃ الحر:۵۳۵:۔مسلم،کتاب المساجد،باب استحباب الابراد بالظہر فی شدۃ الحر:۱۴۰۰(۶۱۶))

हज़रत अबू ज़र रज़ि अल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि मुअ़ज़्ज़िन बारगाहे रिसालत ने ज़ोहर की अज़ान देना चाही तो आप सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः वक़्त को ठंडा होने दो, ठंडा होने दो, या फ़रमायाः मज़ीद इन्तिज़ार करो, चूँकि गर्मी की शिद्दत जहन्नम के असरात से है लिहाज़ा जब शदीद गर्मी हो तो वक़्त ठंडा होने पर नमाज़ पढ़ा करो (इसी तरह हम नमाज़ को मुअख़्ख़िर करते रहे) यहाँ तक कि हमको टीलों के साये भी नज़र आने लगे।

सर्दियों में रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम ज़ोहर की नमाज़ जल्दी पढ़ते थे।

''عن انس رضی الله تعالیٰ عنه أن رسول الله صلی الله علیه وسلم صلی الظهر حین زالت الشمس ''(ترمذی،ابواب الصلاۃ،باب ماجاء فی تعجیل الظہر :۱۵۶)

हजरत अनस रज़ि अलहु तआ़ला अन्हो फ़रमाते हैं कि जब ज़वाले आफ़ताब हो गया तो रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने ज़ोहर की नमाज़ पढ़ी।

''حدثنا خالد بن دينار أبو خلدة قال : سمعت أنس بن مالک رضی اللہ عنه قال: كان رسول الله صلى الله عليه وسلم اذا كان الحر أبرد با لصلاة و اذا كان البرد عجل'' (نسائی، کتاب المواقیت، باب تعجیل الظہر فی البرد:۵۰۰)

हज़रत अनस रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हो फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जब गर्मी होती तो नमाज़ को ठंडा होने पर पढ़ते और जब सर्दी होती तो जल्दी पढ़ते।

रकातः

चार सुन्नत चार फ़र्ज़ दो सुन्नत दो नफ़िल

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ज़ोहर से पहले चार रकातें (सुन्नत) और फ़ज्र से पहले दो रकातें (सुन्नत) कभी नहीं छोड़ते थे।

''عن عائشة رضی اللہ عنها: أن النبی صلى اللّٰه عليه وسلم كانَ لا يَدَعُ أَرْبَعاً قَبْلَ الظُّهْرِ وَ رَكْعَتَيْنِ قَبْلَ الْغَدَاةِ'' (بخاری، کتاب التہجد، ابواب التطوع، باب الرکعتین قبل الظہر :۱۱۸۲)

हज़रतआयशा रज़ि अल्लाहु तआ़ला अ़न्हा फ़रमाती हैं कि नबी अकरम सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ज़ोहर से पहले चार रकातें और फ़ज्र से पहले दो रकातें कभी नहीं छोड़ते थे।

''عن عنبسة بن أبی سفيان قال : سمعت اختی ام حبيبة زوج النبی صلى الله عليه وسلم تقول سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول :''من حافظ على أربع ركعات قبل الظهر و أربع بعدها حرمه الله على النار''(ترمذی، ابواب الصلاۃ، باب ماجاء فی الرکعتین بعد الظہر، باب: منہ:۴۲۸)

नबी अकरम सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ज़ौजा मुतहरा हज़रत उम्मे ह़बीबा रज़ि अल्लाहु तआ़ला अ़न्हा फ़रमाती हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से सुना, आप फ़रमाते थे

कि जिसने ज़ोहर से पहले की चार रकात और ज़ोहर के बाद की चार रकात की हिफ़ाज़त की अल्लाह तआ़ला उसको आग पर हराम कर देंगे।

ज़ोहर की पहली चार रकात सुन्नत की अहमियतः

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ज़ोहर की पहली चार रकात (सुन्नत) अगर छूटजाती थी तो फ़र्ज़ नमाज़ के बाद उसको पढ़ते थे।

''عن عائشة أن النبى صلى الله عليه وسلم كان اذا لم يصل أربعاً قبل الظهر صلا هن بعدها'' (ترمذی، کتاب الصلاۃ، باب ماجاء فی الرکعتین بعد الظہر، باب: منہ: ۴۲۶)

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा रज़ि अल्लाहु तआ़ला अ़न्हा फ़रमाती हैं कि नबी अकरम सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की आदत मुबारका यह थी कि अगर ज़ोहर से पहले चार रकात ना पढ़ सकते तो नमाज़ के बाद पढ़ लेते।

अस्र का वक़्त और रकातः

वक़्तः

जब हर चीज़ का साया (साया असली के अलावा) दो गुना हो जाये तो अस्र का वक़्त हो जाता है और ग़ुरूब आफ़ताब तक रहता है। लेकिन अगर आफ़ताब बहुत ऊँचा और ज़र्द हो जाये तो उस वक़्त नमाज़ पढ़ना मकरूह है

''...عن على بن شيبان قال: قدمنا على رسول الله صلى الله عليه وسلم المدينة فكان يؤخر العصر ما دامت الشمس بيضاء نقية''

(ابوداؤد، کتاب الصلاۃ، باب وقت العصر: ۴۰۸)

हज़रत अली बिन शैबान कहते हैं कि जब हम मदीना मुनव्वरह में रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाह में हाज़िर हुए तो आपका यह मामूल था कि आप अस्र की नमाज़ को मुअख़्ख़र फ़रमाते जब तक कि सूरज रौशन और साफ़ रहता।

''...مولىٰ أم سلمة زوج النبى صلى الله عليه وسلم أنه سأل

أباهـــريـرةعن وقت الصلاة ، فقال أبو هريرة: أنا أخبرک صل الظهر اذا كان ظلک مثلک ، و العصر اذاكان ظلک مثليک ...''

(موطا امام مالک، تحقیق: محمد مصطفیٰ الأعظمی ،ط: مؤسسۃ زاید بن سلطان آل نہیان للأعمال الخیریۃ والانسانیۃ ابوظبی ۔الطبعۃ الاولیٰ ۲۰۰۴ء۔کتاب وقوت الصلاۃ:۱۲ج:۲۔)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि अल्लाहु तआ़ला फ़रमाते हैं कि जब तेरा साया तेरे बराबर हो जाये तो ज़ोहर की नमाज़ पढ़ो और साया दोगुना हो जाये तो अस्र की नमाज़ पढ़ो।

रकातः

चार सुन्नतें चार फ़र्ज़

अस्र की नमाज़ से पहले चार रकात और अगर वक़्त कम हो तो दो रकात सुन्नत पढ़ने से अल्लाह तआ़ला उस पर रह़म फ़रमाते हैं।

''عن ابن عمر رضی الله عنهما عن النبی صلی الله علیه وسلم قال : رحم الله امرء أ صلی قبل العصر أربعاً''(ترمذی،کتاب الصلاۃ،باب ماجاء فی الاربع قبل العصر:۴۳۰)

हज़रत इब्न उ़मर रज़ि अल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा कहते हैं कि नबी अकरम सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह तआ़ला उस शख़्स पर रह़म करें जो अ़स्र से पहले चार रेकातें पढ़ता है।

मग़्रिब का वक़्त और रकातें:

वक़्तः

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम सूरज ग़ुरूब होते ही मग़्रिब की नमाज़ अदा फ़रमाते थे।

''عن سلمة رضی الله عنه قال : كنا نصلی مع النبی صلی الله علیه وسلم المغرب اذا توارت بالحجاب''(बुख़ारी،कताब मवाक़ीत الصلاۃ،باب وقت المغرب ۵۶۱)

हज़रत सलमा रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हो फ़रमाते हैं कि सूरज छुपते ही हम नबी अकरम सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ मग़्रिब की नमाज़ अदा किया करते थे।

रकातः

तीन फ़र्ज़ दो सुन्नतें दो नफ़िल

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मग़्रिब की नमाज़ के बाद दो रकात (सुन्नत) पढ़ने की तर्ग़ीब दी है और फ़रमाया है:

''عن أم حبيبة (رضى الله عنها) قالت: قال رسول الله صلى الله عليه وسلم:مَن صلَّى في يوم وليلة ثِنْتَيْ عشْرَة ركعة بُنِىَ له بيتٌ فى الجنة : أربعاً قَبْل الظُّهْر، و ركْعَتَيْن بعْدهَا، و ركْعَتَيْن بعد المَغْرِب، و ركْعَتيْن بعْد العِشَاء ،و ركْعَتَيْنِ قبل الفَجْر صَلاَةَ الغَدَاةِ''(مسلم،کتاب صلاۃ المسافرین،فضل السنن الراتبۃ قبل الفرائض وبعدہن...: ۱۶۹۶(۷۲۸)۔ترمذی،ابواب الصلاۃ،باب من صلی ثنتی عشرۃ رکعۃ...:۴۱۵واللفظ لہ)

हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया :
जो शख़्स दिन रात में बारह रकातें पढ़ेगा उसके लिये जन्नत में घर बनाया जायेगाः 4 जो़हर से पहले और 2 ज़ोहर के बाद। 2 मग़्रिब के बाद। दो इशा के बाद।दो फ़ज्र से पहले।

इशा का वक़्त और रकातें:

इशा का मुस्तिहब वक़्त एक तिहाई रात तक है, इसके दरमियान जितना ताख़ीर से पढ़ सके वही मस्नून है।

عن أبى هريرة ....ولأخرت العشاء الى ثلث الليل الأول ...''

(أخرجہ البخاری معلقا بصیغۃ الجزم قبل حدیث:۱۹۳۴)

''عن أبى هريرة رضى الله عنه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لو لا أن أشق على أمتى لأمرتهم أن يؤخروا العشاء الى ثلث الليل أو نصفه''(ترمذی،ابواب الصلاۃ،باب ماجاء تاخیر صلوۃ العشاء الآخرۃ:۱۶۷)

हज़रत अबु हुरैरा रज़ि अल्लाहु तआ़ला कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः
अगर मुझे अपनी उम्मत के मशक़्क़त में मुब्तला होने का ख़दशा

ना होता तो मैं उन्हें ज़रूर हुक्म देता कि नमाज़ इशा को रात के एक तिहाई या निस्फ़ हिस्सा तक मुअख्ख़र किया करें।

रकातः

4मुस्तहब 4फ़र्ज़ 2सुन्नतें 2नफ़्ल 3वित्र 2नफ़्ल

''عن عائشة أم المومنين رضی الله عنها أنها سئلت عن صلاة رسول صلى الله عليه وسلم ؟ فقالت: كان يصلی با لناس العشاء ثم يرجع الى اهله فيصلى أربعا ثم يأوى الى فراشه ... '' (ابوداؤد، ابواب التطوع، باب فی صلاۃ اللیل:۱۳۴۸)

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा रज़ि अल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नमाज़ की बाबत पूछा गया तो हज़रत आयशा रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हा ने फ़रमाया कि आप लोगों के साथ इशा की नमाज़ पढ़ कर घर आते और चार रकातें पढ़ कर बिस्तर पर आराम फ़रमाते।

''عن ابن عباس يرفعه الى رسول الله صلى الله عليه وسلم قال : من صلى أربع ركعات خلف العشاء الآخرة قرأ في الركعتين الأولیين قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُون و قُلْ هُوَ اللّٰهُ أَحَد و قرأ في الركعتين الأخريين تَبَارَكَ الَّذِى بِيَدِه الْمُلْك وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْئٍ قَدِيْر و الٓمّ تَنْزِيْل السجدة كتب له كأربع ركعات من ليلة القدر '' (بیہقی، کتاب الصلاۃ، باب من جعل بعد العشاء أربع رکعات أو أکثر:۵۴۰۹)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा से मरफ़ूअ़ा मर्वी है कि रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जो शख़्स चार रकात इशा की नमाज़ से पहले इस तरह चार रकात पढ़े कि पहली दो रकातों में ''قل يا ايها الكافرون '' व ''قل هوا لله احد ' और दूसरी दो रकातों मे ''تبارک الذی بيده الملک وهو على كل شيئى قدير '' और ''الٓمّ تنزيل السجدة '' पढ़े तो उसकी यह चार रकात शबे क़द्र में चार रकात पढ़ने के बराबर लिखी जायेंगी।

वित्र :

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम वित्र की

नमाज़ तीन रकात पढ़ा करते थे।

''عن علی رضی اللہ عنه قال کان رسول الله صلی الله صلی الله علیه وسلم یو تر بثلاث یقرأ فیهن بتسع سور من المفصل یقرء فی کل رکعة بثلاث سور آخرهن قل هوا لله احد'' (ترمذی، ابواب الوتر، باب ماجاء فی الوتر بثلاث:۴۵۹)

हज़रत अली रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हो फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम तीन वित्र पढ़ा करते थे और उनमें मुफ़स्सल से नौ सूरतें पढ़ते, हर रकात में तीन सूरतें, जिनमें आख़िरी सूरह ''कुल हुवल्लाहु अह़द'' होती थी।

''عن أبی سلمة رضی الله عنه سألت عائشة رضی الله عنها صلاة رسول الله صلی الله علیه وسلم فقالت کان یصلی ثلاث عشرة رکعة یصلی ثمان رکعات ، ثم یو تر ، ثم یصلی رکعتین وهو جالس''

(مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین، باب صلاۃ اللیل...:۱۷۲۴(۷۳۸))

हज़रत अबु सलमा रज़ि अल्लाहु अन्हो कहते हैं कि मैंने हज़रत आयशा रज़ि अल्लाहु अन्हा से रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नमाज़ की बाबत पूछा तो हज़रत आयशा रज़ि0 ने फ़रमाया कि आप तेरह रकातें पढ़ते थे पहले आठ रकात (तहज्जुद) पढ़ते थे, फिर (तीन) वित्र पढ़ते थे, फिर दो रकातें बैठ कर पढ़ते थे।

इस ह़दीस में है कि आप सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम तीन रकात वित्र पढ़ते थे और इसके बाद दो रकात नफ़िल बैठ कर पढ़ते थे।

वित्र पढ़ना वाजिब है:

इशा की नमाज़ के बाद से फ़ज्र तक वित्र की नमाज़ पढ़ना ज़रूरी है, जो नहीं पढ़ेगा वह गुनहगार होगा:

''عن خارجة بن حذافة أنه قال خرج علینا رسول الله صلی الله علیه وسلم فقال ان الله أمرکم بصلوة هی خیر لکم من حمر النعم الوتر جعله الله لکم فیما بین صلاة

العشاء الى أن يطلع الفجر ''(ترمذی،ابواب الوتر،باب ماجاء فی فضل الوتر:۴۵۲)

हज़रत ख़ारिजा बिन हुज़ाफ़ा रज़ि अल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि एक दफ़ा रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमारे पास तश्रीफ़ लाये और फ़रमाया : यक़ीनन अल्लाह तआ़ला ने तुमको एक ऐसी नमाज़ का हुक्म दिया है जो तुम्हारे लिये सुर्ख़ ऊँटों से बेहतर है और यह वित्र है अल्लाह तआ़ला ने इसको तुम्हारे लिये नमाज़े इशा और तुलूए फ़ज्र के दरमियान मुक़र्रर किया है।

''عن عبد الله بن بريدة عن أبيه قال: سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول : الوتر حق فمن لم يو تر فليس منا ، الوتر حق فمن لم يو تر فليس منا ، الوتر حق فمن لم يو تر فليس منا ''(ابوداؤد،کتاب الوتر،باب فیمن لم یوتر)

हज़रत बरीदा के वालिद कहते हैं कि मैंने रसूलुल्लह सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते हुए सुनाः वित्र हक़ (वाजिब) है जो वित्र ना पढ़े वह हम में से नहीं। वित्र हक़ है जो वित्र ना पढ़े वह हम में से नहीं। वित्र हक़ है जो वित्र ना पढ़े वह हम में से नहीं।

वित्र छूट जाये तो जब याद आये पढ़ ले:

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फ़रमान है कि जिसकी वित्र छूट जाये वह याद आने पर पढ़ ले।

''عن أبى سعيد الخدرى رضى الله عنه قال : قال رسول الله صلى الله عليه وسلم من نام عن وتره أو نسيه فليصله اذا ذكره''

(ابوداؤد،کتاب الوتر،باب في الدعاء بعد الوتر:۱۴۳۱)

हज़रत अबु सईद ख़ुदरी रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हो फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया :जो शख़्स वित्र पढ़े बग़ैर सो गया या भूल गया तो जब याद आये ज़रूर पढ़े।

हज़रत अबु सईद ही से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल

लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

''من نام عن وتره او نسيه فليصله اذا أصبح أو ذكره''(بیہقی،کتاب الصلاۃ،ابواب الوتر،باب من قال یصلیہ متی ذکرہ:۴۵۳۳)

जो शख़्स वित्र पढ़े बग़ैर सो गया या भूल गया तो जब सुबह हो या जब याद आये पढ़ ले।

वित्र की नमाज़ तीन रकात हैं :

''عن أبی سلمةبن عبد الرحمن انه سال عا ئشة رضی الله عنها كيف كانت صلاة رسول الله صلى الله عليه وسلم فی رمضان ، قالت : ما كان رسول الله صلى الله عليه وسلم يزيد فی رمضان و لا فی غير ه على احدى عشرة ركعة ، يصلی أربعاً فلا تسئل عن حسنهن و طو لهن ثم يصلی اربعاً فلا تسئل عن حسنهن و طو لهن ثم يصلی ثلاثاً... ''(بخاری،کتاب التہجد،باب قیام النبی صلی اللہ علیہ وسلم فی رمضان وغیرہ۔ابوداؤد،کتاب التطوع،باب فی صلاۃ اللیل:۱۳۴۱)

हज़रत अबु सलमा ने हज़रत आयशा रज़ि अल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से पूछा कि रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की रमज़ान की नमाज़ कैसी होती थी? आप रज़ि0 ने फ़रमाया : रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम रमज़ान और ग़ैर रमज़ान में ग्यारह रकातों से ज़्यादा न पढ़ते थे। पहले चार रकातें पढ़ते, उनके हुस्न और लम्बाई की बाबत कुछ ना पूछो, फिर चार रकातें पढ़ते थे उनके हुस्न व लम्बाई की बाबत भी कुछ ना पूछो , फिर तीन रकातें वित्र की पढ़ते थे।

दो रकात पढ़ कर बग़ैर सलाम फेरे तीसरी के लिये ख़ड़ा होः

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम तीन रकात वित्र पढ़ते थे और वित्र के दरमियान में सलाम नहीं फेरते थे।

''عن عا ئشة رضی الله عنها أ ن النبی صلى الله عليه وسلم كان يوتر بثلاث يعنی لا يفصل بينهن بسلام ''(الدرایۃ فی تخریج احادیث الہدایۃ للامام الحافظ العسقلانی،سید عبداللہ ہاشم

الیمانی المدنی، الجزء الأول۔ دار المعرفۃ، بیروت لبنان۔ باب صلاۃ الوتر، ومن الأدلۃ، ص:۱۹۱)

हज़रत आयशा रज़ि अल्लाहु अन्हो फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम तीन रकात वित्र पढ़ते थे यानी वित्र के दौरान सलाम नहीं फेरते थे।

''عن أبی بن کعب قال: کان رسول الله صلی الله علیه وسلم یقرأ في الوتر بـ"سَبِّحِ اسْمَ رَبِّکَ الْاَعْلیٰ" و في الرکعة الثانیة بـ"قُلْ یَا اَیُّهَا الْکَافِرُوْن" و في الثالثة بـ"قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَد" و لا یسلم الا في آخرهن ویقول یعنی بعد التسلیم : سُبْحَانَ الْمَلِکِ الْقُدُّوْس ثلاثاً'' (نسائی، کتاب قیام اللیل وتطوع النهار، باب کیف الوتر: ۱۷۰۲)

हज़रत उबै बिन कअब रज़ि अल्लाहु तआ़ला अ़न्हो फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम वित्र (की पहली रकात) में ''سَبِّحِ اسْمَ رَبِّکَ الْاَعْلیٰ'' और दूसरी रकात में "قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَد" और तीसरी में "قُلْ یَا اَیُّهَا الْکَافِرُوْن" और आख़िरी रकात ही में सलाम फेरते थे और सलाम फेरने के बाद तीन बार कहतेः सुब्हानल मलिकुल कुद्दूस।

''عن سعد بن هشام أن عائشة رضی الله عنها حدثته أن رسول الله صلی الله علیه وسلم کان لا یسلم فی رکعتی الوتر'' (نسائی، کتاب قیام اللیل وتطوع النهار، باب کیف الوتر بثلاث: ۱۶۹۹)

हज़रत साद बिन हेशाम को हज़रत आयशा रज़ि अल्लाहु अन्हा ने बताया कि रसूल अकरम सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम वित्र की दो रकातों पर सलाम नहीं फेरते थे।

जिन औक़ात में नमाज़ पढ़ना मकरूह है

फ़ज्र की नमाज़ के बाद सुनन व नवाफ़िल पढ़नाः

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फज्र की नमाज़ के बाद से सूरज निकलने तक नवाफ़िल पढ़ने से मना फरमाया है। (फ़र्ज़ नमाज़ की क़ज़ा पढ़ सकते हैं)

''عن ابن عباس قال : شهد عندی رجال مر ضیون و أرضاهم عندی عمر أن النبی صلی الله علیه وسلم نهی الصلاة بعد الصبح حتی تشرق الشمس، و بعد العصر حتی تغرب''(بخاری، کتاب المواقیت، باب الصلاۃ بعد الفجر حتی ترتفع الشمس:۵۸۱)

नबिये अकरम सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने सुबह की नमाज़ के बाद नमाज़ पढ़ने से मना फ़रमाया है यहाँ तक कि सूरज निकल आये और अस्र की नमाज़ के बाद यहाँ तक कि सूरज डूब जाये।

عن أبی سعید الخدری رضی الله عنه یقول سمعت رسول الله صلی الله علیه وسلم یقول : لا صلاة بعد الصبح حتی ترتفع الشمس ''

(بخاری، کتاب مواقیت الصلاۃ، لاتحری الصلاۃ قبل غروب الشمس:۵۸۶))

हज़रत अबु सईद ख़ुदरी रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हो फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है किः सुबह की नमाज़ के बाद सूरज के बुलन्द होने तक और कोई नमाज़ नहीं है।

''عن عمرو بن عبسة السُّلَمِی.... و فیه.... فقلت یا نبی الله أخبرنی عما علمک الله واجهله أخبرنی عن الصلاة ؟ قال :صل صلا ة الصبح ثم اقصر عن الصلاۃ حتی تطلع الشمس حتی تر تفع فانها تطلع حین تطلع بین قَرْنَي شَیْطانٍ و حینئذ یسجد لها الکفار ثم صل فان الصلاة مشهودة محضورة...''

(مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین (کتاب فضائل القرآن وما یتعلق بہ) باب الاوقات التی نہی عن الصلاۃ فیہا (باب اسلام عمرو بن

عبسۃ):۱۹۳۰(۸۳۲))

हज़रत अ़म्र बिन अ़बसा सुलमी रज़ि अल्लाहु तआ़ला अ़न्हो फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में अ़र्ज़ कियाः ऐ अल्लाह के नबी सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मुझे ऐसी चीज़ बतलाइये जो अल्लाह तआ़ला ने आपको बताई हो और मुझे मालूम ना हो, ख़ास तौर से नमाज़ के बारे में बताइये? आप सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : सुबह की नमाज़ पढ़ कर कोई और नमाज़ पढ़ने से रूके रहो यहाँ तक कि सूरज तुलूअ होकर बुलन्द हो जाये चूँकि सूरज शैतान के दो सींगों के दरमियान तुलूअ होता है और उस वक़्त (सूरज परस्त) कुफ़्फ़ार उसे सज्दा करते हैं। जब सूरज कुछ बुलन्द हो जाये तो फिर नमाज़ पढ़ो, क्योंकि (हर) नमाज़ बारगाहे इलाही में पेश की जाती है।

ज़वाल के वक़्त नमाज़ पढ़नाः

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का हुक्म है कि ज़वाल के वक़्त नमाज़ ना पढ़ो।

”...حتی یستقبل الظل با لرمح ثم اقصر عن الصلاۃ فان حینئذ تسجر جھنم فاذا أقبل الفئی فصل فان الصلاۃ مشھودۃ محضورۃ “(مسلم،کتاب صلاۃ المسافرین(کتاب فضائل القرآن وما یتعلق بہ)باب الاوقات التی نہی عن الصلاۃ فیہا(باب اسلام عمرو بن عبسۃ):۱۹۳۰(۸۳۲))

.....अलबत्ता जब नीज़ा बे साया हो जाये (ज़वाल के वक़्त) तो नमाज़ ना पढ़ो क्योंकि यह जहन्नम के दहकाने का वक़्त है। और जब साया बढ़ना शुरू हो जाये तो फिर नमाज़ पढ़ो क्योंकि नमाज़ अल्लाह तआ़ला के सामने पेश की जाती है।

अस्र की नमाज़ के बाद से धूप के ज़र्द होने तक नवाफ़िल ना पढ़ना

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लहि वसल्लम ने अस्र की नमाज़ के बाद से धूप के ज़र्द होने तक नवाफ़िल पढ़ने से मना फ़रमाया है और धूप ज़र्द होने के बाद से ग़ुरूब आफ़ताब तक नफ़िल और फ़र्ज़ दोनों पढ़ने से मना किया

है।

"... حتى تصلى العصر ثم اقصر عن الصلاة حتى تغرب الشمس فانها تغرب بين قرنى شيطان و حينئذ يسجد لها الكفار "(مسلم، کتاب صلاة المسافرین (کتاب فضائل القرآن وما یتعلق بہ) باب الاوقات التی نہی عن الصلاة فیہا (باب اسلام عمرو بن عبسة): ۱۹۳۰ (۸۳۲))

....जब अस्र की नमाज़ पढ़ चुको तो फिर दूसरी नमाज़ से रूक जाओ यहाँ तक कि सूरज डूब जाये क्योंकि सूरज शैतान के दो सींगों के दरमियान ग़ुरूब होता है और उस वक़्त (सूरज परस्त) कुफ़्फ़ार सूरज को सज्दा करते हैं।

"عن ابن عباس قال : شهد عندى رجال مرضيون و أرضاهم عندى عمر أن النبى صلى الله عليه وسلم نهى الصلاة بعد الصبح حتى تشرق الشمس ، و بعد العصر حتى تغرب"

(بخاری، کتاب المواقیت، باب الصلاة بعد الفجر حتی ترتفع الشمس: ۵۸۱)

नबी अकरम सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सुबह की नमाज़ के बाद नमाज़ पढ़ने से मना फ़रमाया है यहाँ तक कि सूरज निकल आये और अस्र की नमाज़ के बाद यहाँ तक कि सूरज डूब जाये।

"عن ابى سعيد الخدرى رضى الله عنه يقول سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول : لا صلاة بعد الصبح حتى ترتفع الشمس ، و لا صلاة بعد العصر حتى تغيب الشمس "(بخاری، کتاب مواقیت الصلاة، لا تحری الصلاة قبل غروب الشمس: ۵۸۶)

हज़रत अबु सई'द ख़ुदरी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हो फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है कि : सुबह की नमाज़ के बाद सूरज के बुलन्द होने तक और कोई नमाज़ नहीं है। और अस्र की नमाज़ के बाद ग़ुरूब आफ़ताब तक कोई नमाज़ नहीं है।

अज़ान

अज़ान के माना: लोग़त में अज़ान के माना ख़बरदार करना, इत्तिला देना, ऐलान करना है।

अज़ान की तारीफ़:

शरीअ़त के इस्तिलाह में "अज़ान" से मुराद वह मख़्सूस कलमात हैं जिनके ज़रिया लोगों को यह इत्तिला दी जाती है कि नमाज़ का वक़्त हो गया है। दिन में पॉच मर्तबा फ़र्ज़ नमाज़ों के लिये मोअज़्ज़िन यह अ़मल अंजाम देता है।

अज़ान का हुक्म:

पॉचों फ़र्ज़ नमाजों और जुमा की नमाज़ के लिये अज़ान देना सुन्नते मुअक्किदा है। क़ुरआन करीम में अज़ान का ज़िक्र इन अल्फ़ाज़ में आया है कि : अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाते हैं: (مائدہ:۵۸)"وَ اِذَا نَا دَیْتُمْ اِلَی الصَّلٰوۃِ" और जब तुम नमाज़ के लिये पुकारते हो।

अज़ान की मश्रूइ्यत:

मदीना मुनव्वरा में सन् 1 हिजरी में जब नमाज़ बा जमाअ़त अदा करने के लिये मस्जिद की तामीर हुई तो उस वक़्त यह ज़रूरत महसूस की गयी कि लोगों को इत्तिला देने के लिये कोई तरीक़ा अनपाया जाये जिससे लोगों को नमाज़ का वक़्त मालूम हो जाये, चुनानचे जब रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इस बारे में सहाबा किराम से मश्वरह लिया तो चन्द तजावीज़ सामने आयीं:

1 नमाज़ के वक़्त अ़लामत के तौर पर कोई ख़ास क़िस्म का झंडा बुलन्द किया जाये।
2 किसी ऊॅची जगह पर आग रौशन कर दी जाये।
3 यहूदियों की तरह सींग बजायी जाये।
4 ईसाइयों के तर्ज़ पर नाक़ूस बजाया जाये।

लेकिन यह सब तजावीज़ रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को पसन्द ना आयीं, मुसलमान इस बारे में मुतफ़क्किर थे कि इसी रात हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद रज़ि अल्लाहु

तआ़ला अन्हो ने ख़वाब में देखा कि किसी ने उन्हें अज़ान और एक़ामत के कलमात सिखाये हैं, उन्होंने सुबह होते ही रसूलुल्लाह की ख़िदमत में ह़ाज़िर होकर अपना ख़्वाब बयान किया, रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसको पसन्द फरमाया और ख़्वाब को सच्चा करार दिया (और भी बाज़ सह़ाबा किराम ने इस क़िस्म के ख़्वाब देखे थे)।

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद को फरमाया कि तुम ह़ज़रत बिलाल रज़ि0 को अज़ान के यह कलिमात सिखला दो, उनकी आवाज़ बुलन्द है इसलिए वह हर नमाज़ के लिए इसी तरह़ अज़ान दिया करें, चुनानचे उसी वक़्त से अज़ान का यह निज़ाम क़ाएम हो गया और ह़ज़रत बिलाल रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हो सबसे पहले मुअज़्ज़िन बने।

अज़ान का जवाब देना:

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि जब तुम अज़ान सुनो तो उसको दोहराते रहो।

हदीस शरीफ़ में है:

عن أبی سعید الخدری ؓ: أن رسول الله صلی الله علیه وسلم ، قال : اذا سمعتم النداء فقولوا مثل ما یقول المؤذن ''(بخاری، کتاب الاذان، باب مایقول اذا سمع المنادی:۶۱۱۔ صحیح مسلم، کتاب الصلوۃ، باب استحباب القول مثل ماقول المؤذن لمن سمعہ...:۸۴۸(۳۸۳))

हज़रत अबु सईद ख़ुदरी रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया: जब तुम अज़ान सुनो तो मोअज़्ज़िन के अल्फ़ाज़ दोहराते रहो। (यानी जो मोअज़्ज़िन कहे वही तुम भी कहो, और ''ह़य्या अलस्सलाह'' और ''हय्या अलल फ़लाह'' के जवाब में ''ला ह़ौला वला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाह'' कहो)

अज़ान सुन कर जमाअ़त के लिये जाना वाजिब है और ज़ुबान से अज़ान के कलिमात का जवाब देना मुस्तहब है।

अज़ान के जवाब देने का तरीक़ा:

सहीह मुस्लिम में ह़फ़्स बिन आ़सिम उमर बिन ख़त्ताब अ़न अबियह अन जदह उमर बिन ख़त्ताब मर्वी है:

قال :قال رسول اللّٰه صلى اللّٰه عليه وسلم : اذا قال المؤذن اَللّٰهُ أَكْبَر اَللّٰه أَكْبَر ، فقال أحدكم : اَللّٰه أَكْبَر اَللّٰه أكبَر ، ثم قال : أَشْهَدُ أَنْ لآ اِلٰه اِلَّا اللّٰه ، قال : أَشْهَدُ أَن لّـا اِلٰـه اِلَّا الـلّٰـه ، ثـم قـال أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّداً رَّسُوْلُ اللّٰه قال : أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّداً رَّسُـوْلُ الـلّٰـه ، ثـم قـال : حَـيَّ عَلَى الصَّلوة ، قال : لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِا للّٰه ، ثم قـال:حَـيَّ عَـلَـى الْـفَلَاح ، قال :لَا حَوْل وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰه، ثم قال : اَللّٰه أَكْبَر اَللّٰه أَكْبَـر ، قـال : اَلـلّٰه أَكْبَر اَللّٰه أَكْبَر ، ثم قال : لَآ اِله اِلَّا اللّٰه ، قال: لآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه من قلبه دخل الجنة" (صحیح مسلم: کتاب الصلوۃ، باب استحباب القول مثل ماقول المؤذن لمن سمعہ...:۸۵۰(۳۸۵))

अज़ान के बाद दुआ करना:

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अज़ान के बाद दुआ पढ़ने का हुक्म फ़रमाया है।

ह़दीस शरीफ में है:

عن عبد الله بن عمرو بن العا ص : أنه سمع النبى صلى الله عليه وسلم يـقـول : " اذا سمعتم المؤذِّنَ فقولوا مثل ما يقول ، ثم صلُّوا عليَّ، فانه من صلّى عَـلَـيَّ صـلاةً صلى الله عليه بها عشراً ، ثم سَلُوا الله لي الوسيلة،فانها منزلة فى الـجـنة لا تـنبـغـى الا لِـعَبْـدٍ من عباد الله، و أرجوا أن أكون أنا هو ، فمن سَأَلَ لِيَ الـوسيْـلة حـلَّـتْ عليه الشَّفَاعةُ " (صحیح مسلم، کتاب الصلوۃ، باب استحباب القول مثل ماقول المؤذن لمن سمعہ ...:۸۴۹(۳۸۴))

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आ़स रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हो का बयान है कि उन्होंने रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फरमाते हुए सुना: जब मोअज़्ज़िन की अज़ान सुनो तुम उसी तरह़ कहो जो मोअज़्ज़िन कहता है फिर मुझ पर दरूद पढ़ो क्योंकि जो कोई मुझ पर एक मर्तबा दरूद पढ़ता है तो अल्लाह उस पर अपनी दस रहमतें नाज़िल फ़रमाता है, इसके बाद अल्लाह तआ़ला से मेरे लिये वसीला माँगो क्योंकि वसीला दरासल जन्नत में एक मुक़ाम है जो अल्लाह के बन्दों में से एक

बन्दा को दिया जायेगा और मुझे उम्मीद है कि वह बन्दा मैं ही हूँ और जो कोई मेरे लिये वसीला (मक़ामे महमूद) तलब करेगा उसके लिये मेरी शिफ़ाअत वाजिब हो जायेगी।

सहीह बुखारी में है:

''من قال حين يسمع النداء :" اَللّٰهُمَّ رَبَّ هٰذِهِ الدَّعْوَةِ التَّامَّةِ وَالصَّلَاةِ الْقَائِمَةِ ، آتِ مُحَمَّداً نِ الْوَسِيْلَةَ وَ الْفَضِيْلَةَ ، وَابْعَثْهُ مَقَاماً مَّحْمُوداً اَلَّذِيْ وَعَدْتَّه " حلت له شفاعتي يوم القيامة''(صحیح البخاری، کتاب الاذان، باب الدعاء عند النداء:۶۱۴، ۴۷۱۹)

जो शख़्स अज़ान सुनने के बाद यह दुआ पढ़े

" اَللّٰهُمَّ رَبَّ هٰذِهِ الدَّعْوَةِ التَّامَّةِ وَالصَّلَاةِ الْقَائِمَةِ ، آتِ مُحَمَّداً نِ الْوَسِيْلَةَ وَ الْفَضِيْلَةَ ، وَابْعَثْهُ مَقَاماً مَّحْمُوداً اَلَّذِيْ وَعَدْتَّه "

तो क़यामत के रोज़ उसके लिये मेरी शिफ़ाअत हलाल हो जायेगी।

नमाज़

(1) इक़ामत की तारीफ़:

नमाज़ से कब्ल सफ बन्दी के लिये दी जाने वाली अज़ान को इक़ामत कहते हैं।

इक़ामत कहना:

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अज़ान ही के अल्फ़ाज़ एक़ामत में कहने का और ''हय्या अलल फ़लाह'' के बाद ''क़द–क़ा–मतिस–सलाह'' दो मर्तबा कहने का हुक्म फ़रमाया।

''عن عبد الله بن زيد قال : كان اذان رسول الله صلى الله عليه وسلم شفعاً شفعاً: في الاذان و الاقامة''(ترمذی، ابواب الصلاۃ، باب ماجاء فی أن الاقامۃ مثنیٰ مثنیٰ:۱۹۴)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अज़ान (के कलिमात) दो दो होते थे, अज़ान और इक़ामत दोनों में ।

हज़रत बिलाल रज़ि0 मोअज़्ज़िने रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आख़िरी अमल यही रहा है जैसा कि

मुसन्नफ़ अब्दुर–रज़्ज़ाक़ में है:

''عن الأسود بن يزيد أن بلالاً ؓ كا ن يثنى الأذان و يثنى الاقامة''

(مصنف عبدالرزاق، کتاب الصلاۃ، باب بدء الاذان:۱۸۵۳۔شرح معانی الآثار:۸۲۶)

हज़रत असवद रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हो फ़रमाते हैं कि ह़ज़रत बिलाल रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हो अज़ान व इक़ामत के कलिमात दो दो दफ़ा कहा करते थे।

''عن الاسود عن بلال قال: كان أذانه و اقامته مر تين مر تين''

(مصنف عبدالرزاق، کتاب الصلاۃ، باب بدء الاذان:۱۸۵۴)

हज़रत बिलाल रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हो की अज़ान व इक़ामत के कलिमात दो दो दफ़ा होते थे।

(2) क़यामः

फ़र्ज़ नमाज़ खड़े होकर पढ़ना ज़रूरी है अगर कोई शख़्स खड़ा होने से माज़ूर हो तो बैठ कर नमाज़ पढने की इजाज़त है और अगर बैठने की हिम्मत ना हो तो लेट कर नमाज़ पढ़े ऐसी सूरतों में सज्दा के लिये रूकू से ज़्यादा झुके और अगर ऐसा भी नहीं कर सकता तो उसके लिए नमाज़ का मुअख़्ख़र कर देना जाएज़ है।

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का इरशाद गेरामी है:

''عن عمران بن حصين رضى الله تعالىٰ عنه قال: كانت بي بواسير فسالت النبى صلى الله عليه وسلم عن الصلوة؟ فقال: صل قائماً فان لم تستطع فقاعداً فان لم تستطع فعلىٰ جنب'' (بخاری، کتاب التقصیر، باب اذا لم یطق قاعداً علی جنب:۱۱۱۷)

हज़रत इमरान बिन हुसैन रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हो कहते हैं कि मुझे रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया खड़े होकर नमाज़ पढ़ो अगर उसकी ताक़त ना हो तो बैठ कर वरना लेट कर, बहेरह़ाल नमाज़ अदा करो।

(3) क़याम में दोनों पैर का फ़ासिलाः

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ना दोनों पैरों

को मिला कर खड़े होते और ना बहुत ज़्यादा फैला कर खड़े होते थे, बल्कि मो–तदिल फासिला रखते थे ह़ालत कयाम में दोनों पैर के फासला में सहाबा किराम रिज़्वानुल्लाहु तआ़ाला अलैहिम अजमईन के आसार मंकूल हैं जिससे मालूम होता है कि दोनों पैरों को मिला कर खड़ा होना सुन्नत के खेलाफ है, दोनों के दरमियान मोअतदिल फासला हो, ना बहुत ज़्यादा और ना ही बहुत कम।

’’قال ابن جريج ، ولقد أخبرنی نا فع ، أن ابن عمر كان لا يفرشح بينهما ، و لا يمس أحدهما الأخرى ،قال : بين ذلک‘‘

مصنف عبد الرزاق ، کتاب الصلاة، باب التحریک في الصلاة :۳۴۱۲، مرکز البحوث وتقنیة المعلومات ۔ دارالتاصیل: ج۲،ص:۵۴۴،الطبعة الثانية ۲۰۱٦)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि अल्लाहु तआ़ाला अन्हुमा दोनों पॉव फैला कर नहीं खड़े होते थे और ना एक पॉव को दूसरे पैर से छूते थे बल्कि उनको दरमियानी ह़ालत में रखते थे।

(4) सफ़ सीधी करना:

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने सफ सीधी करने का हुक्म फ़रमाया है।

ह़दीस में है, ह़ज़रत अनस बिन मालिक रज़ि अल्लाहु तआ़ाला अन्हो फ़रमाते हैं:

’’أقيمت الصلاة فأقبل علينا رسول الله صلى الله عليه وسلم بوجهه فقال : أقيموا صفو فكم و تراصّوا ، فانى أراكم من وراء ظهری‘‘

(صحیح البخاری،کتاب الاذان،باب اقبال الامام علی الناس عند تسویة الصفوف:۷۱۹)

नमाज़ के लिये एकामत होने लगी तो रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपना चेहरा हमारी तरफ किया और फरमाया कि अपनी सफें सीधी कर लो और मिल कर खड़े हो, मैं तुमको अपनी पीठ के पीछे से भी देखता हूँ।

मुस्लिम शरीफ में नोमान बिन बशीर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हो से रिवायत है कि:

''كان رسول الله صلى الله عليه وسلم يسوى صفو فنا ، حتى كأنما يسوى بها القداح حتى رأى أنا قد عقلنا عنه ، ثم خرج يو ماً فقام حتى كاد يكبر ، فرأى رجلاً بادياً صدره من الصف ، فقال : عباد الله ، لتسون صفو فكم أو ليخالفن الله بين وجو هكم''

(صحیح مسلم، کتاب الصلاۃ، باب تسویۃ الصفوف واقامتہا وفضل الأول...:۹۷۹(۴۳۶))

वह फरमाते हैं कि: रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमारी सफों को सीधा और बराबर करते थे जैसे आप उनके ज़रिया तीरों को सीधा कर रहे हैं, यहाँ तक कि जब आप को यकीन हो गया कि हमने आपसे सीख लिया तो एक दिन आप निकले और (नमाज़ पढ़ाने की जगह) खड़े हो गये और करीब था कि तक्बीर कहें आप सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक शख्स को देखा जिसका सीना सफ़ से बाहर निकला हुआ था, आप सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: अल्लाह के बन्दो, तुम लाज़मी तौर पर अपनी सफ़ों को सीधा करो वरना अल्लाह तुम्हारे चेहरों को एक दूसरे के खेलाफ कर देगा।

(5) मुक़्तदी तक्बीर में कब खड़ा हो?:

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुसल्ला पर पहुँते पहुँचते सफें खड़ी हो जाती थीं।

''عن أبى هريرة أقيمت الصلوة فقمنا فعدلنا الصفوف قبل أن يخرج الينا رسول الله صلى الله عليه وسلم... ''(کتاب الصلاۃ، باب متی یقوم الناس للصلاۃ ۱۳۶۷:؟((۶۰۵)

हज़रत अबु हुरैरा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हो से मरवी है कि नमाज़ खड़ी हो जाती तो हम भी खड़े हो जाते और रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हमारे पास पहुँचने तक सफों को दुरूस्त कर लेते।

''عن نعمان بن بشير قال كان رسول الله صلى الله عليه وسلم يسوى

یعنی صفو فنا اذا قمنا للصلوۃ فاذا استوینا کبَّرَ''

(ابوداؤد، کتاب الصلاۃ، تفریع ابواب الصفوف، باب تسویۃ الصفوف:٦٦٥)

हज़रत नोमान बिन बशीर रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हो फरमाते हैं कि जब हम नमाज़ के लिये खड़े होते तो रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हमारी सफ़ों को दुरूस्त फरमाते फिर जब हम लोग सीधे हो जाते तो आप तक्बीर फरमाते।

शारेह बुख़ारी अल्लामा इब्ने हजर अ़स्क़लानी फ़तहुल–बारी में लिखते हैं:

''أن بلالاً کان یراقب خروج النبی صلی اللہ علیہ وسلم فأول ما یراہ یشرع فی الاقامۃ قبل أن یراہ غالب الناس ، ثم اذا رأوہ قاموا فلا یقوم فی مقامہ حتی تعتدل صفوفھم ،قلت : و یشھد لہ ما رواہ عبد الرزاق عن ابن جریج عن ابن شھاب '' أن الناس کانوا ساعۃ یقول المؤذن اللہ اکبر یقومون الی الصلاۃ،فلا یأتی النبی صلی اللہ علیہ وسلم مقامہ حتی تعتد ل الصفوف''(فتح الباری ،کتاب الاذان، باب متی یقوم الناس اذا رأوا الامام عند الاقامۃ؟، ج:٢،ص:١٤٢، ط: صاحب السمو الملکی الأمیر سلطان بن عبد العزیز آل سعود، تحقیق عبد القادر شیبۃ الحمد۔٢٠٠١ء۔ وج:٢،ص:١٥٧، مطبوعہ دار السلام الریاض)

हज़रत बिलाल रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हु का यह अमल नक़ल फ़रमाया है कि हज़रत बिलाल नबी अकरम सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तशरीफ आवरी के इन्तिज़ार में रहते थे और जैसे ही (मस्जिद में मौजूद) अक्सर लोगों से पहले आप सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को तशरीफ लाते हुए देखते एक़ामत शुरू फरमाते थे, फिर जब लोग आप सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को देखते तो खड़े हो जाते और आप सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अभी अपने मुसल्ला पर खड़े ना होने पाते थे कि सारी सफें दुरूस्त हो जाया करती थीं।

ह़ाफिज़ इब्ने ह़जर रह0 फ़रमाते हैं कि इसकी ताईद मुसन्नफ अ़ब्दुर–रज़्ज़ाक़ की उस रिवायत से होती है जिसको अब्दुर–रज़्ज़ाक़ ने इब्न जरीज से और इब्ल जरीज ने इब्न शहाब

ज़हरी से नक़ल की है कि सहाबा किराम मोअज़्ज़िन के अल्लाहु अकबर कहते ही नमाज़ के लिये खड़े हो जाया करते थे, यहाँ तक हुज़ूर सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के मुसल्ला पर पहुँचने से पहले सारी सफें दुरूस्त हो जाया करती थीं।

(6) नियतः

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ज़ुबान से नियत नहीं करते थे।

नियत नमाज़ के लिये शर्त है, नियत दिल के पक्के इरादा को कहते हैं, नियत में ज़ुबान का एतिबार नहीं, मस्लन अगर दिल में है कि ज़ोहर की नमाज़ पढ़ रहा हूँ और ज़ुबान से अ़स्र निकल गया तो नमाज़ ज़ोहर की अदा होगी। अलबत्ता नमाज़ पढ़ने से पहले मुतअय्यिन करे कि नमाज़ फ़र्ज़ है या सुन्नत, बा जमाअ़त है या इनफ़िरादी, कितनी रकात हैं, कौन सी नमाज़ है वग़ैरह वग़ैरह दिल में सोच लेना काफ़ी है, ज़ुबान से कहना ज़रूरी नहीं।

ज़ादुल मआ़द में हाफिज़ इब्ने क़य्यिम रहमतुल्ला अलैह फरमाते हैं:

''كان صلى الله عليه وسلم اذا قام الى الصلاة قال :"الله أكبر" و لم يقل شيئاً قبلها و لاتلفظ بالنية اَلبتة ، و لا قال : أصلى لله صلاة كذا مستقبل القبلة أربع ركعات اماماً أو مأمو ماً ، و لا قال : أداءً و لا قضاءً ، و لا فرض الوقت'' (زادالمعادفي هدي خيرالعباد، تحقيق شعيب أرنؤوط، فصل في هديه صلى الله عليه وسلم في الصلاة، ج:ا،ص: ۱۹۴، ط:مؤسسة الرسالة، لبنان، الطبعة الثالثة ۱۹۹۸ء)

नबी अकरम सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब नमाज़ के लिये खड़े होते तो अल्लाहु अकबर कह कर नमाज़ शुरू करते और इससे पहले कुछ भी नहीं कहते थे , और नबी सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने कभी ज़ुबान से नियत नहीं की, और नबी सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कभी अपनी ज़ुबान से यह नहीं कहा कि मैं फ़ुलॉ नमाज़ क़िब्ला रूख़ होकर चार रकात बतौर इमाम के या पीछे इस इमाम के, अदा करता हूँ और ना कभी

यह कहा कि मैं नमाज़े क़ज़ा, फ़र्ज़ी या नफ़्ली अदा करता हूँ।

(7) तक्बीर तहरीमाः

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है नमाज़ की तह़रीम अल्लाहु अकबर कहना है, इसलिए तक्बीरे तहरीमा कहना फ़र्ज़ है।

नमाज़ की नियत के बाद क़याम करते वक़्त अल्लाहु अकबर कह कर नमाज़ शुरू करते हैं, तक्बीर के बाद से सलाम फेरने तक नमाज़ के अलावा तमाम काम ह़राम हो गये इसी लिये इसको तक्बीरे तहरीमा कहते हैं, तकबीरे तहरीमा कहना फर्ज़ है। हज़रत अली करमुल्लाह वजहु से मरवी है कि हुज़ूर अकरम सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमायाः

''مفتاح الصلوة الطهور و تحريمها التكبير و تحليلها التسليم... ''(ترمذی، ابواب الصلوۃ عن رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم، باب ماجاء فی تحریم الصلوۃ وتحلیلہا:۲۳۸)

नमाज़ की कुंजी वुज़ू है इसकी तहरीम अल्लाहु अकबर कहना है और इसकी तहलील (इख़्तिताम) सलाम फेरना है।

(8) तकबीर तहरीमा में हाथ कहाँ तक उठायेः

रसूलुलह सल ललहु अलैहि वसल्लम तक्बीर तहरीमा कहते हुए दोनों हाथों को कानों की लौ तक उठाते थे।

तकबीर तहरीमा कहते हुए हाथ भी उठाया जाये, दोनों हाथों के अँगूठे को कान की लौ तक उठाना यानी उसके मक़ाबिल करना सुन्नत है, और कभी कभी आप सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम कँधों तक भी हाथ उठाते थे।

पहली ह़दीसः

عن مالک بن حویرث :"أن رسول الله صلی الله علیه وسلم کان اذا کبر رفع یدیه حتی یحاذی بهما اذنیه..."

(مسلم، کتاب الصلوۃ، باب استحباب رفع الیدین حذو المنکبین مع تکبیرۃ الاحرام...:۸۶۵(۳۹۱))

हज़रत मालिक बिन हुवैरिस रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हो

से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब तक्बीर कहते तो अपने दोनों हाथों को उठाते यहाँ तक कि दोनों हाथ दोनों कानों के मक़ाबिल हो जाते ।

''عن سعيد بن سمعان قال: سمعت أبا هريرة يقول:كان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال :اذاقام الى الصلوة رفع يديه مداً''

(ترمذی،ابواب الصلاۃ عن رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم،باب ماجاء فی نشر الأصابع عند التکبیر :۲۴۰)

हज़रत अबु हुरैरा रज़ि अल्लाहु अ़न्हो फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जब नमाज़ के लिये खड़े होते तो हाथें को अच्छी तरह उठाते । और मुस्लिम की एक रिवायत में है:

''عن قتاده أنه رأى نبى الله صلى الله عليه وسلم و قال حتى يحاذى بهما فروع اذنيه''(مسلم،کتاب الصلاۃ،استحباب رفع الیدین حذو المنکبین مع...:۸۶۶۶(۳۹۱))

हज़रत क़तादा रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हो से रिवायत है कि उन्होंने अल्लाह के नबी को देखा वह हाथों को कानों की लौ तक उठाते थे।

''عن علقمة عن عبد الله قال : ألا أريكم صلاة رسول الله صلى الله عليه وسلم فلم ير فع يديه الا مرة''(مصنف ابن ابی شیبۃ،باب من کان یرفع في أول تکبیرۃ ثم لا یعود:۲۴۵۹)

हज़रत अलक़मा हज़रत अ़ब्दुल्लाह से रिवायत करते हैं कि क्या मैं तुम्हें रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नमाज़ ना दिखलाऊँ? फिर उन्होंने अपने हाथ सिर्फ़ एक बार उठाया।

''عن عاصم بن كليب عن أبيه أن علياً كان ير فع يديه اذا افتتح الصلاة ، ثم لا يعود ''(مصنف ابن ابی شیبۃ،باب من کان یرفع في أول تکبیرۃ ثم لا یعود:۲۴۶۰)

हज़रत आसिम बिन कुलैब अपने बाप से रिवायत करते हैं कि हज़रत अली रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हो अपने दोनों हाथों को नमाज़ शुरू करते वक़्त उठाते, फिर दोबारा ना उठाते।

दूसरी ह़दीसः

''سالم بن عبد الله عن أبيه أنه قال : رأيت رسول الله صلى الله عليه

وسلم اذا قام فی الصلاة رفع یدیه حتی تکونا حذ و منکبیه... ''(بخاری،کتاب الأذان، باب رفع الیدین...:۷۳۶)

ह़ज़रत सालिम बिन अब्दुल्लाह अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि उन्होंने फ़रमायाः

मैंने रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा जब नमाज़ के लिये खड़े होते तो अपने दोनों हाथों को उठाते यहाँ तक कि वह दोनों मूढों के मुक़ाबिल हो जाते।

عن سالم عن أبیه قال:''رأیت رسول الله صلی الله علیه وسلم اذا افتتح الصلا ة رفع یدیه حتی یحاذی منکبیه''

(صحیح مسلم،کتاب الصلا ة،باب استحباب رفع الیدین حذو المنکبین...:۸۶۱(۳۹۰))

हज़रत सालिम अपने वालिद रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हुमा से रिवायत करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा कि जब नमाज़ शुरू करते तो अपने दोनों हाथों को उठाते यहाँ तक कि वह मूँढों के मक़ाबिल हो जाते।

कान की लौ तक वाली हदीस पर अमल करने से दोनों हदीसों पर अमल हो जाता है क्योंकि कंधे तो कान के नीचे ही होते हैं।

(9)तकबीराते इन्तिक़ालीः

तकबीराते इन्तिक़ाली उनको कहते हैं जो तकबीर एक रूक्न से दूसरे रूक्न में मुन्तक़िल होते वक़्त कही जाती है।

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक रूक्न से दूसरे रूक्न में मुन्तक़िल होने वाली तक्बीर को इस तरह करते थे कि जाने के वक़्त से शुरू फ़रमाते और पहुँचते पहुँचते ख़त्म फरमा देते थे।

फिर क़रात से फारिग़ होकर रूकू के लिये झुकते तक्बीर कहते।

इस सिलसिले में रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम

का अ़मल मुलाहिज़ा फ़रमायें:

''عبد الرحمن بن الحارث أنه سمع أبا هريرة يقول: كان رسول الله صلى الله عليه وسلم اذا قام الى الصلاة يكبر حين يقوم، ثم يكبر حين يركع، ثم يقول سمع الله لمن حمده حين يرفع صلبه من الركعة، ثم يقول وهو قائم ربنا لک الحمد ، ثم يكبر حين يهوى ، ثم يكبر حين يرفع رأسه ، ثم يفعل ذلک فى الصلاة كلِّها حتى يقضيها ، و يكبر حين يقوم من الثنتين بعد الجلوس''

(صحیح بخاری، کتاب الاذان، باب التکبیر اذا قام من السجود:۷۸۹۔صحیح مسلم، کتاب الصلاۃ، باب:۸۶۸(۳۹۲))

ह़ज़रत अबु हुरैरा रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हो से रिवायत है फरमाते ळं कि रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जब नमाज़ के लिये खड़े होते तो तक्बीर कहते, फिर जब रूकू करते तो तक्बीर कहते थे , फिर जब पीठ उठाते समि अल्लाहु लिमन ह़मिदह कहते और ह़ालत क़याम ही में रब्बना लकल हम्द कहते, फिर जब दूसरे सज्दा के लिये झुकते तो तक्बीर कहते और जब सज्दा से सर उठाते तो तक्बीर कहते, इसी तरह आप सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम नमाज़ पूरी फ़रमाते थे, क़ादा ऊला से उठने पर भी तक्बीर कहते थे।

(10) नाफ के नीचे हाथ बॉधे:

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम नमाज़ में अपने दाहिने हाथ को बायें हाथ पर नाफ़ के नीचे रखा करते थे।

नमाज़ में हाथ नाफ के नीचे बॉधना सुन्नत है। हज़रत अली रज़ि अल्लाहु तआला अन्हो फरमाते हैं:

''عن أبى جحيفة أن علياً رضى الله عنه قال: السنة وضع الكف على الكف فى الصلاة تحت السرة ''(ابوداؤد، کتاب الصلاۃ، باب وضع الیمنی علی الیسری فی الصلاۃ:۷۵۶)

हज़रत अली रज़ि अल्लाहु तआला अन्हो बयान करते हैं कि नमाज़ में सुन्नत यह है कि हथेली को हथेली पर नाफ़ के नीचे रखा जाये।

(3) अन अबी मअ़शर

عـن ابـراهيـم قـال: يضع يمينه على شماله في الصلاة تحت السُرَّةِ ''(

مصنف ابن ابی شیبۃ، تحقیق: اَبی محمد اسامۃ بت ابراہیم، کتاب الصلاۃ، باب وضع الیمین علی الشمال: ۳۹۶۳، ج:۲، ص:۳۰۸۔ ط: الفاروق الحدیثۃ للطباعۃ والنشر، قاہرہ الطبعۃ الأولی ۲۰۰۸ء)

हज़रत इबराहीम फरमाते हैं कि नमाज़ में दायाॅ हाथ बायें हाथ के ऊपर नाफ के नीचे रखे।

''أخبـرنا الحجاج بن حسان، قال : سمعت أبا مجلز أوسألته ، قال : قلت كيف (يـصـنـع)؟ قـال : يـضـع بـا طنَ كفِّ يمينه على ظاهرِ كفِّ شماله و يجعَلُهَا أسفَلَ مِن السُّرَّةِ ''(مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الصلاۃ، باب وضع الیمین علی الشمال:۳۹۶۶)

ह़ज़रत हज्जाज बिन हस्सान कहते हैं कि मैंने अबु मुजलिज़ से सुना, या यह फरमाया कि मैंने उनसे पूछा। मैंने कहाः (रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम) कैसे (करते थे)? उन्होंने फरमाया : अपने दायें हथेली के अन्दरूनी हिस्सा को बायें हथेली के ऊपरी हिस्सा पर रखते और उसको नाफ़ के नीचे करते।

عـن أبـي جـحيـفة عـن عـليٍّ ، قال : من سنَّةِ الصَّلاةِ وضْعُ الأَيْدِي على الأَيْدِي تحْتَ السُّرَرِ ''(مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الصلاۃ، باب وضع الیمین علی الشمال:۳۹۶۹)

हज़रत अबु जह़ीफ़ा ह़ज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हो से रिवायत करते हैं कि उन्होंने फ़रमायाः नमाज़ की सुन्नत में से यह है कि हाथों को हाथों पर रखे नाफ़ के नीचे।

11 दायें हाथ से बायें हाथ को पकड़ेः

अल्लाहु अकबर कह कर दाहिने हाथ की हथेली बायें हाथ की पुश्त पर इस तरह् रखे कि छोटी अंगुली और अॅगूठे पर ह़लक़ा बना कर गट्टे को पकड़े और बाक़ी तीन अॅगुलियाॅ बायें कलाई पर रखें।

हाथ बाॅधते वक़्त अपने दाहिने हाथ की हथेली बायें हाथ

पर इस तरह रखे कि छोटी अंगुली और अंगूठे का अपने गट्टे पर हलक़ा बना ले, यही मुख्तार (पसन्दीदा) क़ौल है। अगर किसी ने सिर्फ़ दाहिने हाथ की हथेली को बायें हथेली की पुश्त पर रख लिया और हलक़ा नहीं बनाया तो यह भी दुरुस्त है। पहला तरीक़ा ज़्यादा बेहतर है क्योंकि इसमें दोनों हदीसों पर अमल हो जाता है।

''عن عاصم بن كليب قال فيه .... ثم وضع يدَ هُ اليُمنى على ظهر كفه اليسرى و الرسغ والساعد ...'' (ابوداؤد، کتاب الصلاۃ، باب رفع الیدین فی الصلوۃ:۷۲۷)

हज़रत आसिम बिन कुलैब फ़रमाते हैं कि फिर नबी सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दायें हाथ को इसतरह रख कि वह बायें हथेली की पुश्त और गट्टे और कलाई पर था ।

''عن قبيصة بن هلب عن أبيه قال: كان رسول الله صلى الله عليه وسلم يؤ منا فيأخذ شماله بيمينه'' (ترمذی، ابواب الصلاۃ، باب ماجاء فی وضع الیمین علی الشمال:۲۵۲)

हज़रत क़बीसा रज़ियल्लाहु अन्हो के वालिद फ़रमाते हैं कि रसू लुल्लाह सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमें नमाज़ पढ़ाते वक्त अपने दायें हाथ से बायें हाथ को पकड़ा करते थे।

12 नज़र कहाँ रखे:

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम का हुक्म है कि अपनी निगाह सज्दे की जगह पर रखो।

नमाज़ में क्याम की हालत में सज्दे की जगह पर, रुकू की हालत में क़दम पर, सज्दे में नाक पर और बैठने की हलत में दोनों रानों पर होनी चाहिये। बैहक़ी में हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हो की रिवायत है:

''عن أنس أن النبى صلى الله عليه وسلم قال : يا أنس ، اجعل بصرک حيث تسجد'' (بیہقی، تحقیق عبدالقادر عطا، کتاب الصلاۃ، باب لا یجاوز بصرہ موضع سجودہ:۳۵۴۵۔ط: دار الکتب العلمیۃ، بیروت، لبنان، الطبعۃ الثالثۃ ۲۰۰۳ء)

हज़त अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हो से रिवायत है कि रसूल सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: ऐ

अनस, अपनी निगाह सज्दे की जगह पर रखो।

सुनन कुबरा लिल बैहक़ी में है:

"عن عبد الله بن عو ن عن محمد قال : كان رسول الله صلى الله عليه وسلم اذا صلى رفع رأسه الى السماء تدور عيناه ينظر ها هنا وها هنا فأنزل الله عز و جل " قَدۡ اَفۡلَحَ الۡمُؤۡمِنُون اَلَّذِيۡنَ هُمۡ فِى صَلَا تِهِم خاَشِعُوۡن" فطأ فطأ ابن عون رأسه و نكس فى الأرض"

(بیہقی، تحقیق عبدالقادرعطا، کتاب الصلاۃ، باب لا یجاوز بصرہ موضع سجودہ:۳۵۳۹)

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जब नमाज़ पढ़ते तो अपना सर आसमान की तरफ़ उठाते और आपकी आँखें इधर–उधर देखती थीं तों अल्लाह अ़ज़्ज़ो जल ने क़द अफ़लहा अल आयत। नाज़िल फ़रमाई, फ़िर इब्ने औ़न (राविये ह़दीस) ने अपना सर झुकाया और ज़मीन की तरफ़ औंधा लिया।

"عن أبي هريرة رضى الله تعالىٰ عنه أن رسول الله صلى الله عليه وسلم كان اذا صلى رفع بصره الى السماء فنزلت " اَلَّذِيۡنَ هُمۡ فِى صَلاتِهِمۡ خَاشِعُوۡن" فطأفطأ راسه" (بیہقی، کتاب الصلاۃ، باب لا یجاوز بصرہ موضع سجودہ:۳۵۴۲)

ह़ज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाह तआ़ला अ़न्हो से रिवायत है कि रसूल सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जब नमाज़ पढ़ते थे तो अपनी निगाह आसमान की तरफ़ उठाते तो यह आयत नाज़िल हुई अल्लज़ीना हुम अल आयत। इसके बाद आपने अपना सर झुका लिया।

13 सना पढ़ने का हुक्मः

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जब नमाज़ शुरु फ़रमाते तो सना पढ़ते थे।

नमाज़ में तक्बीरे तह़रीमा के बाद क़िराअत से पहले इमाम, मुक़्तदी मुनफ़रिद के लिये सना पढ़ना सुन्नत है।

सुनन इब्ने माजा में ह़ज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से मरवी है:

”عن عائشة أن النبی صلی اللہ علیہ وسلم کان اذا افتتح الصلاۃ قال
:“ سُبْحَانَکَ اللّٰھُمَّ وَ بِحَمْدِکَ وَتَبَارَکَ اسْمُکَ وَ تَعَالٰی جَدُّکَ وَ لَآ اِلٰہ
غَیْرُکَ “ (سنن ابن ماجہ، ابواب اقامۃ الصلاۃ والسنۃ فیہا، باب افتتاح الصلاۃ:۸۰۶)

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब नमाज़ शुरु फ़रमाते तो
”سُبْحَانَکَ اللّٰھُمَّ وَ بِحَمْدِکَ وَتَبَارَکَ اسْمُکَ وَ تَعَالٰی جَدُّکَ وَ لَآ اِلٰہ
غَیْرُکَ “। पढ़ते

14 अऊज़ुबिल्लाह पढ़ना:

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम क़िराअत शुरु करने से पहले
”اَعُوْذُ بِا للّٰہِ مِنَ الشَّیْطَانِ الرَّجِیْم “। पढ़ते

सना पढ़ने के बाद तन्हा नमाज़ पढ़ने वाला और इमाम दोनों पस्त आवाज़ से अऊज़ु बिल्लाह पढ़ें, मुक़्तदी सना पढ़कर खामोश हो जाये।

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हो से रिवायत है कि:

”عن أبی سعید الخدری ، أن رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کان
یقول قبل القراءۃ : اَعُوْذُ بِا للّٰہ مِنَ الشَّیْطانِ الرَّجِیْم “

(مصنف عبدالرزاق، کتاب الصلاۃ، باب متی یستعیذ)

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम क़िराअत से पहले “اعوذ با للہ من الشیطان الرجیم” पढ़ा करते थे।

”عن ابن جبیر بن مطعم عن أبیہ قال : رأیت رسول اللہ صلی اللہ علیہ
وسلم حین دخل فی الصلاۃ ، قال : اَللّٰہُ أَکْبَر کَبِیْراً، اَللّٰہُ أَکْبَر کَبِیْراً. ثلاثاً
،اَلْحَمْدُ لِلّٰہ کَثِیْراً ، اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ کَثِیْراً . ثلاثاً . سُبْحَانَ اللّٰہ بُکْرۃً وَّ اَصِیْلاً .ثلاث
مرات . اَللّٰھُمَّ اِنِّی اَعُو ذُبِکَ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْم مِنْ ھمْزِہ وَ نَفْخِہ وَ نَفثِہ“
قال عمرو: ہمزہ الموتۃ، ونفثہ الشعر، ونفخہ الکبر۔

(ابن ماجہ، ابواب اقامۃ الصلوات والسنۃ فیہا، باب الاستعاذۃ فی الصلاۃ: ۸۰۷)

हज़रत जुबैर बिन मुतइम रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हो अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को उस वक़्त देखा जब वह नमाज़ में दाखिल हो रहे थे, आपने फरमाया, ''الله اكبر كبيراً، الله اكبر كبيراً'' तीन मरतबा।'' ''سبحان الله بكرة و اصيلاً'' तीन मरतबा। ''الحمد لله كثيراً، الحمد لله كثيراً'' तीन मरतबा। ऐ अल्लाह मैं पनाह माँगता हूँ शैतान मरदूद से, उसके खतरे से उसकी फूँकों से और उसके वसवसा से।

15 बिस्मिल्लाह पढ़नाः

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम नमाज़ में क़िराअत से पहले '**بسم الله الرحمن الرحيم**' आहिस्ता पढ़ा करते थे।

अऊज़ुबिल्लाह के बाद इमाम आहिस्ता से बिस्मिल्लाह पढ़े और मुक़्तदी ख़ामोश रहें।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हो से रिवायत है:

"عن ابن عباس قال : كان النبى صلى الله عليه وسلم يفتتح صلاته بـ بسم الله الرحمن الرحيم" (سنن الترمذی، ابواب الصلاۃ، باب من رأی الجهر ببسم الله الرحمٰن الرحيم: ۲۴۵)

नबी करीम सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अपनी नमाज़ **بسم الله الرحمن الرحيم** से शुरु फरमाया करते थे।

''عن عبد الله رضى الله عنه أنه كان يخفى بسم الله الرحمن الرحيم والاستعاذة و ربنا لك الحمد'' (مصنف ابن ابی شیبۃ، باب من کان لا یجهر ببسم الله: ۴۱۶۰)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हो बिस्मिल्ला हिर्रह़मानिर रह़ीम, अऊज़ु बिल्लाह, और रब्बना लकल ह़म्द आहिस्ता पढ़ते थे।

''عن أنس رضى الله عنه قال صليت مع رسول الله صلى الله عليه وسلم و أبى بكر وعمر و عثمان فلم أسمع احدا منهم يقرأ بسم الله الرحمن

الرحیم'' (مسلم، کتاب الصلاۃ، باب حجۃ من قال لا یجہر بالبسملۃ: ۸۹۰(۳۹۹))

ह़ज़रत अनस रज़ियल्लाहु अ़न्हो फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ह़ज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अ़न्हो, ह़ज़रत उ़मर रज़ियल्लाहु तआ़ला तआ़ला अ़न्हो और ह़ज़रत उ़स्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हो के पीछे नमाज़ पढ़ी है मैंने इनमें से किसी से भी नहीं सुना कि वह बिस्मिल्ला हिर्रह़मा निर्रहीम पढ़ते हों। (यानी ज़ोर से आवाज़ के साथ पढ़ते हुये नहीं सुना)

16 क़िराअतः

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम सूरए फ़ातिह़ा और उसके साथ कुछ आयात या सूरतें मिला कर पढ़ते थे।

''عن ابی سعید قال : أمرنا أن نقرأ بفاتحة الکتاب و ما تیسر''

(ابوداؤد، کتاب الصلاۃ، باب من ترک القراءۃ فی صلاتہ بفاتحۃ الکتاب: ۸۱۸)

ह़ज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हो से रिवायत है कि हमें हुक्म दिया गया है कि सूरए फ़ातिह़ा और (उसके साथ) जो आसान हो (सूरत या आयत पढ़ें)।

मुनफरिद यानी अकेले नमाज़ पढ़ने वाले के लिये ज़रुरी है कि वह हर रकात में सूरए फ़ातिह़ा पढ़े।

सह़ीह़ मुस्लिम में ह़ज़रत उ़बादा बिन सामित रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हो से रिवायत हैः

''عن عبادۃ بن الصامت رضی اللہ تعالیٰ عنہ یبلغ بہ النبی صلی اللہ علیہ وسلم لا صلوۃ لمن لم یقرأ بفاتحة الکتاب'' (صحیح مسلم: وجوب قراءۃ الفاتحۃ فی کل رکعۃ۔ ترمذی، ابواب الصلاۃ، باب ماجاء أنہ لا صلاۃ الا بفاتحۃ الکتاب: ۲۴۷)

ह़ज़रत उ़बादा बिन सामित रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हो से रिवायत है कि नबिये अकरम सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो शख्स सूरए फ़ातिह़ा न पढ़े उसकी नमाज़ नहीं होती।

इमाम बुखारी के उस्ताद इमाम अह़मद रह मतुल्लाह अ़लैह ने इस ह़दीस को तन्हा नमाज़ पढ़ने वाले पर महमूल किया है चुनॉचे इमाम तिर्मिज़ी ने इसको अपनी सुनन तिर्मिज़ी में नक़ल किया है:

''معنى قول النبى صلى الله عليه وسلم لا صلوة لمن لم يقرأ بفاتحة الكتاب اذا كان وحده و احتج بحديث جابر حيث قال من صلى ركعة لم يقرء فيها بأم القرآن فلم يصل الا أن يكون وراء الامام، قال احمد (بن حنبل)فهذا رجل من اصحاب النبى صلى الله عليه وسلم تأول قول النبى صلى الله عليه وسلم "لا صلوةلمن لم يقرأ بفاتحة الكتاب "أن هذا كان وحده''

(ترمذی، ابواب الصلاۃ، باب ماجاء فی ترک القراءۃ خلف الامام...:۳۱۲)

ला सलाता लि मल्लम यक़रअ बिफ़ातिह़तिल किताब का मतलब यह है कि जब कोई शख़्स अकेला नमाज़ पढ़ रहा हो तो सूरए फ़ातिह़ा पढ़े बग़ैर उसकी नमाज़ नहीं होगी, इसकी दलील ह़ज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हो की रिवायत है कि जिसने एक रकात में भी सूरए फ़ातिह़ा न पढ़ी उसकी नमाज़ नहीं होगी मगर यह कि वह इमाम के पीछे हो। इमाम बुखारी रह0 के उस्ताद इमाम अह़मद रह0 फ़रमाते हैं कि नबिये अकरम सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इरशाद मुबारक का मतलब वह है जो एक जलीलुल क़द्र सह़ाबी ने समझा कि ला सलाता लि–मल्लम यकरउ वाली ह़दीस तनहा नमाज़ पढ़ने वाले के बारे में है।

और उन्हीं से मरवी है:

''عن عباده بن الصامت يبلغ به النبى صلى الله عليه وسلم قال : لا صلاة لمن لم يقرأ بفاتحة الكتاب فصاعدا. قال سفيان : لمن يصلى وحده'' (سنن ابی داؤد، کتاب الصلاۃ، باب من ترک القراءۃ فی صلاتہ:۸۲۲)

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम इरशाद फ़रमाते हैं कि उस शख़्स की नमाज़ नहीं होती जो सूरए फ़ातिह़ा और उसके साथ मज़ीद कुछ (सूरत या आयात) न पढ़े। ह़ज़रत

सुफियान सौरी रह0 फ़रमाते हैं कि यह हदीस उस शख्स के लिये है जो अकेला नमाज़ पढ़ रहा हो।

''عن أبی نعیم وهب بن کیسان : أنه سمع جا بر بن عبد الله یقول : من صلی رکعة لم یقرأ فیها بأم القرآ ن فلم یصل الا أن یکون وراء الامام''(ترمذی، ابواب الصلاۃ، باب ماجاء فی ترک القراءۃ خلف الامام اذا جہر الامام بالقراءۃ:۳۱۳)

हज़रत अबू नुऐम वहब बिन कैसान रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हो से मरवी है कि उन्हों ने हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हो से सुना कि जिस शख्स ने कोई ऐसी रकात पढ़ी जिसमें सूरए फ़ातिहा नहीं पढ़ी तो उसने नमाज़ नहीं पढ़ी मगर यह कि इमाम के पीछे हो।

इमाम फज्र, मग़रिब और इशा की पहली दो रकातों में सूरए फ़ातिहा बुलन्द आवाज़ से पढ़े और ज़ुहर व अ़स्र की नमाज़ में आहिस्ता।

17 इमाम के पीछे सूरए फ़ातिहा पढ़नाः

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इमाम के पीछे किराअत करने से मना फ़रमाया है और इरशाद फ़रमाया कि जब इमाम किराअत करे तो तुम ख़ामोश रहो।

अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाते हैंः

''وَ اِذَا قُرِئَ الْقُرْآن فَاسْتَمِعُوْا لَه وَ اَنْصِتُوْا لَعَلَّکُم تُرْحَمُوْن''(القرآن،اعراف:۲۰۴)

जब कुरआन पढ़ा जाये तो उसको ग़ौर से सुनो और ख़ामोश रहो ताकि तुम पर रहम किया जाये।

मुफ़स्सिरीन कुरआन अस्हाबे रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद, हज़रत अबु हुरैरा, हज़रत इब्ने अब्बास रिज़्वानुल्लाहि तआ़ला अलैहिम अजमईन से यह मनकूल है कि इस आयत का नुज़ूल नमाज़ के मुताल्लिक़ हुआ है और इस बात पर इजमा है कि :

''انها نزلت فی القراء ة خلف الامام فی الصلوة''

यह आयत नमाज़ में इमाम के पीछे किराअत के बारे में नाज़िल हुयी है।

(اوجز المسالک:۲۴۶/۱،افتتاح الصلوۃ،باب القراءۃ خلف الامام،مطبع یحیویہ سہارنپور)

तफ़सीर रूहुल मआनी में है कि अ़ल्लामा आलूसी इसकी तसरीह़ करते हुये फ़रमाते हैं:

عن مجاهد قال : قرأ رجل من الأنصار خلف رسول الله صلى الله عليه وسلم فى الصلوة ، فنزلت و اذا قرئ القرآن الآية'' (روح المعانی:۹/۱۵۰،مطبع امدادیہ ملتان)

मुफस्सिरे कबीर अ़ल्लामा राज़ी लिखते हैं:

''الأية نزلت فى ترک الجهر بالقراءة وراء الامام'' (مفاتیح الغیب للرازی:۱۵/۸۳)مطبع بیروت)

मशहूर व मारूफ़ मुफ़स्सिर इमाम अबु बकर जस्सास इस आयत की तफ़सीर में लिखते हैं:

'' دلت الأية على النهى عن القراءة خلف الامام فيما يجهر به ، فهى دالة على النهى فيما يخفى ، لأنه اوجب الاستماع والانصات عند قراءة القرآن و لم يشترط فيه حال الجهر من الاخفاء فاذا جهر فعلينا الاستماع و الانصات و اذا خفى فعلينا الانصات بحكم اللفظ لعلمنا بأنه قارئ للقرآن''

(احکام القرآن،ج:۳،ص:۳۹)

यह आयत दलील है इस बात पर कि जिस तरह़ जहरी नमाज़ों में मुक़्तदी को इमाम के साथ पढ़ने से रोका गया है उसी तरह सिर्री नमाज़ों में भी इमाम के साथ पढ़ने से रोका गया है, चूँकि तिलावते क़ुरआन के वक़्त उसको सुनना और खामोश रहना ज़रूरी है इसमें जेहरी नमाज़ की कोई तख़्सीस नहीं अल–ग़र्ज़ जब इमाम बुलन्द आवाज़ से पढ़ रहा हो तो हम पर उसका सुनना और खामोश रहना ज़रूरी है और जब वह आहिस्ता पढ़ रहा हो तो खामोश रहना हर ह़ाल में ज़रूरी है क्योंकि हमें मालूम है कि इमाम क़ुरआन पढ़ रहा है।

अह़दीसे मुबारका में रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मुक़्तदियों को (इमाम के पीछे) क़ुरआन पढ़ने से मना फरमाया है और खामोश रहने की हिदायत दी है।

सहीह़ मुस्लिम में है:

''قال النبی صلی الله علیه وسلم : اذا صلیتم فأقیموا صفو فکم ، ثم لیؤُمّکم أحدکم فاذا کبر فکبر وا، واذا قال : غَیْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَیْهِمْ وَلَا الضَّآلِّیْن، فقولوا : آمین ،یجبکم الله " و فی حدیث جریر عن سلیمان عن قتادة من الزیادة : "واذا قرأفأنصتوا ''(مسلم، کتاب الصلاۃ، باب التشہد فی الصلوۃ:۹۰۴(۴۰۴)۔۹۰۵(۴۰۴))

नबी करीम सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का इरशाद है जब तुम नमाज़ के लिये खड़े हो तो अपनी सफ़ों को दुरुस्त कर लो, फिर तुममें से कोई इमामत करे, जब इमाम तक्बीर कहे तो तुम भी तक्बीर कहो और जब वह ''ग़ैरिल मग़ज़ूबि अ़लैहिम वलज़्ज़ाल्लीन'' कहे तो तुम आमीन कहो और क़ितादा से यह ज़्यादती भी मरवी है कि आप सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जब (इमाम) किराअत करे तो तुम खामोश रहो।

''عن أبی هریرة قال:قال رسول الله صلی الله علیه وسلم : انما جُعِلَ الامام لیؤتم به فاذا کبر فکبر وا، واذاقرأفأنصتوا ''(ابن ماجہ، ابواب اقامۃ الصلاۃ والسنۃ فیہا ،باب اذا قرأالامام فأنصتوا:۸۴۶)

ह़ज़रत अबु हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमायाः बिला शुब्हा इमाम बनाया गया है ताकि उसकी इक़्तिदा की जाये जब वह तक्बीर कहे तो तुम भी तक्बीर कहो और जब वह क़िराअत करे तो तुम खामोश रहो।

''عن ابی مو سی الاشعری قال : قال رسول الله صلی الله علیه وسلم "اذا قرأ الامام فأنصتوا... ''(ابن ماجہ، ابواب اقامۃ الصلاۃ والسنۃ فیہا، باب اذا قرأالامام فأنصتوا:۸۴۷)

ह़ज़रत अबी मूसा अशअ़री रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हो ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमायाः जब इमाम क़िराअत करे तो खामोश रहो।

عن جا بر قال : قال رسول الله صلی الله علیه وسلم : من کا ن له الامام فقراء ة الامام له قراء ة''(ابن ماجہ، باب اذا قرأالامام فأنصتوا:۸۵۰۔)

ह़ज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हो से रिवायत है

कि नबी करीम सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमायाः जिस शख्स के लिये इमाम हो तो इमाम की क़िराअत ही उसकी भी किराअत है (यानी उसको अलग से किराअत करने की ज़रूरत नहीं)

عن أبی موسیٰ قال : علمنا رسول الله صلی الله علیه وسلم : اذا قمتم الی الصلوة فلیؤمکم أحدکم و اذا قرأ الامام فأنصتوا ''(مسند احمد، تحقیق ارنؤوط:۱۹۷۲۳)

ह़ज़रत अबु मूसा अशअ़री रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हो फ़रमाते है कि हमको रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने सिखाया है कि जब तुम नमाज़ के लिये खड़े हो जाओ तो तुम में कोई नमाज़ पढ़ाए और जब इमाम क़िराअत करे तो तुम खामोश रहो।

18 मुक़्तदी बिल्कुल क़िराअत न करे:

किसी नमाज़ में भी मुक़्तदी को इमाम के साथ क़िराअत नहीं करनी चाहिये।

सह़ीह मुस्लिम में है कि ह़ज़रत अ़ता बिन यसार रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हो ने ह़ज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हो से पूछा कि इमाम के साथ–साथ किराअत करनी चाहिये कि नहीं? तो ह़ज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हो ने फरमायाः

'' لا قراءة مع الامام في شیئی ''(صحیح مسلم، کتاب المساجد، باب سجود التلاوة:۱۲۹۸(۵۷۷))

यानी इमाम के साथ किसी चीज़ में क़िराअत नहीं है।

''عن عبد الله بن أبی لیلیٰ ، قال : سمعت علیاً یقول : من قرأ خلف الامام فقد أخطأ الفطرة''(مصنف عبدالرزاق، کتاب الصلاة، باب قراءة خلف الامام:۲۸۰۹)

ह़ज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी लैला फ़रमाते हैं कि मैंने ह़ज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हो को कहते हुए सुना कि जिसने इमाम के पीछे क़िराअत की तो उसने फ़ितरत के खेलाफ़ किया।

''عن عبد الرحمن بن أبی لیلیٰ ، أن علیاً کان ینهی عن القراء ة خلف الامام ''(مصنف عبدالرزاق، کتاب الصلاۃ، باب قراءۃ خلف الامام:۲۸۹۵)

ह़ज़रत अब्दुर्रह़मान बिन अबी लैला से मरवी है कि ह़ज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हो इमाम के पीछे क़िराअत करने से रोकते थे।

''عن زید بن ثابت قال : من قرأ مع الامام فلا صلاة له ''(مصنف عبدالرزاق، کتاب الصلاۃ، باب قراءۃ خلف الامام:۲۸۹۱)

ह़ज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हो फ़रमाते हैं कि जिसने इमाम के साथ क़िराअत की उसकी नमाज़ नहीं हुई।

''أخبرنی موسیٰ بن عقبة أن رسول الله صلی الله علیه وسلم ، وأبا بکر ، و عمر ، و عثمان ،کانوا ینهون عن القراء ة خلف الامام''

(مصنف عبدالرزاق، کتاب الصلاۃ، باب قراءۃ خلف الامام:۲۸۰۳)

ह़ज़रत अ़ब्दुर–रज़्ज़ाक़ फ़रमाते हैं कि मुझको मूसा बिन उ़क़बा ने बतलाया कि रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और ख़ुलफ़ाए राशिदीन में से ह़ज़रत अबु बकर, ह़ज़रत उ़मर और ह़ज़रत उसमान रिज़वानुल्लाहि तआ़ला अ़लैहिम अजमईन इमाम के पीछे क़िराअत करने से मना फ़रमाते थे।

19 इमाम के ''ग़ैरिल मग़ज़ूबि अ़लैहिम वलज़्ज़ाल्लीन'' पर आहिस्ता ''आमीन'' कहनाः

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ''वलज़्ज़ाल्लीन'' कहने पर आहिस्ता आमीन कहते।

इमाम के ''वलज़्ज़ाल्लीन'' कहने पर ज़ोर से ''आमीन'' कहना नबिये अकरम सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से तालीमन (यानी लोगों को सिखाने के लिये था) जबकि आप सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम आहिस्ता आमीन कहते, ह़दीस में हैः

''عن علقمة بن وائل عن أبيه أن النبى صلى الله عليه وسلم قرأ ''غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّيْن'' فقال آمين و خفض بها صوته''

(ترمذی، کتاب الصلاۃ، باب ماجاء فی التأمین:۲۴۸)

अ़लक़मा बिन वाएल रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि नबी सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ''ग़ैरिल मग़्ज़ूबि अ़लैहिम वलज़्ज़ाल्लीन'' पढ़ा तो आमीन आहिस्ता आवाज़ से कही। आमीन एक दुआ़ है जैसा कि बुखारी में है

''آمين دعاء'' (بخاری، کتاب الاذان، باب جہر الامام بالتأمین)

जिसके माना हैंः ऐ अल्लाह तू क़ुबूल फ़रमा। और दुआ़ आहिस्ता की जाती है जैसा कि अल्लाह तआ़ला का इरशाद हैः

''اُدْعُوا رَبَّكُمْ تَضَرُّعاً وَّ خُفْيَةً'' (اعراف:۵۵)

पुकारो अपने रब को गि़ड़गिड़ा कर और चुपके–चुपके। इसलिये आमीन आहिस्ता कहना चाहिये।

20 सूरए फ़ातिह़ा के बाद कोई सूरत पढ़नाः

सूरए फातिहा के बाद इमाम और मुनफरिद कोई सूरत या एक बड़ी आयत या तीन छोटी आयात पढ़ें। ज़ोहर, अस्र, इशा और मग़्रिब की पहली दो रकातों में फ़ातिहा के साथ कोई और सूरत मिलायें, आख़िारी रकात में सिर्फ सूरए फातिहा पढ़ें । रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ऐसे ही पढ़ते थे। ह़दीस में हैः

''عن أبــى قتادة عن أبيه أن النبى صلى اللّٰه عليه وسلم كان يقرأ فى الظهر فى الأوليين بأم الكتاب و سورتين و فى الركعتين الأخريين بأم الكتاب ،و يسمعنا الاٰية، و يُطَوِّلُ فى الركعة الأولىٰ مالا يُطيْل فى الركعة الثانية و هكذا في العصر و هكذا في الصبح'' (بخاری، کتاب الاذان، باب مایقرأ فی الاخریین بفاتحۃ الکتاب:۷۷۶)

हज़रत अबु क़ेतादह अपने वालिद से नक़ल करते हैं कि नबी अकरम सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की आदत शरीफा यह

थी कि ज़ोहर और अस्र की पहली दो रकातों में सूरए फातिहा के साथ दो सूरतें और आख़री दो रकातों में सिर्फ सूरए फातिहा पढ़ते थे और कभी कभार हमें आयत सुनादेते थे और पहली रकात को दूसरी रकात से लम्बी अदा करते थे, अस्र और सुबह में भी ऐसा ही करते।

21 ज़ोहर और अस्र में आहिस्ता किराअत करना:

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम ज़ोहर और अस्र की नमाज़ में आहिस्ता किराअत करते थे।

''عن ابی معمر قال: قلنا للخباب بن الأرَت ، أكان النبی صلی الله علیه وسلم یقرء فی الظهر والعصر؟قال نعم،قال قلت بأی شئی كنتم تعلمون قراء ته ؟ قال باضطراب لحیته'' (بخاری، کتاب الاذان، باب القراءۃ فی العصر:۷۶۱۔۷۴۶)

हज़रत अबु मअमर ने हज़रत ख़ब्बाब रज़ियल्लाहु तआला अन्हो से पूछा कि क्या नबी अकरम सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम ज़ोहर, असे में किराअत करते थे? फरमायाः है। अबु मअमर ने अर्ज़ किया आपको कैसे मालूम होता था? फरमायाः आप सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दाढ़ी मुबारक के हिलने से मालूम हो जाता कि आप पढ़ रहे हैं।

22 रफा यदैन (हर तक्बीर के वक़्त हाथ उठाना)

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम आख़िार में तक्बीरे तह़रीमा के अलावा किसी और तक्बीर में हाथ नहीं उठाते थे और क़िराअत से फारिग़ होकर सीधा रूकू में चले जाते थे।

रफा यदैन का माना है ''दोनों हाथों को उठाना'' और इससे मुराद नमाज़ की हालत में तक्बीर कहते वक़्त दोनों हाथों को कानों की लौ तक उठाना है।

वित्र और ईदैन की नमाज़ के अलावा तमाम नमाज़ों में सिर्फ तक्बीरे तहरीमा कहते वक्त ही रफा यदैन करना मस्नून है, और यह मस्ला सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम अजमईन के ज़माना से मुख़्तलिफ़ फ़ीह रहा है, हुज़ूर अकरम सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विसाल के बाद बाज़ सहाबा किराम रफा यदैन करते थे और बाज़ नहीं करते थे और रफ़ा यदैन ना करना ही रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आख़री अमल है।

तक्बीरे तहरीमा के अलावा दूसरे मक़ामात में रफा यदैन ना करने की अहादीसः

सुनन अबु दाऊद, मुस्नद अबु यअ़ला, तहावी में हज़रत बरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है किः

”عن عبد الرحمٰن بن أبی لیلیٰ عن البراء قال : رأیت رسول الله صلی الله علیه وسلم رفع یدیه حین استقبل الصلاة ، حتی رأیت ابهامیه قریباًمن أذنیه ثم لم یرفعهما “(مسندأبی یعلی الموصلی:۱۶۹۲، تحقیق: حسین سلیم اسد، مسند البراء بن عازب، ج:۳ص:۲۴۸۔ سنن ابوداؤد، کتاب الصلاۃ، باب من لم یذکر الرفع عند الرکوع:۷۴۹۔ تھوڑے الفاظ کے فرق کے ساتھ)۔)

हज़रत बरा बिन आ़ज़िब रज़ियल्लाहु तआला अन्हो फरमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लह सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा कि दोनों हाथों को उठाया जिस वक़्त नमाज़ शुरू फरमाई थी, हत्ता कि मैंने देखा कि दोनों हाथों के अँगूठों को दोनों कानों के क़रीब पहुँचाया, इसके बाद फिर अख़ीर नमाज़ तक दोनों हाथों को नहीं उठाया।

”عن البراء أن النبی صلی الله علیه وسلم کان اذا افتتح الصلاة ، رفع یدیه ثم لا یرفع حتی ینصرف “(مسندابویعلی، تحقیق: حسین سلیم اسد، مسند البراء بن عازب: ۱۶۸۹۔ ج:۳۔ دار الثقافۃ العربیۃ، بیروت، الطبعۃ الثالثۃ ۱۹۹۲ء)

मुफ़स्सिर कुरआन हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हो से रिवायत हैः

”عن علقمة عن عبد الله بن مسعود عن النبی صلی الله علیه وسلم أنه

كان يرفع يديه في أول تكبيرة ثم لا يعود'' (شرح معانی الآثار للطحاوی، کتاب الصلاۃ، باب التکبیر :۱۳۴۹، ج:۱،ص:۲۲۴۔ط:الدار، الطبعۃ الاولیٰ ۱۹۹۴ء)

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हो रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से रिवायत फरमाते हें कि आप सिर्फ़ शुरू तक्बीर में दोनों हाथों को उठाते थे, फिर उसके बाद अखीर नमाज़ तक नहीं उठाते थे।

ह़ज़रत मुग़ीरा रज़ियल्लाहु अ़न्हो से मरवी है:

''عن المغيرة قال : قلت لابراهيم : حديث وائل أنه رأى النبى صلى الله عليه وسلم يرفع يديه اذا افتتح الصلاة واذا ركع و اذا رفع رأسه من الركوع فقال : ان كان وائل رآه مرةً يفعل ذلک فقد رآه عبد الله خمسين مرة لا يفعل ذلک''

(شرح معانی الآثار للطحاوی، کتاب الصلاۃ، باب التکبیر :۱۳۵۱، ج:۱،ص:۲۲۴۔ط:)

हज़रत मुग़ीरा रज़ियल्लाहु तआ़ला ने ह़ज़रत इमाम इबराहीम नखई से ह़ज़रत वाएल बिन हजर की ह़दीस ज़िक्र फ़रमाई की ह़ज़रत वाएल बिन हजर से मरवी है, फरमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को देखा कि आप दोनों ह़ाथों को उठाते थे जब नमाज़ शुरू फ़रमाते और जब रुकू में जाते और जब रुकू से सर उठाते। तो इस पर ह़जरत इबराहीम नखई रहमतुल्लाह अ़लैह ने मुग़ीरा से कहा कि अगर वाएल बिन हजर रज़ियल्लाहु अ़न्हो ने हुज़ूर सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को यह रफ़ा–यदैन करते हुए एक मरतबा देखा है तो ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रजियल्लाहु तआ़ला अ़न्हो ने रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को पचास मरतबा रफ़ा यदैन न करते हुए देखा है।

ह़ज़रत वाएल रजियल्लाहु तआ़ला अन्हो मदीना मुनव्वरा के रहने वाले नही थे बल्कि इस्लाम क़ुबूल करने के बाद चन्द दिन मदीना में रह कर इस्लामी तालीमात सीखने के बाद चले गये थे जबकि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हो रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ सफर और हज़र में रहने वाले नीज़ आप सल लल्लाहु अलैहि

वसल्लम के खादिमे ख़ास भी थे और बहुत से सहाबा किराम से तालीमाते इस्लामी ह़ासिल करते थे।

सहीह मुस्लिम में हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हो से रिवायत है कि:

''عن جابر بن سمره قال : خرج علينا رسول الله صلى الله على وسلم فقال : مالى أراكم رافعى أيديكم كأنها أذناب خيل شُمس ؟ اسكنوا في الصلاة... ''

(صحیح مسلم، کتاب الصلاۃ، باب الأمر بالسکون في الصلاۃ والنہی عن الاشارۃ بالید...:۹۶۸(۴۳۰))

हज़रत जाबिर बिन समरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हो फरमाते हैं कि हुज़ूर सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमारी तरफ तश्रीफ लाकर फरमायाः मुझे क्या हो गया कि मैं तुम लोगों को नमाज़ के अन्दर अपने दोनों हाथों को उठाते हुए देखता हूँ ऐसा लगता है जैसा कि बे चैनी में घोड़े अपनी दुम को ऊपर उठा उठा कर हिलाते हैं, तुम नमाज़ के अन्दर ऐसा हरगिज़ मत किया करो, नमाज़ में सुकून एख़्तियार करो।

''عن علقمة قال : قال عبد الله بن مسعودؓ: ألا أصلى بكم صلاة رسول الله صلى الله عليه وسلم ، فصلى فلم يرفع يديه الا في أول مرة'' (سنن ابوداؤد، کتاب الصلاۃ، باب من لم یذکر الرفع عند الرکوع:۷۴۸۔ جامع الترمذی، ابواب الصلاۃ، باب ماجاء فی أن النبی صلی اللہ علیہ وسلم لم یرفع الا في أول مرۃ:۲۵۷۔ سنن نسائی، کتاب التطبیق، باب الرخصۃ في ترک ذلک:۱۰۵۹)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हो से मरवी है वह फरमाते हैं कि क्या मैं तुमको हुज़ूर सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नमाज़ पढ़ा कर ना दिखाऊँ, यह कह कर नमाज़ पढ़ाई और अपने दोनों हाथों को सिर्फ अव्वल तक्बीर में उठाया (फिर पूरी नमाज़ में नहीं उठाया)

''عن علقمة عن عبد الله بن مسعود رضى الله عنه قال : صليت خلف النبى صلى الله عليه وسلم و أبى بكر و عمر لم يرفعوا أيديهم الا عند افتتاح الصلاة'' (بیہقی، کتاب الصلاۃ، باب من لم یذکر الرفع الا عند الافتتاح:۲۵۳۴)

हज़रत अलक़मा अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु

तआला अन्हो से रिवायत करते हैं कि इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने फरमायाः मैंने हुज़ूर सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पीछे और हज़रत अबु बकर व उमर के पीछे नमाज़ पढ़ी है उनमें से किसी ने अपने हाथों को तक्बीरे तहरीमा के अलावा किसी और तक्बीर में नहीं उठाया।

और बैहक़ी में यही रिवायत इस तरह हैः

''عن عاصم بن كليب عن أبيه عن على رضى الله عنه أنه كان يرفع يديه فى التكبيرة الأولىٰ من الصلوة ثم لا يرفع فى شيئى منها'' (بیہقی، کتاب الصلاۃ، باب من لم یذکر الرفع الا عند الافتتاح: ۲۵۳۴)

हज़रत आसिम बिन कुलैब अपने वालिद से नक़ल करते हैं कि ख़लीफ़ा राशिद हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हो नमाज़ में पहली तक्बीर के वक़्त रफा यदैन करते थे और इसके बाद रफा यदैन नहीं करते थे।

इसलिये तक्बीरे तहरीमा के अलावा और मक़ामात में रफा यदैन ना करना अफ़ज़ल है, यही हुज़ूर अकरम सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आख़री अ़मल रहा है और इसी पर अक्सर बड़े–बड़े सहाबा किराम अ़मल करते रहे।

23 रुकूः

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब किराअत से फारिग़ होते तो ''अल्लाहु अकबर'' कहते हुए रूकू में चला जाते, कमर और सर को बराबर रखते, हाथों को घुटनों पर रखते, कोहनियों को जिस्म से ना मिलाते और इत्मीनान से रूकू फ़रमातेः

हज़रत सालिम अल बर्राद कहते हैं कि हम ओक़्बा बिन आ़मिर अंसारी और हज़रत अबु मसऊद अंसारी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुमा की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि हमको रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नमाज़ की कैफियत बताई।

''فقام بينا فى المسجد فكبر فلما ركع وضع يديه علىٰ ركبتيه و جعل أصابعه أسفل من ذٰلک و جافىٰ بين مرفقيه حتى استقر كل شيئى منه ثم قال سمع الله لمن حمده فقام حتى استقر كل شيئى منه ...ثم قال هكذا رأينا رسول الله صلى الله عليه وسلم يصلى''

(ابوداؤد، کتاب الصلاۃ، باب صلوۃ من لا یقیم صلبہ فی الرکوع والسجود:۸۶۳)

हज़रत अबु मसऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हो मस्जिद में हमारे सामने खड़े हो गये, तक्बीर कही, जब रूकू किया तो हाथों को घुटनों पर इस तरह रखा कि अँगुलियाँ घुटनों से नीचे और कोहनियाँ कोख से फासिला पर थीं यहाँ तक कि हर उ़जू में ठहराव पैदा हो गया फिर समिअल्लाहु लिमन हमिदह कहते हुए खड़े हो गये यहाँ तक कि हर उजू में ठहराव पैदा हो गया।...फिर फरमाया कि हमने रसूलुल्लाल सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इसी तरह नमाज़ पढ़ते हुए देखा है।

''عن أبى هريرة رضى الله تعالىٰ عنه أنه كان يصلى بهم فيكبر كلما خفض و رفع فاذا انصرف قال: انى لأشبهكم صلاة رسول اللّٰه صلى اللّٰه عليه وسلم'' (بخاری، کتاب الأذان، باب اتمام التکبیر فی الرکوع:۱۱۵)

हज़रत अबु हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हो नमाज़ अदा करते तो जब भी (किसी रुक्न की अदायगी के लिये) ऊपर या नीचे होते तो तक्बीर कहते, जब नमाज़ से फारिग़ हुए तो फरमायाः मेरी यह नमाज़ रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नमाज़ की तरह है।

(24) रुकू की कैफियतः

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब रूकू फरमाते तो अपना सर ना बिल्कुल झुकाते और ना ही उठाये रखते बल्कि दरमियान में रखते।

सहीह मुस्लिम में हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है वह फरमाती हैं किः

''عن عائشة قالت : كان رسول الله صلى الله عليه وسلم يستفتح الصلاة بالتكبير ، والقراءة بالحمد لله رب العالمين، و كان اذا ركع لم يشخص رأسه و لم يصوبه ، و لكن بين ذلک ...''

(مسلم، کتاب الصلاۃ، باب ما یجمع صفۃ الصلاۃ وما یفتح بہ وتختم بہ...:۱۱۱۰(۴۹۸)

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम नमाज़ी की इब्तिदा तक्बीर से करते और क़िराअत की इब्तिदा सूरह फातिहा से करते और जिस वक़्त आप रूकू फरमाते तो अपना सर बिल्कुल बुलन्द ना करते और ना ही पूरी तरह झुका लेते बल्कि दरमियानी राह एख़्तियार फरमाते।

25 रूकू में पीठ को सीधा रखे:

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम रूकू में पीठ को सीधा रखा करते थे।

हज़रत मसऊद अंसारी बदरी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हो फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमायाः

''لاتجزئ صلاة لايقيم فيها الرجل، يعنى صلبه، فى الركوع و السجود حسن صحيح'' (ترمذی، ابواب الصلاۃ، باب ماجاء فیمن لایقیم صلبہ فی الرکوع والسجود)

वह नमाज़ काफ़ी नहीं जिसमें नमाज़ी रूकू और सज्दा में अपनी कमर को सीधा ना रखे।

26 रूकू की तस्बीहः

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम रूकू में ''सुब्हाना रब्बियल अज़ीम'' पढ़ते थे।

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हो से रिवायत है:

عن ابن مسعود أن النبى صلى الله عليه وسلم قال : اذا ركع أحدكم فقال في ركوعه :" سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيْم " ثلاث مرات ، فقد تم ركوعه ،

و ذلک أدناه''(سنن الترمذی، ابواب الصلاۃ، باب ماجاء فی التسبیح فی الرکوع والسجود:۲۶۱)

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमायाः जब तुममें से कोई रुकू करे और रुकू में तीन मरतबा ''सुब्हाना रब्बियल अज़ीम'' पढ़ ले तो उसका रुकू पूरा हो गया और यह (तीन दफ़ा तस्बीह पढ़ना) अदना मेक़्दार है।

عن عقبة بن عامرؓ قال لما نزلت " فسبح باسم ربک العظیم" قال رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیه وسلم اجعلوها فی رکوعکم، فلما نزلت "سَبِّحِ اسْمَ رَبِّکَ الْاَعْلٰی" قال : اجعلوها فی سجودکم''(ابوداؤد، کتاب الصلاۃ، باب مایقول الرجل فی رکوعه:۸۶۹)

हज़रत उक़्बा बिन आमिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हो फ़रमाते हैं कि जब यह आयत नाज़िल हुई ''فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّکَ الْعَظِیْمِ'' तो आप सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः कि इस तस्बीह को रुकू में रखो और जब यह आयत नाज़िल हुई ''سَبِّحِ اسْمَ رَبِّکَ الْاَعْلٰی'' तो आप सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि इस तस्बीह को अपने सज्दों में पढ़ा करो।

27 तस्मी व तह़मीदः

फिर रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम रुकू से उठते हुए ''سَمِعَ اللّٰہُ لِمَنْ حَمِدَہ'' कहते और खड़े हो कर ''رَبَّنَا لَکَ الْحَمْد'' कहते।

''...ثم یقول صلی الله علیه وسلم "سَمِعَ اللّٰہ لِمَن حَمِدَہ" حین یرفع صلبه من الرکوع ثم یقول وهو قائم "رَبَّنَا لَکَ الْحَمْد" ....''

(بخاری، کتاب الاذان، باب التکبیر اذا قام من السجود:۷۸۹)

28 इमाम को रुकू में पाने वाला रकात पाने वाला हैः

जो शख़्स रुकू की ह़ालत में इमाम के साथ शरीक हो

जाए उसकी वह रेकात शुमार की जाएगी, ह़दीस शरीफ़में है:

”عن أبی بکرة رضی اللّٰہ تعالیٰ عنه أنه انتھی الی النبی صلی اللّٰہ علیه وسلم وھو راکع فرکع قبل أن یصل الی الصف فذکر ذلک للنبی صلی اللّٰہ علیه وسلم فقال: زادک اللّٰہ حرصا و لا تعد “(بخاری، کتاب اذان، باب اذا رکع دون الصّف:۱۱۴)

ह़ज़रत अबु बकरह रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हो से मनकू़ल है कि वह नबिये अकरम सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के क़रीब पहुंचे तो आप सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम रुकू की ह़ालत में थे तो ह़ज़रत अबु बकरह रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हो ने सफ़ में शामिल होने से पहले ही रुकू कर लिया, फिर नबी सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सामने उन्होंने इसको ज़िक्र किया तो आप सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह तआ़ला तुम्हारे इस शौक़ को बढ़ाए, आइन्दा ऐसा न करना (कि सफ में शामिल होने से पहले ही नमाज़ शुरू कर दो)

शारेह़ बुख़ारी अ़ल्लामा इब्ने ह़जर रहमतुल्लाह अ़लैह इस ह़दीस के तह़त लिखते हैं:

” و فی روایة یونس بن عبید عن الحسن عند الطبرانی: فقال أیکم صاحب ھذا النفس ؟ قال: خشیت ان تفو تنی الرکعة معک “(فتح الباری، کتاب الاذان، باب اذا رکع دون الصّف:۷۸۳، ج:۲،ص:۳۴۷، ط: دار السلام، الریاض، الطبعۃ الاولیٰ ۲۰۰۰ء)

तबरानी ने ह़ज़रत ह़सन से नक़ल किया है कि नमाज़ के बाद आँ हुज़ूर सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने पूछा कि किसने ऐसा कि? तो ह़ज़रत अबु बकरह रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हो ने अ़र्ज़ किया कि मैंने ऐसा किया ताकि आप के साथ मेरी यह रकात फौत न हो जाए।

” عن نافع عن ابن عمر ، قال: اذا جئت والامام راکع فوضعت یدیک علی رکبتیک قبل أن یرفع رأسه فقد أدرکت “(مصنف ابن شیبۃ، کتاب الصلاۃ، باب من قال: اذا أدرکت الامام وھو راکع....:۲۵۳۷)

ह़ज़रत नाफे ह़ज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला

अ़न्हुमा से रिवायत करते हैं कि उन्होंने फरमाया जब आप आयें और इमाम रुकू में हो तो इमाम के रुकू से उठने से पहले अपने दोनों हाथों को अपने घुटनों पर रख दिया तो तुम ने रकात को पा लिया।

29 सज्दा:

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम फिर तक्बीर कहते हुए सज्दे में चले जाते, सज्दे में जाते हुए पहले घुटने ज़मीन पर रखते फिर हाथ, फिर नाक, फिर पेशानी रखते। और सज्दे से उठते हुए पहले पेशानी, फिर नाक, फिर हाथ और फिर घुटने उठाते। और सज्दे में कोहनियों को जिस्म से अलग रखते।

''عن وائل بن حجر قال : رأيت النبى صلى الله عليه وسلم اذا سجد وضع ركبتيه قبل يديه و اذا نهض رفع يديه قبل ركبتيه'' (ترمذی، ابواب الصلاۃ، باب ماجاء فی وضع الرکبتین قبل الیدین فی السجود:۸۶۸)

हज़रत वाएल बिन हजर रज़ियल्लाहु तआला अन्हो फरमाते हैं कि मैंने नबी अकरम सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा कि आप सज्दा करते तो घुटनों को हाथों से पहले ज़मीन पर रखते और उठते वक़्त घुटनों से पहले हाथ उठाते।

30 सज्दा में चेहरा कहाँ रखे?

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम सज्दा में चेहरा दोनों हथेलियों के दरमियान रखते थे।

''عن البراء قال : سئل أين كان النبى صلى الله عليه وسلم يضع وجهه

؟ قال : كان يضعه بين كفيه أوقال : يديه يعنى في السجود ''(مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الصلاۃ، باب في اليدين أين تكونان من الرأس؟:۲۶۸۴، جلد:۲، ص:۹۸)

यानी नबी सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपना चेहरा अपनी हथेलियों या यह कहा कि अपने हाथों के दरमियान रखते थे, यानी सज्दा में।

''عن البراء أن رسول الله صلى الله عليه وسلم كان يضع وجهه بين كفيه اذا سجد ''(مسند ابویعلی، تحقیق: حسین سلیم اسد، مسند البراء بن عازب،:۱۶۶۹، ج:۳۔ دار الثقافۃ العربیۃ، بیروت، الطبعۃ الثالثۃ ۱۹۹۲ء)

हज़रत बरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब सज्दा करते तो अपना चेहरा अपनी हथेलियों के दरमियान रखते।

31 सज्दा में कोहनियों को ना बिछाये:

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम सज्दा में कोहनियों को ज़मीन पर नहीं बिछाते थे।

''عن أنس بن مالک عن النبی صلى الله عليه وسلم قال : اعتدلوا فی السجود و لا ينبسط احدكم ذراعيه انبساط الكلب ''(بخاری، کتاب الاذان، باب لا یفترش ذراعیہ فی السجود:۸۲۲)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हो नबी सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत है कि आप सल लल्लाहु अलैहि वासल्लम ने इरशाद फरमायाः सज्दा में एतिदाल करो, और तुममें से कोई अपने दोनों हाथ कुत्ते की बिछाने की तरह ना बिछाये।

32 सज्दा की तस्बीहः

सज्दा में रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अलैहि

वसल्लम ''सुब्हाना रब्बियल अअ़ला'' पढ़ते थे।

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है:

و اذا سجد فقال في سجوده : ''سُبْحَانَ رَبِّیَ الْأَعْلٰی ''ثلاث مرات فقد تم سجوده و ذلک أدناه '' (ابوداؤد، کتاب الصلاۃ، باب مایقول الرجل فی رکوعہ:۸۶۹۔سنن الترمذی، ابواب الصلاۃ، باب ماجاء في التسبيح في الرکوع والسجود:۲۶۱)

और जब तुममें से कोई सज्दा करे और सज्दा में तीन मरतबा ''सुब्हाना रब्बियल अअ़ला''पढ़ले तो असका सज्दा पूरा हो गया और यह (तीन दफ़ा तस्बीह़ पढ़ना) अदना मिक़्दार है।

33 आ़ज़ाए सज्दा:

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पेशानी, नाक, दोनों हाथ, दोनों घुटने, दोनों पॉव की अंगुलियों पर सज्दा करते थे।

''عن ابن عباس رضی اللّٰہ تعالیٰ عنهما قال : قال النبی صلی اللّٰہ علیه وسلم أمرت أن أسجد علی سبعة أعظم: علی الجبهة و أشار بیده علیٰ أنفه و الیدین و الرکبتین ، و أطراف القدمین و لا نکف الثیاب و الشعر '' (بخاری، کتاب الأذان، باب السجود علی الانف:۸۱۲)

ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा कहते हैं कि लबिये अकरम सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फरमाया मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं सात हड्डियों पर सज्दा करूँ, पेशानी पर और आपने नाक की तरफ इशारा किया, दोनों हाथों पर, दोनों धुटनों पर, पॉव की अंगुलियों पर और (हमें यह भी हुक्म दिया कि) हम नमाज़ में कपड़ों और बालों को न समेटें।

34 सज्दा में हाथ रखने की कैफियत:

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हाथों

की अंगुलियों का मिला कर ज़मीन पा रखते और हथेलियों को कंधों के बराबर इसतरह रखते थे कि अंगूठे कानों की लौ के बराबर रहते।

ह़ज़रत बरा रज़ियल्लाहु अ़न्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जब सज्दा करते तो अपने चेहरे अपने दोनों हथेलियों के दरमियान रखते थे।

(तरमज़ी، ابواب الصلاة، باب ماجاء أين يضع الرجل وجهه اذا سجد: ٢٧١)

''عن وائل بن حجر قال : رأيت النبى صلى الله عليه وسلم حين سجد و يديه قريباً من أذنيه'' (مصنف ابن شيبة، كتاب الصلاة، باب فى اليدين أين تكونان من الرأس؟: ٢٦٨٦)

ह़ज़रत वाएल बिन ह़जर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हो फ़रमाते हैं कि मैंने नबी सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को देखा जब आपने सज्दा किया तो आपके हाथ आपके कानों के क़रीब थे।

''قال سفيان: يفرج بين أصابعه في الركوع و يضم في السجود''

(مصنف ابن شيبة، كتاب الصلاة، باب فى الرجل (كيف) يضم اصابعه في السجود: ٢٦٩٣)

ह़ज़रत सुफ़ियान रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हो फ़रमाते हैं कि रुकू में अंगुलियों को खोलकर रखे और सज्दा में अंगुलियों को मिला कर रखे।

''عن أبى حميد الساعدى أن النبى صلى الله عليه وسلم كان اذا سجد أمكن أنفه و جبهته (من) الأرض، ونحّي يديه عن جنبيه، وَوَضَع كفيه حذْوَ منكبيه''

(ترمذى، ابواب الصلاة، باب ماجاء فى السجود على الجبهة والانف: ٢٧٠)

ह़ज़रत अबु हुमैद साइदी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़नहो फ़रमाते हैं कि नबिये अकरम सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम सज्दा में नाक और पेशानी को ज़मीन पर खूब टिका कर रखते और अपने हाथों को अपने पहलुओं से अलग रखते, और दोनों हथेलियाँ कंधों के बराबर रखते।

35 जलसाः

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम फिर तक्बीर कहते हुए सीधे बैठ जाते।

(इस दौरान यह दुआ़ पढ़ना मुस्तह़ब है: ''अल्लाहुम्मग़ – फ़िरली वर ह़मनी वजबुरनी वहदिनी वरज़ुक़नी'')

(ترمذی، ابواب الصلاۃ، باب مایقول بین السجدتین: ۲۸۴)

फिर तक्बीर कहते हुए दूसरा सज्दा करते।(इसतरह एक रकात मुकम्मल हो गई)

36 क्याम:

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम दोनों सज्दों से फ़ारिग़ होने के बाद बग़ैर बैठे हुए सीधा खड़े हो जाते:

''عن ابن سهل الساعدی، و فیه... ثم کبر فسجد ثم کبر فقام و لم یتورک...'' (ابوداؤد، کتاب الصلاۃ، باب من ذکر التورک فی الرابعۃ: ۹۶۶)

ह़ज़रत सहल के साहिब्ज़ादे ह़ज़रत साद साइदी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हो की रिवायत है कि आप सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने तक्बीर कहकर सज्दा किया फिर तक्बीर कहकर बग़ैर बैठे सीधे खड़े हो गए।

दूसरी रकात को भी पहली रकात की तरह़ पूरा करे लेकिन इसमें सना, अऊ़ज़ुबिल्लाह न पढ़े सिर्फ़ सूरए फ़ातिह़ और को ई सूरत पढ़कर रुकू व सज्दा करले।

37 क़अ़दा (बैठना):

फिर रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम दूसरी रकात में दोनों सज्दों के बाद तशह्हुद के लिये इसतरह अैठ जाते थे कि अपना बायॉ पैर बिछाते और दायें पॉव को खड़ा रखते थे।

''عن عائشة رضی الله عنها و فیه.... و کان یقول فی کل رکعتین

التحية و كان يفرش رجله اليسرىٰ و ينصب رجله اليمنىٰ ....''۔(مسلم،کتاب الصلاۃ، باب ما یجمع صفۃ الصلوۃ وما یفتتح وبہ وصفۃ الرکوع والاعتدال منہ.....:۱۱۱۰(۴۹۸))

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा की रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम फ़रमाते थे कि हर दो रकातों के बाद अत्तहिय्यात के लिये बैठना है और आप सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अपना बायॉ पॉव बिछाते थे और दायें पॉव को खड़ा रखते थे।

38 क़अ़दा में कैसे बैठे?

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम क़अ़दा में इस तरह बैठा करते थे कि बायॉ पॉव बिछा कर उस पर बैठते (उसकी अंगुलियॉ हत्तल इम्कान क़िब्ला रुख करते) और दायॉ पॉव खड़ा करके उसकी अंगुलियॉ भी क़िब्ला रुख रखते:

''عن وائل بن حجر قال : لأنظرن الى صلاة رسول الله صلى الله عليه وسلم كيف يصلى ؟قال : فقام رسول الله صلى الله عليه وسلم .. ...قال : ثم جلس فافترش رجله اليسرى ''(ابوداؤد،کتاب الصلاۃ، باب کیف الجلوس فی التشہد :۹۵۷۔ترمذی، ابواب الصلاۃ، باب ماجاء کیف الجلوس فی التشہد :۲۹۲۔

हज़रत वाएल बिन हजर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हो फरमाते है कि उन्होंने नबी करीम सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को नमाज़ पढ़ते हुए देखा, आप सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने सज्दा किया फिर बैठे यानी क़अ़दा किया और अपने बायें पैर को बिछा दिया।

''عباس بن سهل الساعدى قال : اجتمع أبو حميد و أبو أسيد و سهل بن سعد ومحمد بن مسلمة، فذكروا صلاة رسول الله صلى الله عليه وسلم ، فقال أبو حميد : أنا أعلمكم بصلاة رسول الله صلى الله عليه وسلم ، ان رسول الله صلى الله عليه وسلم جلس يعنى للتشهد فافترش رجله اليسرىٰ و أقبل بصدر اليمنى على قبلته

.... ''(ترمذی،ابواب الصلاۃ،باب ماجاء کیف الجلوس فی التشہد:۲۹۳)

ह़ज़रत अ़ब्बास बिन सहल साइदी फरमाते हैं: अबु हुमैद, अबु उसैद, सहल बिन साद और मुह़म्मद बिन मुस्लिमा जमा हुए तो उन लोगों ने रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नमाज़ का ज़िक्र किया, ह़ज़रत अबु हुमैद रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हो ने कहा : मैं तुममें रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नमाज़ को सबसे ज्यादा जानता हूँ। हुजूर अकरम सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम बैठे, यानी तशह्हुद के लिये तो अपने बायें पैर को बिछा लिया और दाहिने पैर की अंगुलियों की पोरों को क़िब्ला रुख रखा।

عن عائشة قالت: كان رسول اللّٰه صلى اللّٰه عليه وسلم يستفتح الصلاة بالتكبير ، والقراءة بالحمد للّٰه رب العالمين،وكان اذا ركع لم يشخص رأسه ولم يصوّبه ، ولكن بين ذلک ،وكان اذا رفع رأسه من الركوع لم يسجد حتىٰ يستوي قائماً، وكان اذا رفع رأسه من السجدة لم يسجد حتى يستوي جالساً و كان في كل ركعتين التحيَّة ،و كان يفرش رجله اليسرى و ينصب رجله اليمنى ... ''(مسلم،کتاب الصلاۃ،باب ما یجمع صفۃ الاصلاۃ وما یفتتح بہ....:۱۱۱۰-(۴۹۸))

हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा फरमाती है कि रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम तक्बीर कह कर नमाज़ शुरू फरमाते थे और केरात अ़लहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन से शुरू फरमाते यहाँ तक कि उन्होंने कहा कि हुजूर अकरम सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम (क़अ़दा में) बायें पाँव बिछाते थे और दायें पाँव को खड़ा रखते थे।

''عن عبد الله بن عبد الله أنه أخبره : أنه كان يرى عبد الله بن عمر يتربع في الصلاة اذا جلس ففعلته و أنا يو مئذ حديث السن فنهاني عبد الله بن عمر و قال : انما سنة الصلاة أن تنصب رجلک اليمنى و تثنى اليسرى فقلت : انک تفعل ذلک ؟ فقال : ان رجلي لا تحملاني ''

(صحیح البخاری،کتاب الأذان،باب سنۃ الجلوس فی التشہد،النسخۃ الہندیۃ:۸۲۷)

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह कहते हैं कि वह ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तअ़ाला अ़न्हो को देखते थे कि वह नमाज़ में चार ज़ानू (आलती पालती) बैठा करते थे तो मैंने भी ऐसा ही किया और मैं इन दिनों नौ–उम्र था तो उन्होंने मुझे मना किया और कहा कि नमाज़ की सुन्नत यह है कि तुम अपना दायॉ पॉव खड़ा करो और बायॉ पॉव मोड़ लो, मैंने कहा कि आप तो इस तरह़ करते हैं? तो उन्होंने कहा कि (मुझे उज़्र है) मेरे पैर मेरा बोझ नहीं उठा पाते।

39 तशह्हुदः

तशह्हुद के कलिमात ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हो से यह मरवी हैं:

عن عبد الله بن مسعود قال : علمنا رسول اللّٰه صلى اللّٰه عليه وسلم اذا قعدنا في الركعتين أن نقول : " اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ وَ الصَّلوَاتُ وَ الطَّيِّبَاتُ اَلسَّلَامُ عَلَيْکَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَ بَرَکَاتُه اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَ عَلى عِبَادِ اللّٰهِ الصَّالِحِيْن أَشْهَدُ أَن لَّآ اِلٰه اِلَّا اللّٰهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّداً عَبْدُه وَرَسُوْله "

(بخاری، کتاب الاذان، باب باب ما یتخیر من الدعاء...:۸۳۵۔ سنن الترمذی، ابواب الصلاۃ، باب ماجاء في التشہد:۲۸۹)

ह़ज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हो फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हमें यह सिखाया कि जब हम दो रकातों के आखिर में क़अ़दा में बैठे तो यह पढ़ें, जिसके अलफ़ाज़ यह हैं: (ऊपर लिखा हुआ है)

40 क़अ़दा में तशह्हुद की अंगुली को हरकत देनाः

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जब तशह्हुद के लिये बैठते तो दायें हाथ को दायें रान पर और बायें हाथ को बायें रान पर रखते और

अंगुली से इसतरह़ इशारा फ़रमाते थे कि ''अशहदु अल्ला इलाहा'' पर उठाते थे और ''इल लल्लाह'' पर नीचे कर लेते थें।

तशह्हुद में ''अशहदु अल्ला इलाहा'' कहते वक़्त शहादत की अंगुली उठाई जाए और ''इल लल्लाह'' पर अंगुली को नीचे कर ली जाए:

''...قال :قد أصبت رأيت رسول الله صلى الله عليه وسلم كان يشير باصبعه اذا جلس يتشهد في صلاته وكان المشركون يقولون : انما يسحرنا و انما يريد النبى صلى الله عليه وسلم التوحيد''

(بیہقی، کتاب الصلاۃ، باب ماینوی المشیر باشارتہ في التشہد :۲۷۹۲، ج:۲،ص:۱۹۰)

ह़ज़रत खेफ़ाफ़ बिन ईमा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हो बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जब तशह्हुद के लिये बैठते तो अंगुली से इशारा करते और मुश्रिकीन कहते कि यह हमारे ऊपर जादु करते हैं और आपकी इससे मुराद तौह़ीद (की तरफ़ इशारा करना) होता था ।

''عن عبد الله بن الزبيرعن أبيه قال : قال كان رسول الله صلى الله عليه وسلم اذا قعد يدعو وضع يده اليمنى على فخذه اليمنى و يده اليسرى على فخذه اليسرى وأشار باصبعيه السبابة ووضع ابهامه على اصبعه الوسطىٰ و يُلقِم كفه اليسرىٰ ركبته''(مسلم، کتاب المساجد، باب صفۃ الجلوس فی الصلوۃ...:۱۳۰۸(۵۷۹))

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुमा फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जब दुआ़ के लिये बैठते तो दायें हाथ को दायें रान पर रखते और बायें हाथ को बायें रान पर रखते और अपनी शहादत की अॅगुली से इशारा करते और अंगूठे को दरमियानी अॅगुली से मिला लेते।

ह़ज़रत अब्दुल्लाह बिन उ़मर रज़ियल्लाहु तआ़ला फ़रमाते हैं:

''ان رسول الله صلى الله عليه وسلم كان اذا قعدفى التشهد ... و

أشار بالسبابة'' (مسلم، کتاب الصلاۃ، باب صفۃ الجلوس فی الصلوۃ:۱۳۱۰(۵۸۰))

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जब तशह्हुद में बैठते थे तो.....और शहादत की अंगुली से इशारा करते।

41 तशह्हुद में शहादत की अंगुली से इशारा करना है हिलाना नहीं है :

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम शहादत की अँगुली से इशारा फरमाते थे, उसको हिलाते नहीं थे।

''عن عبد الله بن زبير رضی الله تعالیٰ عنه أن النبی صلی الله علیه وسلم کان یشیر باصبعه اذا دعا لا یحرکها'' (ابوداؤد، کتاب الصلوۃ، باب الاشارۃ فی التشہد:۹۸۹ ۔سنن نسائی، کتاب التطبیق، باب الاشارۃ بالاصبع فی التشہد...:۱۱۶۲)

''عن عبد الله أنه ذکر أن النبی صلی الله علیه وسلم کان یشیر باصبعه اذا دعا لا یحرکها'' (بیہقی، کتاب الصلاۃ، باب من روی انہ اشار بہا ولم یحرکہا:۲۷۸۶)

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हो से रिवायत है कि नबी सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जब दुआ़ (यानी तशह्हुद) पढ़ते तो अपनी अंगुली से इशारा फरमाते, उसको हिलाते नहीं थे।

42 क्याम:

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अगर तीन या चार रकात वाली नमाज़ होती तो तशह्हुद के बाद सीधा खड़े होजाते और पहली रकातों की तरह़ नमाज़ मुकम्मल फ़रमा लेते।

फ़र्ज़ नमाज़ों की तीसरी, चौथी रकातों में सूरए फ़ातिह़ा के बाद कोई सूरत या आयत न मिलाते। सुनन व नवाफ़िल में सूरए फ़ातिह़ा के बाद कोई सूरत या आयत मिलाते।

43 दरूद शरीफ़:

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने क़अ़दा अख़ीरा में दरुद शरीफ़ पढ़ने का हुक्म फरमाया है।

क़अ़दा अख़ीरा में तशह्हुद के बाद दरूद शरीफ़ पढ़ा जाता है:

عن ابن مسعود عن رسول اللّٰه صلى اللّٰه عليه وسلم أنه قال : اذا تشهد أحدكم فى الصلاة فليقل :" اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلى مُحَمَّدٍ وَّ عَلى آلِ مُحَمَّد وَ بَارِكْ عَلى مُحَمَّد وعَلى آلِ مُحَمّد ، وَارْحَم مُحَمَّداً و آل مُحَمّد كَمَا صَلَّيْت وَ بَارَكْت وَ تَرَ حَّمْت عَلى اِبْراهِيْم اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْد" (مسلم، کتاب الصلوۃ، باب الصلاۃ علی النبی صلی اللہ علیہ وسلم بعد التشہد: ۹۰۷(۴۰۵) (مسلم میں روایت دوسری طرح ہے)۔المستدرک علی الصحیحین، کتاب الطہارۃ، حدیث عبدالرحمٰن بن مہدی)

आ़म तौर पर नमाज़ में दरूदे इबराहीमी पढ़ा जाता है जिसके अलफ़ज़ सहीह़ बुख़ारी में मरवी हैं।

(دیکھئے صحیح البخاری، کتاب أحادیث الأنبیاء، باب یزفون، النسلان في المشی: ۳۳۶۹)

44 दुआ़ए मासूरा:

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का इरशाद गरामी है:

"ثم ليتخير من الدعاء أعجبه اليه فيدعو" (بخاری، کتاب الاذان، باب ما یتخیر من الدعاء بعد التشہد: ۸۳۵)

फिर जो इसको ज़्यादा पसन्द हो वह दुआ मॉगे।

और मुस्लिम शरीफ में है:

"ثم يتخير من المسئلة ماشاء" (مسلم، کتاب الصلاۃ، باب التشہد فی الصلاۃ: ۸۹۷(۴۰۲)

फिर जो दुआ चाहे मॉगे।

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत अबु बकर

रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हो को यह दुआ़ सिखलाई थीः
बुख़ारी की रिवायत में हैः

''عن أبی بکر الصدیق رضی الله تعالیٰ عنه أنه قال لرسول الله صلی الله علیه وسلم علّمنی دعاء أدعو به في صلاتی قال : قل "اَللّٰهُمَّ اِنّی ظَلَمْتُ نَفْسِیْ ظُلْماً کَثِیْراً وَّ لَا یَغْفِرُ الذُّنُوْب اِلَّا أَنْت فَاغْفِرْلِی مَغْفِرَة مِنْ عِنْدِکَ وَارْحَمْنِی اِنَّکَ أَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِیْم'' (صحیح البخاری، کتاب الاذان، باب الدعاء قبل السلام: ۸۳۴)

हज़रत अबु बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हो ने रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से अ़र्ज़ किया कि मुझे ऐसी दुआ सिखा दें जो मैं नमाज़ में माँगूं तो आपने फरमाया कि कहोः ऐ अल्लाहः बेशक मैंने अपने नफ़्स यानी अपनी जान पर बहुत ज़्यादा ज़ुल्म किया और तेरे सिवा (कोई भी) गुनाहों को नहीं बख़्श सकता, बस मुझको बख़्श दे अपने बख़्शिश से और मुझ पर रहम फरमा बेशक तू ही बख़्शने वाला, बे हद रहम वाला ।

45 सलाम फेरने का तरीक़ाः

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम
''اَلسَّلَامُ عَلَیْکُم وَرَحْمَةُ اللّٰه ، اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰه '' कहते हुए दायें बायें सलाम फेरते थे।

दुआये मासूरह से फारिग़ होने के बाद ''अस्सलामु अ़लैकुम वरह़ मतुल्लाह'' कह कर दायें बायें सलाम फेर कर नमाज़ ख़त्म करनी चाहिए। हदीस में हैः

''عن عامر بن سعد عن أبیه قال کنت أری رسول الله صلی الله علیه وسلم یسلم عن یمینه و عن یساره حتی أری بیاض خده'' (مسلم، کتاب المساجد، باب السلام للتحلیل من الصلوٰة عند فراغها: ۱۳۱۵ (۵۸۲))

हज़रत सअ़द रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हो फरमाते हैं कि मैं रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को देखता था कि आप अपने दायें और बायें सलाम फेरते थे, यहाँ तक कि मैं आपके रूख़्सार मुबारक की सुफ़ैदी (यानी हुस्न) देख लेता था।

''عن عبد الله عن النبی صلی الله علیه وسلم أنه کان یسلم عن یمینه و

عن يساره :"السلام عليكم ورحمة الله ، السلام عليكم ورحمة الله" (سنن الترمذی، ابواب الصلاۃ باب ماجاء فی التسلیم فی الصلاۃ:۲۹۵)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हो फरमाते हैं कि नबी अकरम सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम अस्सलामु अलैकुम वरह़ मतुल्लाह कहते हुए दायें बायें सलाम फेरते थे।

46 इमाम मुक़्तदियों की तरफ मुतवज्जेह होकर बैठेः

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम नमाज़ से फारिग़ होकर मुक़्तदियों की तरफ मुतवज्जेह होकर बैठे।

"عن سمرة بن جندب قال كان النبی صلی الله علیه وسلم اذا صلی صلوة اقبل علینا بوجهه" (بخاری، کتاب الاذان، یستقبل الامام الناس اذا سلم:۸۴۵)

ह़ज़रत समुरा बिन जुन्दुब रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हो फरमाते हैं कि नबी सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जब नमाज़ पढ़ते तो अपने चेहरे से हमारी तरफ़ मुतवज्जेह होते।

47 फ़र्ज़ नमाज़ के बाद दुआ़ करनाः

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद दुआ़ माँगते थे अगरचे मुख्तसर ही हो।

फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद दुआ़ माँगना सुन्नत मुस्तमिरा दाइमा नहीं है इसलिये इसको लाज़िम समझ कर करना और न करने वालों को बुरा कहना दुरुस्त नहीं है अलबत्ता फ़र्ज़ नमाज़ के बाद दुआ़ माँगना रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के अक़वाल व अफ़आ़ल से साबित है तिर्मिज़ी शरीफ़ में है किः

عن ابی امامة قال : ''قیل لرسول الله صلی الله علیه وسلم:أی الدعاء أسمع ؟ قال: جوف اللیل الآخر و دُبُر الصلوات المکتوبات''(ترمذی،ابواب الدعوات،باب:حدیث: ینزل ربنا کل لیلة الی السماء الدنیا....:۳۴۹۹)

अ़र्ज़ किया गया या रसूलल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम किस वक़्त की दुआ ज़्यादा क़ुबूल होती है? आप सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम इरशाद फ़रमायाः रात के अखीर हिससे में और फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद।

''عن کعب بن عجرة عن رسول الله صلی الله علیه وسلم قال: معقبات لا یخیب قائلهن أو فاعلهن ثلاثا وثلاثون تسبیحة ،و ثلاثا و ثلاثین تحمیدة،و اربعا و ثلاثین تکبیرة، فی دبر کل صلاة''

(مسلم،کتاب المساجد،باب استحباب الذکر بعد الصلاة:۱۳۵۰(۵۹۶))

ह़ज़रत कअ़ब रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः हर नमाज़ के बाद यह तस्बीह़ात पढ़ने वाला कभी नाकाम नहीं होगा। सुब्ह़ा– नल्लाह 33 बार, अलह़म्दु लिल्लाह 33 बार, अल्लाहु अकबर 34 बार।

अल मूजमुल कबीर में इमाम तबरानी रहमतुल्लाह अ़लैह ने ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हो से एक रिवायत ज़िक्र की है कि मुह़म्मद बिन यह़या अस्लमी फ़रमाते हैं:

''عن الفضل بن عباس ، قال : قال رسول الله صلی الله علیه وسلم : الصلاة مثنی مثنی ، تشهد فی کل رکعتین ، و تخشع ، و تضرع، و تمسکن، و تقنع یدیک یقول : تر فعهما الی ربک مستقبلاً ببطونها وجهک وتقول : یا رب یارب ، و من لم یفعل ذلک فهو کذا و کذا''(ترمذی:باب ماجاء فی التخشع فی الصلوة،۳۸۵)

ह़ज़रत फ़ज़ल बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हो से रिवायत है कि आप सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फरमाया की नमाज़ दो दो रकात है, हर दो रकात में तशह्हुद पढ़ो, ख़ुशूअ़,

आ़जिज़ी और मस्कनत एख़्तियार करो, और दोनों हाथ अपने रब की तरफ इस तरह उठाओ कि हथेली अपने चेहरा की तरफ रखो और कहो या रब या रब, ऐ मेरे रब ऐ मेरे रब। और जिसने ऐसा नहीं किया वह ऐसा वैसा है।

عن معاذ بن جبل أن رسول الله صلى الله عليه وسلم أخذ بيده ، و قال : ''يا معا ذ ، والله اني لأحبک ، و الله اني لأحبک ، فقال : أوصيک يا معاذ لا تدعن في دبر كل صلاة تقول : اللهم أعنى على ذكرک و شكرک وحسن عبادتک ، و أوصى بذلک معاذ الصنابحى و أو صى به الصنابحى أبا عبد الرحمن''۔ (ابوداؤد، کتاب الوتر، باب فی الاستغفار:۱۵۲۲۔)

हज़रत मुआ़ज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हो से मरवी है कि नबी अकरम सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उनसे फरमायाः ऐ मुआ़ज़, मैं तुम्हें वसिय्यत करता हूँ कि इन कलिमात को हर नमाज़ के बाद पढ़ना मत छोड़नाः ''अल्लाहुम्मा अइन्नी अला ज़िकरिका व शुकरिका व हुस्ने इबादतिका'' और हज़रत मुआ़ज़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हो ने यही वसिय्यत (अपने शागिर्द) सनाबिही को की, और सनाबिही ने अ़ब्दुर्रहमान को की।

''عن الأسود العامرى عن أبيه رضى الله عنه قال : صليت مع رسول الله صلى الله عليه وسلم الفجر سلّم، انحرف ورفع يديه و دعا''

(مصنف ابن ابی شیبۃ، ۱، ۲۹۶:۳۰۹۳)

हज़रत असवद आ़मिरी अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि मैंने हुज़ूर नबी अकरम सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ नमाज़े फज्र अदा की, आप सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने सलाम फेरा तो एक तरफ फिर कर अपने दोनों मुबारक हाथ उठाये और दुआ़ फरमाई।

48 फ़र्ज़ नमाजों के बाद कितनी देर दुआ़ माँगे:

हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद बैठ कर इज्तिमाई लम्बी–लम्बी दुआ़ करना सुन्नत नहीं है, यह अम्र मुनकर और ममनू है ।

मुस्लिम में ह़ज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा से रिवायत है कि: :

"كا ن رسول اللـه صلى الله عليه وسلم اذا سلم،لم يقعد الا مقدار ما يقول: اَللّٰهُمَّ اَنْتَ السَّلَام وَ مِنْکَ السَّلَام تَبَارَکْت ذَا الْجَلَالِ وَالْاِکْرَام، و في رواية:يَا ذَا الْجَلَال وَ الْاِکْرَام" (مسلم،کتاب المساجد،باب استحباب الذکر بعد الصلوۃ وبیان صفتہ:۱۳۳۵(۵۹۲))

फ़ज्र और अ़स्र की फ़र्ज़ नमाज़ के बाद इत्मीनान से बैठ कर तस्बीह वगैरह पढ़ कर दुआ़ करे और बकिया तीन नमाज़ों में मुख्तसर दुआ़ करना सुन्नत है, बुखारी में रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का इरशाद नक़ल है कि रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हर फ़र्ज नमाज़ के बाद यह पढ़ा करते थे:

"..... لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَه لَا شَرِيْکَ لَهُ لَهُ الْمُلْکُ وَ لَهُ الْحَمْد وَهُوَ عَلٰى شَيْئٍ قَدِيْر، اَللّٰهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَا اَعْطَيْت ، وَ لَا مُعْطِى لِمَا مَنَعْت وَ لَا يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْکَ الْجِدّ" (بخاری،کتاب الاذان،باب الذکر بعد الصلوۃ:۸۴۴)

"ला इलाहा इल लल्लाहु वह–दहू लाशरीका–लहू लहुल मुल्कु व लहुल ह़म्दु वहुवा अ़ला शैइन क़दीर, अल्लाहुम्मा ला–मानिआ़ लिमा आ़तैता, वला मुअ़ती लिमा मनअ़ता वला यनफ़उ ज़ल–जद–दि मिनकल जिद–दि"

49 सुन्नत नमाज़ के बाद दुआ़ करना :

सुन्नत नमाज़ के बाद रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इज्तिमाई दुआ़ नहीं फ़रमाई है, अलबत्ता अलग–अलग अपनी–अपनी दुआ़ हर शख्स कर सकता है।

50 इमाम का ज़ोर से दुआ़

करना:

नमाज़ के बाद ज़रा ऊँची आवाज़ से जिससे और नमाज़ियों को तकलीफ ना हो दुआ करना भी रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से साबित है, हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हो फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जब अपनी नमाज़ से सलाम फेरते तो बुलन्द आवाज़ से कहते:

''ला इलाहा इल लल्लाहु वह–दहू लाशरीका–लहू लहुल मुल्कु व लहुल ह़म्दु वहुवा अ़ला शैइन क़दीर, ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह ला इलाहा इल लल्लाह वला नअ़बुदू इल्ला इय्याहु लहुन्निअ़मतु व लहुल फ़ज़्लु व लहुस सनाउल ह़सन, ला इलाहा इल लल्लाहु मुख्लिसीना लहुद्दीना वलौ करिहल काफिरूना''

لآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَ حْدَہ لَا شَرِیْکَ لَہُ لَہُ الْمُلْکُ وَ لَہُ الْحَمْد وَھُوَ عَلیٰ شَیْئِی قَدِیْر ، لَا حَوْلَ وَ لَا قُوَّۃَ اِلَّا بِا للّٰہِ لَآ الٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَ لَا نَعْبُدُ اِلَّا اِیَّاہُ لَہُ النِّعْمَۃ وَ لَہُ الْفَضْل وَ لَہُ الثَّنَاء الْحَسَن ، لَآ اِلٰہ اِلَّااللّٰہُ مُخْلِصِیْن لَہ الدِّیْن وَ لَوْ کَرِہَ الْکَا فِرُوْن ''(مسندالامام الشافعیؒ ،تحقیق :الدکتور ماہر یاسین الفحل۔کتاب الصلاۃ،باب فی الذکر بعد الصلاۃ،:۲۶۷،ج:۱ص:۲۸۹۔غراس للنشر والتوزیع ،کویت ، الطبعۃ الاولیٰ ۲۰۰۴۔مسلم: کتاب المساجد،باب استحباب الذکر بعد الصلاۃ وبیان صفتہ:۱۳۴۳(۵۹۴)۔ابوداؤد،کتاب الوتر،باب مایقول الرجل اذا سلم:۱۵۰۶)

51 आहिस्ता दुआ करना:

इमाम और मुक़्तदियों का साथ–साथ बुलन्द आवाज़ से दुआ करने की आ़दत बना लेना सुन्नत के खेलाफ़ है, दुआ में अफ़ज़ल और अदब यह है कि आहिस्ता की जाए, अल्लाह तआ़ला का इरशाद है:

''اُدْعُوْا رَبَّکُمْ تَضَرُّعاً وَّ خُفْیَۃ اِنَّہ لَا یُحِبُّ الْمُعْتَدِیْن''(قرآن،الاعراف:۵۵)

तुम अपने रब से गिड़गिड़ाकर और चुपके–चुपके दुआ किया करो, बेशक अल्लाह तआ़ला उन लोगों को नापसन्द करते हैं जो ह़द से बढ़ने वाले हैं।और दूसरी जगह फ़रमाते हैं:

''وَاذْکُرْ رَبَّکَ فِیْ نَفْسِکَ تَضَرّعاً وَّ خِیْفَۃ وَّ دُوْ نَ الْجَھْرِ مِنَ الْقَوْلِ

بِالْغُدُوِّ وَ الْاٰصَالِ وَ لَا تَكُنْ مِنَ الْغَافِلِيْنَ ''(القرآن،الاعراف:۲۰۵)

अपने रब को अपने जी में याद करो आ़जिज़ी और डर के साथ और ज़ोर से नहीं बल्कि धीमी आवाज़ से सुबह और शाम और ग़ाफिलों में से मत बनो।

''عن أبی موسی الأشعری رضی الله تعالیٰ عنه قال : کنا مع النبی صلی الله علیه وسلم فی سفر ، فکنا اذا أشرفنا علی واد هللنا و کبرنا و ارتفعت أصواتنا،فقال النبی صلی الله علیه وسلم : یا أیها الناس ، أربعوا علی أنفسکم فانکم لا تدعون أصم و لا غائباً ، انه معکم انه سمیع قریب ''(بخاری،کتاب الجہاد،باب ما یکرہ من رفع الصوت فی التکبیر :۲۹۹۲)

ह़ज़रत अबु मूसा अशअ़री रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हो फ़रमाते हैं कि हम लोग नबी सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ एक सफर में थे, जब हम किसी वादी में पहुँचते तो तहलील व तक्बीर कहते और हमारी आवाज़ ऊँची होजाती तो नबी सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि लोगों, अपने ऊपर आसानी करो इसलिये कि तुम बहरे और ग़ायेब को नहीं पुकार रहे हो, बेशक वह तुम्हारे साथ है, बिला शुब्हा वह सुनने वाला है क़रीब है।

52 दुआ़ के बाद हाथ चेहरे पर फेरना:

रासूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम दुआ़ फ़रमाते तो दोनों हाथों को चेहरे अनवर पर फेर लेते थे।

''عن عمر بن الخطاب رضی الله تعالیٰ عنه قال :کان رسول الله صلی الله علیه وسلم اذا رفع یدیه فی الدعاء لم یحطها حتی یمسح بهما وجهه ''(ترمذی،ابواب الدعوات،باب ماجاء فی رفع الایدی عند الدعا:۳۳۸۶)

53 दुआ़ की फ़ज़ीलत:

इनसान के लिये ''दुआ़'' बड़ी अहमियत की ह़ामिल है,

यह ऐसी चीज़ है कि जब इनसान हर तरफ़ से बे सहारा हो जाता है तो उसी ज़ाते वाहि़द रहमान व रही़म की तरफ़ हाथ उठता है। खासकर अहले ईमान के लिये दुआ़ एक ऐसा हथियार है जो टूटे हुए बेसहारा दिलों का सहारा है और कमज़ोर व नातवानों के लिये कु़व्वत और तवानाई का सर चश्मा है, चुनानचे रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने दुआ़ माँगने का तरीक़ा भी सिखलाया है, इरशाद है:

”عن انس رضی اللہ عنه أن النبی صلی اللّٰه علیه وسلم قال : مَا مِنْ عَبْدٍ مُؤْمِنٍ يُبْسُطُ كَفَّيْه فِي دُبُرِ كُلِّ صَلاةٍ ، ثُمَّ يَقُوْل :" أَللّٰهُمَّ اِلٰهِی وَ اِله اِبْرَاهِيْم وَ اِسْحَاق وَ يَعْقُوْب ، وَ اِلٰهُ جَبْرِيْل وَمِيْكَائِيْل وَ اِسْرَافِيْل أَسْأَلُكَ : أَنْ تَسْتَجِيْبَ دَعْوَتِيْ فَانِّي مُضْطَرٌّ وَ أَنْ تَعْصِمَنِيْ فِيْ دِيْنِيْ فَاِنِّيْ مُبْتَلي ، وَ تَنَالَنِيْ بِرَحْمَتِكَ فَاِنِّيْ مُذْنب ، وَ تَنْفِي عَنِّي الْفَقْر فَاِنِّي مِسْكِيْن " اِلَّا كَانَ حَقّاً عَلَى اللّٰه أَن لَّا يرد يَدَيْه خَائِبَتَيْن “ (ابن السنی والدیلمی وابن النجار عن انس، کنز العمال، کتاب الأذکار، أدعیة الصباح والمساء:٦-٣٤٧-واللفظ له)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फरमाया जो बन्दा नमाज़ के बाद दोनों हाथ फैलाता है और कहता है कि ऐ अल्लाह, ऐ मेरे माबूद, ऐ इबराहीम व इस्हा़क़ और याकू़ब के माबूद और जिबरईल, मीकाईल और इसराफ़ील के माबूद मैं आपसे सवाल करता हूँ कि मेरी दुआ़ क़बूल फ़रमा लीजिये कि मैं मजबूर व बेबस हूँ और यह कि मेरे दीन के बारे में मेरी हि़फ़ाजत फरमाइये कि मैं आज़माईश में हूँ और मुझे अपनी रह़मत से सरफ़राज़ फरमाइये कि मैं गुनहगार हूँ और मुझसे मोहताजी को दूर फरमा दीजिये कि मैं मिस्कीन हूँ, तो अल्लाह तआ़ला के जिम्मे (उनके वादा के मुताबिक़) ज़रूरी है कि उसके हाथों को नामुराद न लौटायें।

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हों से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया:

”ان ربكم حیٌّ كريمٌ يستحيي من عبده أن يرفع اليه يديه فيردهما

صفراً'' (ابوداؤد، کتاب الوتر، باب الدعا:۱۴۸۸۔ترمذی، ابواب الدعوات، باب ان اللہ حیٌ کریمٌ....:۳۵۵۶)

तुम्हारा रब ह़या वाला और करीम है, अपने बन्दे से ह़या करता है कि वह अपने हाथों को उसके सामने उठाये और वह उनको खाली वापस लौटा दे।

मर्द और औ़रत की नमाज़ का फ़र्क़ ह़दीस की रौशनी में

1 तक्बीर तह़रीमा के वक़्त हाथ उठाने में फ़र्क़:

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने तक्बीरे तह़रीमा के वक़्त औ़रतों को कंधों के बराबर हाथ उठाने का हुक्म फ़रमाया।

''عن وائل بن حجر قال:جئت النبی صلی اللہ علیہ وسلم... فقال لی رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم:یا وائل بن حجر اذا صلیت فاجعل یدیک حذاء اذنیک والمرأة تجعل یدیها حِذَاء ثدییها '' (مجمع الزوائد، کتاب الصلاۃ، باب رفع الیدین:۲۵۹۴۔ دارالفکر، بیروت، ۲۰۱۰ء۔رواہ الطبرانی فی حدیث طویل فی مناقب وائل من طریق میمونۃ بنت حجر عن عمتہا اُم یحیٰ بنت عبدالجبار، ولم أعرفہما وبقیۃ رجالہ ثقات)

ह़ज़रत वाएल बिन ह़जर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हो बयान फरमाते हैं कि मैं ह़ुज़ूर अकरम सल लल्लाह अ़लैहि वसल्लम की खिदमत में ह़ाज़िर हुआ ..... ऑ ह़ज़रत सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मुझसे इरशाद फ़रमायाः ऐ वाएल, जब तुम नमाज़ पढ़ो तो अपने दोनों हाथ कानों तक उठाओ और औ़रत अपने दोनों हाथ अपनी छाती के बराबर उठाये।

''حدثنا هشیم ، قال : أخبرنا شیخ لنا ، قال : سمعت عطاء ، سئل عن المرأة کی ترفع یدیها فی الصلاة ؟ قال : حذو ثدییها'' (مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الصلاۃ، باب فی المرءۃ اذا افتتحت الصلاۃ الی این ترفع یدیہا؟:۲۴۸۹)

ह़ज़रत अ़ता बिन रबाह से सवाल किया गया कि औरत

नमाज़ में हाथ कहॉ तक उठाये? फरमायाः अपने सीने तक।

''عن حماد أنه كان يقول في المر أة اذا استفتحت الصلاة ، ترفع يديها الى ثدييها'' (مصنف ابن شیبۃ، باب فی المرأۃ اذا افتتحت الی این ترفع یدیہا؟:۲۴۹۱)

ह़ज़रत ह़म्माद औरत की नमाज़ के बारे में कहते थे कि औ़रत जब नमाज़ शुरू करे तो अपने दोनों हाथों को अपने सीने तक उठाये।

2 मर्द व औ़रत के हाथ बॉधने में फ़र्क:

औ़रत क़याम के वक़्त अपने हाथ सीना पर रखेगी, इस बात पर सबका इजमाअ़ है।

3 मर्द व औ़रत के रुकू करने में फ़र्क़:

औ़रत इस तरह सिमट कर रूकू करेगी कि अपने हाथों को अपने पेट की तरफ मिलाये, जितना सिमट सकती हो सिमट जाये।

''عن عطاء قال تجتمع المر أة اذا ركعت تر فع يديها الى بطنها و تجتمع ما استطاعت'' (مصنف عبدالرزاق، کتاب الصلاۃ، باب تکبیر المرأۃ بیدیہا....ج:۳،ص:۴۰۸:۵۲۱۴)

हज़रत अ़ता फरमाते हैं कि औ़रत सिमट कर रूकू करेगी अपने हाथों को अपने पेट की तरफ मिलायेगी, जितना सिमट सकती हो सिमट जायेगी।

4 मर्द व औरत के सज्दा में फर्क़:

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने औरतों को हुक्म दिया कि जब तुम सज्दा करो तो अपने जिस्म का कुछ हिस्सा ज़मीन से मिला लिया करो क्योंकि औरत मर्द की तरह

नहीं है।

''عن يزيد بن أبى حبيب أن رسول الله صلى الله عليه وسلم مر على امرأتين تصليان،فقال : اذا سجد تما فضما بعض اللحم الى الارض، فان المر أة ليست في ذلک کالرجل'' (بیہقی، کتاب الصلاۃ، ج:۲،ص:۲۲۳، باب مایستحب للمرأۃ من ترک التجافی فی الرکوع والسجود:۳۲۰۱)

ह़ज़रत यज़ीद बिन ह़बीब से मरवी है कि ऑ ह़ज़रत सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम दो औ़रतों के पास से गुज़रे जो नमाज़ पढ़ पही थीं, आपने फरमायाः जब तुम सज्दा करो तो अपने जिस्म का कुछ ज़मीन से मिला लिया करो क्योंकि औ़रत (का हुक्म सज्दा की ह़ालत में) मर्द की तरह़ नहीं है।

''عن عبد الله بن عمر رضى الله تعالىٰ عنه قال : قال رسول الله صلى الله عليه وسلم اذا جلست المر أة فى الصلاة وضعت فخذها على فخذها الاخرى فاذا سجدت ألصقت بطنها فى فخذها كأسترما يكون لها فان الله ينظر اليها و يقول يا ملائكتى اشهد كم انى قد غفرت لها ''(بیہقی، کتاب الصلاۃ، ج:۲۔باب ما یستحب للمرأۃ من ترک التجافی فی الرکوع والسجود:۳۱۹۹)

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फरमायाः जब औरत नमाज़ में बैठे तो अपनी एक रान दूसरी रान पर रखे और जब सज्दा करे तो अपना पेट अपनी रानों के साथ मिला ले जो उसके लिये ज़्यादा पर्दे की ह़ालत है, अल्लाह तआ़ला उसकी तरफ़ देखते हैं और फ़रमाते हैंः ऐ मेरे मलाइका, मैं तुम्हें गवाह बनाता हूँ कि मैने इस औरत को बख्श दिया।

''عن أبى سعيد الخدرى رضى الله تعالىٰ عنه صاحب رسول الله صلى الله عليه وسلم أنه قال :.... كان يأمر الرجال أن يتجافوا فى سجودهم و يأمر النسا أن يتخفضن'' (بیہقی، کتاب الصلاۃ، ج:۲۔باب مایستحب للمرأۃ من ترک التجافی...:۳۱۹۸)

सह़ाबिये रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ह़ज़रत अबु सई़द ख़ुदरी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हो फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मर्दों को हुक्म फरमाते थे कि सज्दे में (अपनी रानों को पेट से) जुदा रखें और

औरतों को हुक्म फरमाते थे कि खूब सिमट कर (यानी रानों को पेट से मिलाकर) सज्दा करें।

''عن عطاء .....فاذا سجدت فلتضم يديها اليها و تضم بطنها و صدرها الى فخذها و تجتمع ما استطاعت'' (مصنف عبدالرزاق، کتاب الصلاۃ، باب تکبیر المرأۃ یدیہا...:۵۲۱۴)

हज़रत अता से रिवायत है कि औरत जब सज्दा करे तो अपने हाथ अपनी तरफ़ समेटे रहे और अपने पेट और सीना को अपनी रान से मिला ले और जहाँ तक हो सके सिमट जाये।

''عن الحارث عن علی ، قال : "اذا سجدت المرأة فلتحتفر و لتضم فخذيها'' (مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الصلاۃ، باب المرأۃ کیف تکون فی سجودہا؟:۲۷۹۷)

हज़रत हारिस फरमाते हैं कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हो ने फ़रमाया कि जब औरत सज्दा करे तो खूब सिमट कर करे और अपनी दोनों रानों को मिलाये रखे।

5 मर्द व औरत के बैठने में फ़र्क़:

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हुक्म दिया है कि औरत जब सज्दा करे तो अपना पेट अपनी रानों के साथ मिला ले जो उसके लिये ज़्यादा पर्दा की हालत है।

''عن عبد الله بن عمر رضی الله تعالیٰ عنه قال : قال رسول الله صلی الله علیه وسلم ... فاذا سجدت ألصقت بطنها فی فخذها کاسترما یکون لها فان الله ینظر الیها و یقول یا ملائکتی أشهد کم أ نی قد غفرت لها'' (بیہقی، کتاب الصلاۃ، ج:۲،ص:۲۲۳۔ باب مایستحب للمرأۃ من ترک التجافی فی الرکوع والسجود:۳۱۹۹)

.... और जब सज्दा करे तो अपना पेट अपनी रानों के साथ मिला ले जो उसके लिये ज़्यादा पर्दा की हालत है, अल्लाह तआला उसकी तरफ़ देखते हैं और फरमाते हैं: ऐ मेरे मलाइका मैं तुम्हें गवाह बनाता हूँ कि मैंने उस औरत को बख्श दिया।

''عـن ابـن عبـاس رضـى الـلـه عـنهـما أنه سئل عن صلاة المرأة فقال :

تجتمع و تحتفز'' (مصنف ابن شیبۃ، کتاب الصلاۃ، باب المرأۃ ایف تکون فی سجودہا:۲۷۹۸)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से औरत की नमाज़ के मुताल्लिक़ पूछा गया तो आपने फरमायाः खूब सिमअ कर नमाज़ पढ़े।

6 औरत कहॉ नमाज़ पढ़े:

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मर्ज़ी यह है कि औरत अपने घर में नमाज़ पढ़े।

''عـن أم حميد امرأة أبى حميد الساعدى أنها جاء ت الى النبى صلى الله عليه وسلم فقالت : يا رسول الله صلى الله، انى أحِب الصلاة معک، قال : قد علمت أ نک تحبين الصلاة معى و صلا تک فى بيتک خير من صلا تک فى حجرتک و صلا تک فى حجرتک خير من صلا تک فى دارک ، و صلا تک فى دارک خير من صلا تک فى مسجد قومک و صلا تک فى مسجد قومک حير من صلا تک فى مسجدى . قال : فأمرت فبنى لها مسجد فى اقصى شيئى من بيتها و أظلمه و كانت تصلى فيه حتى لقيت الله عز و جل''

(مسند احمد، تحقیق ارنؤوط، حدیث ام حمید، :۲۷۰۹۰۔مؤسسۃ الرسالۃ، الطبعۃ الاولیٰ ۲۰۰۱۔مسند حبان، النوع الثانی الفاظ الوعد التی مرادہا الاوام .....۔ذکر بیان بأن صلاۃ المرأۃ کلما کانت أستر کان أعظم لأ جرہا:۷۵۔ج:۱،ص:۱۶۹ تحقیق:محمد علی سونمز، ،الص آی دمیر وزارۃ الأوقاف والشؤون الاسلامیۃ دولۃ قطر۔الطبعۃ الأولیٰ ۲۰۱۲۔الترغیب والترہیب للمنذری، ج:۱ص:۲۲۵۔باب ترغیب النساء فی الصلاۃ فی بیوتہن ولزومہا وترہیبہن من الخروج منہا)

हज़रत अबु हुमैद अस्साइदी रज़ियल्लाहु तआला अन्हो की बीवी उम्मे हुमैद रज़ियल्लाहु अन्हा नबिये अकरम सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाज़िर हुई और अर्ज़ कियाः या रसूलल्लाह, मैं आप सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ नमाज़ पढ़ना पसन्द करती हूँ। आप सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जानता हूँ कि तुम मेरे साथ नमाज़ पढ़ना पसन्द करती हो (लेकिन) तेरा अपने घर में नमाज़ पढ़ना तेरे हुजरे में नमाज़ पढ़ने से बेहतर है, तेरा हुजरे में नमाज़ पढ़ना तेरे मकान में

नमाज़ पढ़ने से बेहतर है, तेरा मकान में नमाज़ पढ़ना तेरी क़ौम की मस्जिद में नमाज़ पढ़ने से बेहतर है और क़ौम की मस्जिद में नमाज़ पढ़ना मेरी मस्जिद में नमाज़ पढ़ने से बेहतर है। ह़ज़रत उममे हुमैद रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने (आप सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की मंशा व मर्ज़ी समझ कर) अपने घर वालों को हुक्म दिया तो उनके लिये घर के एक कोने और तारीक तरीन गोशे में नमाज़ की जगह बना दी गई, चुनानचे आप रज़ियल्लाहु तअ़ाला अ़न्हा अपनी वफ़ात तक उसी जगह नमाज़ पढ़ती रहीं।

''عن عائشة رضى الله عنها قالت: لو أدرک النبى صلى الله عليه وسلم ما أحدث النساء لَمَنَعَهُنَّ المسجد كما مُنِعَتْ نساء بنى اسرائيل ، قلت لِعَمَرةَ:أومُنِعْن ؟ قالت : نعم ''(مسند احمد:۲۵۱۰۹(۲۴۶۰۲)۔ بخاری، کتاب الاذان، باب انتظار الناس قیام الامام العالم:۸۶۹، واللفظ لہ۔ مسلم، کتاب الصلاۃ، باب خروج النساء الی المساجد اذا لم یترتب فتنۃ...:۴۴۵۔ ابوداؤد، کتاب الصلاۃ، باب التشدید فی ذلک:۵۶۹)

उम्मुल मूमिनीन ह़ज़रत अ़ायशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तअ़ाला अ़न्हा फरमाती हैं: अगर रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उन्हें पा लेते जो आज औ़रतों में नई–नई बातें पैदा हो गईं हैं तो उनको मस्जिद में आने से रोक देते जिस तरह़ बनी इसराईल की औ़रतों को रोक दिया गया था, मैंने पूछा कि क्या बनी इसराईल की औ़रतों को रोक दिया गया था? आपने फरमायाः हाँ ।

''عن عبد الله عن النبى صلى الله عليه وسلم قال : صلاة المرأة فى بيتها أفضل من صلاتها فى حجرتها ، وصلاتها فى مخدعها أفضل من صلاتها فى بيتها''(ابوداؤد، کتاب الصلاۃ، باب التشدید فی ذلک:۵۷۰)

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु तअ़ाला अ़न्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फरमायाः औरत का कमरा में नमाज पढ़ना घर में नमाज़ पढ़ने से बेहतर है और ह़ुजरा में नमाज़ पढ़ना कमरा में नमाज़ पढ़ने से बेहतर है। (यानी जितना पर्दे में नमाज़ पढ़ेगी उसके लिये

उतना ही बेहतर है)

''عن عبد الله بن عمر عن النبی صلی الله علیه وسلم قال : صلاة المرأة وحدها أفضل علی صلاتها فی الجمع بخمس و عشرین درجة ''(جامع المسانید للسیوطی، ج۱۳،ص۴۹۷:۱۳۶۲۸)

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा रिवायत करते हैं कि नबी करीम सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अ़ौरत का अकेले नमाज़ पढ़ना उसकी जमाअ़त के साथ नमाज़ पढ़ने से पचीस गुना फ़ज़ीलत रखता है।

तरावीह़

रसूले अकरम सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने रमज़ान की एक रात में चार रकात ईशा की नमाज़ फ़र्ज़, बीस रकात नमाज़ (तरावाह़) और तीन रकात वित्र पढ़ाई। सह़ाबा किराम रिज़वानुल्लाहि तआ़ला अ़लैहिम अजमईन अपने मेह़बूब मुहम्मद रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की मर्ज़ी के मुताबिक़ बीस रकात तरावीह़ पढ़ते और पढ़ाते रहे।

''عن جابر بن عبد الله رضی الله عنه قال : خرج النبی صلی الله علیه وسلم ذات لیلة في رمضان فصلی الناس اربعة وَّ عشرین رکعة و أوتر بثلاثة ''

(تاریخ جرجان لحافظ بن یوسف السہمی، تحت مراقبہ: الدکتور معید خان:۵۵۶،ص:۳۱۶، عالم الکتب، الطبعۃ الرابعۃ ۱۴۰۷ھ۔۱۹۸۷م)

ह़ज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआ़ना अन्हो फरमाते हैं कि हुज़ूर सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम रमज़ान शरीफ की एक रात तश्रीफ लाये, लोगों को चौबीस रकात (चार रकात फ़र्ज़, बीस रकात तरावीह) नमाज़ और तीन रकात वित्र पढ़ाये।

''عن ابن عباس رضی الله عنه أن رسول الله صلی الله علیه وسلم کان یصلي في رمضان عشرین رکعة والوتر ''(مصنف ابن شیبۃ، تحقیق: أبی محمد اسامہ بن ابراہیم بن محمد، کتاب جامع الصلاۃ، کم یصلي في رمضان من رکعۃ؟: ۷۷۷۵۔ ج:۳۔ص: ۳۵۵، الفاروق الحدیثۃ للطباعۃ والنشر۔ معجم کبیر

طبرانی، حمدی عبدالمجید السلفی:۱۲۲۰۱، ج:۱۱، ص:۳۹۳، مکتبہ ابن تیمیۃ، القاہرہ)

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुमा फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अलैहि वसल्लम रमज़ान शरीफ में बीस रकात नमाज़ (तरावीह) और वित्र पढ़ाते थे।

''عن عطاء قال : أدركت الناس وهم يصلون ثلاثاً و عشرين ركعة بالوتر ''(مصنف ابن شیبۃ، تحقیق: أبی محمد اسامہ بن ابراہیم بن محمد، کتاب جامع الصلاۃ، کم یصلي في رمضان من رکعۃ؟:۷۷۷۱۔ج:۳۔ص:۳۵۵، الفاروق الحدیثۃ للطباعۃ والنشر۔

हज़रत अ़ता कहते हैं कि मैंने लोगों को तेईस रकात नमाज़े वित्र के साथ पढ़ते हुए पाया।

''عن الحارث :أنه كان يؤم الناس في رمضان بالليل بعشرين ركعة و يو تر بثلاث و يقنت قبل الركوع'' (مصنف ابن شیبۃ، تحقیق: أبی محمد اسامہ بن ابراہیم بن محمد، کتاب جامع الصلاۃ، کم یصلي في رمضان من رکعۃ؟:۷۷۶۸۔ج:۳۔ص:۳۵۵، الفاروق الحدیثۃ للطباعۃ والنشر۔

हज़रत हारिस से मंकूल है कि वह रमज़ान की रात में लोगों को बीस रेकात (तरावीह) की इमामत करते थे और तीन रकात वित्र और रूकू से पहले दुआये कुनूत पढ़ाते थे।

''عن عبد العزيز بن رفيع قال : كان أبى بن كعب يصلى با لناس في رمضان با لمدينة عشرين ركعة و يو تر بثلاث ''(مصنف ابن شیبۃ، تحقیق: أبی محمد اسامہ بن ابراہیم بن محمد، کتاب جامع الصلاۃ، کم یصلي في رمضان من رکعۃ؟:۷۷۶۷۔ج:۳۔ص:۳۵۵، الفاروق الحدیثۃ للطباعۃ والنشر۔

हज़रत अ़बदुल अ़ज़ीज़ बिन रफ़ी फरमाते हैं कि हज़रत उबै बिन काब मदीना मुन्नवरा में लोगों को रमज़ान शरीफ़ में बीस–रकात (तरावीह़) और तीन रकात वित्र पढ़ाते थे।

सहीह मुस्लिम में हज़रत अबु हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हो से मरवी है वह फरमाते हैं:

''عن ابى هريرة قال : كان رسول الله صلى الله عليه وسلم يُرغِّب في قيام رمضان من غير أن يأمرهم فيه بعزيمة ، فيقول : ''من قام رمضان ايماناً و احتساباً غفرَ له ما تقدم من ذنبه '' فتُوُفِّيَ رسول الله صلى الله عليه وسلم والأمر علىٰ ذلک ، ثم كان الأمر علىٰ ذلک في خلافة أبى بكر، و صدراً من خلافة عمر علىٰ ذلک ''(بخاری، کتاب صلاۃ التراویح، باب فضل من قام رمضان:۲۰۰۹۔صحیح مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین،

باب الترغيب في قيام رمضان وهوالتراويح:۱۷۸۰(۷۵۹)واللفظ لہ)

कि रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम क़यामे रमज़ान (तरावीह़) की तरग़ीब देते, वुजूब का हुक्म नहीं। आप फरमाते जो शख्स रमज़ान की रातों में नमाज़े तरावीह पढ़ें और वह ईमान के दूसरे तक़ाज़ों को भी पूरा कर रहा हो और सवाब की नियत से यह अ़मल करे तो अल्लाह तअ़ाला उसके साबिक़ा गुनाह माफ़ कर देंगे। रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की वफात तक यही अ़मल रहा, ह़ज़रत अबु बकर रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हो के ख़िलाफ़त के ज़माना में भी यही रहा और हज़रत उ़मर रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हो के इब्तिदाई दौरे ख़िलाफ़त में भी यही अ़मल रहा।

ख़लीफ़ा राशिद और रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के बहुत ही चहीते सह़ाबी कि जिनके बारे में रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का इरशाद है

''لو كان نبيٌ بعدي لكان عمر بن الخطاب ''(مسند احمد:۱۷۴۰۵۔ترمذی،کتاب المناقب،باب:قولہ صلی اللہ علیہ وسلم:لوکان نبی بعدی...:۳۶۸۶واللفظ لہ۔طبرانی کبیر:۸۲۲۔ج:۱۷)

ने अनसार व मुहाजिरीन सह़ाबा किराम के मश्वरा से इस अ़मल (तरावीह) को बाज़ाब्ता मुक़र्रर फ़रमा दिया क्योंकि अब फ़रज़ियत का खतरा वही का सिलसिला खत्म हो जाने की वजह से खत्म हो चुका था (तफ़्सील के लिये मुअत्ता इमाम मालिक, फ़तावा इब्ने तैमिया जिल्द 22, स0:234। नमाज़े पयम्बर लिश्शैख मुह़म्मद इलयास अल फैसल मदीना मुनव्वरा वग़ैरह कुतुब का मुताला कर सकते हैं) उस वक्त से सह़ाबा किराम रिज़वानुल्लाहि तअ़ाला अलैहिम अजमईन, ताबिईन, तबए ताबिईन और असलाफ़े उम्मत का ब–तदरीज तसलसुल के साथ बीस रकात तरावीह़ और तीन रकात वित्र पढ़ने का मामूल रहा है।

इसलिये तमाम मुसलमानों को रमज़ान शरीफ़ जैसे मुतबर्रक महीने में ऐसी बाबरकत नमाज़ को पूरी पढ़नी चाहिये और पूरा–पूरा सवाब ह़ासिल करना चाहिये कि मौत का कोई वक़्त मुक़र्रर नहीं। आया आने वाला साल का रमज़ान और उसकी बरकतें हमको मिल पाये कि न मिल पाये।

नमाज़े जनाज़ह

नमाज़े जनाज़ा वह नमाज़ है जो मरने वाले के मुताल्लिक़ीन और आ़म मुसलमान पढ़ते हैं और उसमें मरने वाले के लिये दुआ़ करते हैं। नमाज़े जनाज़ह पढ़ने की ह़दीस शरीफ़ में बड़ी फ़ज़ीलत आई है। रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम इरशाद फ़रमाते हैं:

''قال رسول الله صلى الله عليه وسلم : من شهد الجنازة حتى يصلى عليها فله قيراط ، ومن شهدها حتى تدفن فله قيراطان،قيل : و ما القيراطان ؟ قال: مثل الجبلين العظيمين ''(صحیح البخاری، کتاب الجنائز، باب من انتظر حتی تدفن:۱۳۲۵۔صحیح مسلم، کتاب الجنائز، باب فضل الصلاۃ علی الجنازۃ واتباعہا:۲۱۸۹(۹۴۵)واللفظ لہ)

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो आदमी जनाज़ह में ह़ाज़िर हुआ यहाँ तक कि नमाज़े जनाज़ह अदा की तो उसके लिये एक क़ैरात सवाब है और जो उसके दफ़न तक मौजूद रहा उसके लिये दो कैरात सवाब है, अ़र्ज़ किया गयाः दौ क़ीरात क्या हैं? आप सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः दो बड़े पहाड़ों के मानिन्द।

''عن كريب مولىٰ ابن عباس ،عن عبد الله بن عباس :أنه مات ابنٌ له بقُدَيد أو بعسفان ، فقال : يا كريب ، انظر ما اجتمع له من الناس ، فقال : فخرجت فاذا ناس قد اجتمعوا له ، فأخبرته ، فقال : تقول هم أربعون ؟ قال : نعم، قال : أخرجوه ، فاني سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول : "مامن رجل مسلم يموت فيقوم على جنازته أربعون رجلاً ، لا يشركون بالله شيئاًالا شفّعهم الله فيه''(صحیح مسلم، کتاب الجنائز، باب من صلی علیہ اربعون، شفّعوا فیہ:۱۲۹۹(۹۴۸))

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास के आज़ाद करदा ग़ुलाम ह़ज़रत कुरैब ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला के बारे में रिवायत करते हैं कि मक़ामे क़ुदैद या मक़ामे असफ़ान में (कि जो मक्का मुकर्रमा के क़रीब जगहें हैं) उनके साह़िबज़ादे का इन्तिक़ाल हुआ (और जनाज़ा तैयार हुआ) तो उन्होंने कहाः कुरैब, जाकर देखो कि नमाज़े जनाज़ा के लिये कितने लोग जमा हो गए हैं? ह़ज़रत कुरैब कहते हैं कि मैं (यह देखने के

लिये) निकला तो मैंने देखा कि काफी लोग जमा हो चुके हैं, मैंने वापस आकर ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास को बताया (कि बहुत काफी लोग जमा हो गये हैं) ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास ने फ़रमायाः तुम्हारे ख्याल में उन लोगों की तादाद चालीस होगी? मैंने अ़र्ज़ कियाः हॉ। ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हो ने फ़रमायाः तो फिर जनाज़ा (नमाज़ के लिये) बाहर निकलो, क्योंकि मैंने रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है कि जब कोई मुसलमान मरे और उसके जनाज़ा की नमाज़ ऐसे चालीस आदमी पढ़ें जो अल्लाह के साथ किसी को शरीक न करते हों तो अल्लाह तआ़ला मय्यित के ह़क़ में उन लोगों की सिफ़ारिश क़ुबूल करता है।

नमाज़े जनाज़ा का तरीक़ा

रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने नजाशी की नमाज़ पढ़ी और उसमें रुकू और सज्दा नहीं किया नीज़ इस नमाज़ में गुफ़्तुगू करने की भी इजाज़त नहीं है, इसमें सिर्फ चार तक्बीरात हैं और सलाम फेरना है। सह़ीह़ बुखारी में है:

''قال النبی صلی الله علیه وسلم :... ''صلوا علی النجاشی'' سماها صلاةً لیس فیها رکوع و لا سجود و لا یُتکلم فیها ، و فیها تکبیر و تسلیم''(صحیح بخاری، کتاب الجنائز، باب سنة الصلاة علی الجنازة)

सह़ाबिये रसूल सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ह़ज़रत अबु हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हो नमाज़े जनाज़ा का तरीक़ा इस तरह़ बयान करते हैं:

''عن سعید بن ابی سعید المقبُري عن أبیه أنه سأل أبا هریرة، کیْف یُصَلّی علی الجَنَازةِ؟ فقال أبو هریرة : أنا لَعَمْرُ اللّه ،أخْبرُکَ اتَّبِعُها من أهلِها، فاذا وُضعَت کبَّرْتُ و حَمدْتُ اللّه و صلیت علی نبِیّه ،ثم أقول: اللهم عبدُ ک و ابن عبدِک . . . . .''(موطاامام مالک ،تحقیق محمد مصطفیٰ الأعظمی، کتاب الجنائز، باب مایقول المصلی علی الجنازة:۵۷۷۔ج:۲،ص:۳۱۹)

ह़ज़रत सईद के वालिद ने ह़ज़रत अबु हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हो से पूछा कि आप नमाज़े जनाज़ा कैसे पढ़ते हैं? ह़ज़रत अबु हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हो ने फ़रमायाः

ब–ख़ुदा मैं तुम्हें बताता हूँ। मैं उसके घर से उसके साथ चलूँगा, जब जनाज़ा रख दिया जाये तो मैं तक्बीर कह कर ह़म्द व सना और नबिये अकरम सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर दरूद शरीफ़ पढ़ कर यह दुआ़ पढ़ूँगाः اللهم عبدک و ابن عبدک ...

पहली तक्बीरः

पहली तक्बीर कहकर हाथ कानों तक उठाकर बॉध ले और सना (सुब्ह़ानका अल्लाहुम्मा वबि–हम्दिका व–तबारकस मुका व–तआ़ाला जद्दुका व–जल्ला सनाउका वला इलाहा ग़ैरुका) पढ़े।
(سُبْحَانَکَ اللّٰهُمَّ وَ بِحَمْدِکَ وَ تَبَارَکَ اسْمُکَ وَ تَعَالٰی جَدُّکَ وَ جَلَّ ثَنَاءُ کَ وَ لاَ اِلٰهَ غَیْرُکَ)

दूसरी तक्बीर

सना पढ़ने के बाद दूसरी तक्बीर कहे इमाम और मुक़्तदी सब हाथ बॉधे रहें, ऊपर न उठायें।

''أن ابن عباسؓ کا ن یرفع یدیه في التکبیرة الاولی، ثم لا یرفع بعد، و کان یکبر أربعاً ، روی ذلک عن ابن مسعودؓ مثل ذلک''(مصنف عبدالرزاق،کتاب الجنائز، باب رفع الیدین فی التکبیر علی الجنائز:۶۳۶۱۔۶۳۶۲)

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा से मनक़ूल है वह नमाज़े जनाज़ा में सिर्फ़ पहली तक्बीर में रफ़ा यदैन करते थे बाद में नहीं और कुल चार तक्बीरें कहते थे। और यही ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा से भी मरवी है।

और तक्बीर के बाद दरूद शरीफ़ पढ़े।

तीसरी तक्बीरः

ह़म्द व सलात के बाद अब तीसरी तक्बीर कहे और इसके बाद मय्यित के लिये दुआ़ करे, रसूलुल्लाह सल लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जनाज़ा पर यह दुआ़ पढ़ते थेः

'' अल्लाहुम्मग़ फिर लि–ह़य्यिना व मय्यितिना व शाहिदिना व ग़ाइबिना व सग़ीरिना व कबीरिना व ज़करिना व उनसाना, अल्लाहुम्मा मन अहययतहु मिन्ना फ़–अह़यिही अ़लल इस्लाम व मन तवफ़्फैतहू मिन्ना फ़ तवफ़्फ़हू अ़लल ईमान''

''اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِحَيِّنَا وَ مَيِّتِنَا وَ شَاهِدِنَا وَ غَائِبِنَا وَ صَغِيْرِنا وَ كَبِيْرِنَا وَ ذَكَرِنَا وَ اُنْثَانَا، اَللّٰهُمَّ مَنْ أَحْيَيْتَه مِنَّا فَأَحْيِهِ عَلَى الْإِسْلَام وَ مَنْ تَوَفَّيْتَه مِنَّا فَتَوَفَّه عَلَى الْإِيْمَان'' (مصنف عبدالرزاق، کتاب الجنائز، باب القراءۃ والدعاء في الصلاۃ علی المیت:٦٥١٨۔ترمذی، ابواب الجنائز، باب مایقول في الصلاۃ علی المیت:١٠٢٤۔واللفظ لہ)

ऐ अल्लाह हमारे ज़िन्दों और मुर्दों को बख़्श दे, हमारे हाज़िर व ग़ाएब को बख़्श दे, हमारे छोटों और बड़ों को बख़्श दे, हमारे मर्दों और औरतों को बख़्श दे, ऐ अल्लाह तू हममें से जिसको भी ज़िन्दा रखे इस्लाम पर ज़िन्दा रख और हममें से जिसको मौत दे तो ईमान की हालत में मौत दे।

नाबालिग़ मय्यित की दुआ:

''عن الحسن أنه كان اذا صلى على الطفل ، قال : '' اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ لَنَا فَرَطاً ، اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ لَنَا أَجْراً'' (مصنف عبدالرزاق، کتاب الجنائز، باب الدعاء علی الطفل:٦٦٩٢)

हज़रत हसन से मरवी है कि जब वह किसी बच्चे की जनाज़ा पढ़ते तो कहते: ''अल्लाहुम्मज अ़लहू लना फ़रता, अल्लाहुम्मज अल्हू लना अजरा''

ऐ अल्लाह तू इसको हमारे लिये पेशरू बना, ऐ अल्लाह तू इसको हमारे लिये अज्र बना।

अगर मय्यित नाबालिग़ बच्चा हो तो यह दुआ पढ़े:

अल्लहुम्मज अलहू लना फ़रतौं वज अ़लहू लना अजरौं व ज़ुखरौं वजअलहू लना शाफ़िऔं व मुशफ़्फ़आ।

''اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ لَنَا فَرَطاً وَ اجْعَلْهُ لَنَا اَجْراً وَّ ذُخْراً وَ اجْعَلْهُ لَنَا شَافِعاً وَّ مُشَفَّعاً''

अगर बच्ची हो तो यह दुआ पढ़े:

अल्लहुम्मज अलहा लना फ़रतौं वज अ़लहा लना अजरौं ज़ुखरौं वजअलहा लना शाफ़िअ़तौं व मुशफ़्फ़अ़ह।

''اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهَا لَنَا فَرَطاً وَ اجْعَلْهَا لَنَا اَجْراً وَّ ذُخْراً وَ اجْعَلْهَا لَنَا شَافِعةً وَّ مُشَفَّعةً''

चौथी तक्बीर:

इसके बाद चौथी तक्बीर कहे और सलाम फेर दे।

(مصنف عبدالرزاق، کتاب الجنائز، باب القراءۃ والدعاء في الصلاۃ علی المیت:٦٥٣٥)

تمت بالخیر

मराजे :مراجع

1 कुरआन करीम

2 तफ़्सीर रूहुल मआ़नी

3 तफ़्सीर राज़ी

4 तफ़्सीर अह़कामुल कुरआन

5 मुस्नद अह़मद، تحقیق ارنؤوط، مؤسسۃ الرسالۃ، الطبعۃ الاولیٰ ۲۰۰۱۔

6 मुस्नद इमाम शफ़िई ؒ، تحقیق: الدکتور ماہر یاسین الفحل۔ غراس للنشر والتوزیع، کویت، الطبعۃ الأولیٰ ۲۰۰۴۔

7 सह़ीह़ अल बुखारी۔ موسوعۃ الکتب الستۃ، دارالسلام للنشر والتوزیع، الطبعۃ الرابعۃ: ۲۰۰۸ء

8 सह़ीह़ मुस्लिम۔ موسوعۃ الکتب الستۃ، دارالسلام للنشر والتوزیع، الطبعۃ الرابعۃ: ۲۰۰۸ء

9 सुनन अबु दाऊद۔ موسوعۃ الکتب الستۃ، دارالسلام للنشر والتوزیع، الطبعۃ الرابعۃ: ۲۰۰۸ء

10 सुनन तिर्मिज़ी۔ موسوعۃ الکتب الستۃ، دارالسلام للنشر والتوزیع، الطبعۃ الرابعۃ: ۲۰۰۸ء

11 सुनन नसाई۔ موسوعۃ الکتب الستۃ، دارالسلام للنشر والتوزیع، الطبعۃ الرابعۃ: ۲۰۰۸ء

12 सुनन इब्ने माजा۔ موسوعۃ الکتب الستۃ، دارالسلام للنشر والتوزیع، الطبعۃ الرابعۃ: ۲۰۰۸ء

13 बैह़क़ी، تحقیق عبدالقادر عطا، دارالکتب العلمیۃ، بیروت، لبنان، الطبعۃ الثالثۃ ۲۰۰۳ء

14 फ़तहुल बारी، صاحب السمو الملکی الأمیر سلطان بن عبدالعزیز آل سعود، تحقیق عبدالقادر شیبۃ الحمد۔ ۲۰۰۱ء۔

15 फतहुल बारी، مطبوعہ دارالسلام الریاض

16 मुसन्नफ़ इब्ने अबी शैबा، تحقیق: أبی محمد اسامۃ بت ابراہیم، الفاروق الحدیثۃ للطباعۃ والنشر، قاہرہ الطبعۃ الأولی ۲۰۰۸ء

17 मुसन्नफ अ़ब्दुर रज़्ज़ाक، تحقیق ودراسۃ، مرکز البحوث وتقنیۃ المعلومات۔ دارالتاصیل، الطبعۃ الثانیۃ ۲۰۱۶

18 معجم کبیر للطبرانی، حمدی عبدالمجید السّلفی، مکتبہ ابن تیمیۃ، القاہرہ

19 الترغیب والترہیب للمنذری

20 شرح معانی الآثار، الدار، الطبعۃ الاولیٰ ۱۹۹۴ء

21 مستدرک حاکم، صنعہ: راجی رحمات، دارالمعرفۃ، بیروت، ۲۰۰۶م

22 مسند ابویعلی، تحقیق: حسین سلیم اسد، دارالثقافۃ العربیۃ، بیروت، الطبعۃ الثالثۃ ۱۹۹۲ء

23 مسند ابن حبان، تحقیق: محمد علی سونمز، الص آي دمیر وزارۃ الأوقاف والشؤون الاسلامیۃ دولۃ قطر۔ الطبعۃ الأولیٰ ۲۰۱۲۔

24 زادالمعاد في ہدي خیر العباد، تحقیق، شعیب أرنؤوط، مؤسسۃ الرسالۃ، لبنان، الطبعۃ الثالثۃ ۱۹۹۸ء

25 مجمع الزوائد ومنبع الفوائد، تحقیق: عبداللہ محمد الدرویش، دارالفکر للطباعۃ والنشر والتوزیع، بیروت، لبنان۔ ۲۰۱۰ء

26 موطا امام مالک، تحقیق: محمد مصطفیٰ الأعظمی، ط: مؤسسۃ زاید بن سلطان آل نہیان للأعمال الخیریۃ والانسانیۃ ابوظبی۔ الطبعۃ الاولیٰ ۲۰۰۴ء۔

27 تاریخ جرجان لحافظ بن یوسف السہمی، تحت مراقبہ: الدکتور معید خان، عالم الکتب، الطبعۃ الرابعۃ ۱۴۰۷ھ۔۱۹۸۷م)

डॉक्टर मुहम्मद ज़िया उद्दीन मज़ाहिरी
करामत की चौकी, करैली
इलाहलाबाद
21/रजबुल मुरज्जब सन् 1444 हिजरी
13 / फरवरी सन् 2023 ईसवी सोमवार